हिंदी

लेखिका :
आरती शर्मा
(एम०ए०, बी०एड०)

8

नवीन संस्करण

© प्रकाशकाधीन

इस पुस्तक के किसी भी भाग का किसी भी रूप में मुद्रण, प्रकाशन, संग्रहण अथवा प्रसारण प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना वर्जित है।

वैधानिक सूचना

यद्यपि प्रस्तुत पुस्तक को त्रुटिरहित बनाने का हरसंभव प्रयास किया गया है। परंतु इसमें यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो उससे कारित क्षति अथवा संताप के लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पुस्तक विक्रेता का कोई दायित्व नहीं होगा। किसी त्रुटि के संज्ञान में आने पर भविष्य में उसका सुधार किया जाएगा।

लेखिका :
आरती शर्मा (एम०ए०, बी०एड०)

हिंदी

मन की बात

हिंदी पुस्तक-शृंखला बाल मनोविज्ञान एवं क्रियाकलापों पर आधारित हिंदी भाषा को सीखने के क्रम में एक मौलिक एवं अनूठा प्रयास है। इस शृंखला का विकास विभिन्न आयु-वर्ग की विशिष्ट रुचियों और उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए किया गया है। सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना एवं समझना– इन मौलिक तथा शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति इस शृंखला में बहुत रोचक और प्रभावशाली ढंग से की गई है।

इस पुस्तक-माला का निर्माण आज की बदलती नई सोच के अनुरूप किया गया है। यह पुस्तक-माला, एन०सी०ई०आर०टी० **(NCERT)**, सी०आई०एस०सी०ई० **(CISCE)** एवं अन्य प्रांतीय शिक्षा परिषदों द्वारा स्वीकृत नवीन पाठ्यक्रम पर आधारित एक शृंखला है, जो पूर्ण रूप से बच्चों की रुचि और मानसिक स्तर के अनुकूल है। इसका उद्देश्य बच्चों की कल्पनाशीलता, उनकी मौलिकता, सृजनशीलता और जिज्ञासा को बढ़ाना है।

एक ओर जहाँ मनमोहक रंग-बिरंगे चित्रों द्वारा पाठों की प्रस्तुति के साथ शब्द ज्ञान भंडार में सरलता से कठिनता की ओर क्रमिक वृद्धि की गई है, वहीं दूसरी ओर पठन कुशलताओं के विकास और सुदृढ़ीकरण के लिए सुनियोजित उद्देश्यपरक मौखिक और लिखित अभ्यास दिए गए हैं।

इस पुस्तक-माला में पाठयक्रम क्रमबद्ध तरीके से लिया गया है। रुचि वैविध्य के लिए पुस्तक में हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं; जैसे- कविता, कहानी, पत्र, एकांकी, जीवनी, लेख, सूक्तियाँ, संवाद, चित्रकथा, निबंध-लेखन तथा संस्मरण आदि का समावेश यथास्थान किया गया है। पुस्तक माला में लिंग, वचन, कारक, समानार्थी शब्द, विपरीतार्थी शब्द, वाक्यांशों के लिए एक शब्द, शब्द-युग्म आदि के साथ ही संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, आदि व्याकरणिक विषयों का ज्ञान कराया जा रहा है। परिणामस्वरूप जो कि बच्चों के शब्द-भंडार में वृद्धि करने के साथ ही भाषा की रोचकता और गहनता को समझाने में प्रभावी सिद्ध होंगे।

पुस्तक का प्रत्येक भाग विद्यार्थियों की पढ़ने में रुचि जाग्रत करे, इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है। साथ ही विद्यार्थियों की रचनात्मक क्षमता विकसित करने के लिए अभ्यासों एवं क्रियात्मक कार्यों का यथोचित समावेश किया गया है।

हमें विश्वास है कि बच्चों के परिवेश से जुड़ी एवं बाल मनोविज्ञान पर आधारित ये पुस्तकें बच्चों की हिंदी भाषा दक्षता में वृद्धि के साथ उनके व्यक्तित्व के विकास में उपयोगी सिद्ध होंगी। मार्गदर्शन हेतु गणमान्य एवं प्रबुद्ध अभिभावकों व शिक्षकों की टिप्पणियों एवं सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे ताकि भावी संस्करणों में यथास्थान उचित संशोधन करके पुस्तक को और अधिक रोचक एवं उपयोगी बनाया जा सके।

—लेखक व प्रकाशक

पाठ्यक्रम

क्रम (S.No.)	पाठ का नाम/विधा (Lesson/Mode)	मौखिक ज्ञान (Oral Knowledge)	लिखित ज्ञान (Written Knowledge)
1.	कर्मवीर	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर
2.	चाँदी का जूता	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर
3	एलबम	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर
4.	परीक्षा	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर
5.	लालच बुरी बला है	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर
6.	आकाश में अकेले	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर
7.	भारत माता	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर
	प्रकाश पुञ्ज *केवल पठने के लिए*		
8.	बलि का बकरा	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर
9.	एक तस्वीर के दो पहलू	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर
10.	गोशाला	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• पाठांश के प्रश्न उत्तर • प्रश्नोत्तर
11.	जाना-पहचाना	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर
12.	बिंदा	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• अनुच्छेद के प्रश्न उत्तर • प्रश्नोत्तर
13.	चिकित्सा का चक्कर	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• पाठांश के प्रश्न उत्तर • सही विकल्प • प्रश्नोत्तर
14.	भारत की वस्तुकला	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर
15.	छींक	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर • विशेषताओं का वर्णन
16.	श्रीराम की बाल-लीला	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• काव्यांश के प्रश्न उत्तर • प्रश्नोत्तर
17.	कर्तव्यबोध	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर
18.	मैं और मेरा देश	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर
	ग्राम श्री *केवल पठने के लिए*		
20.	धर्म की आड़	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • रिक्त स्थान • प्रश्नोत्तर
	आदर्श प्रश्न-पत्र-1 (Model Test Paper)-1		
	आदर्श प्रश्न-पत्र-2 (Model Test Paper)-2		

	भाषा ज्ञान (Language Knowledge)	क्रियात्मक गतिविधियाँ (Creative Activites)	पृष्ठ सं. (P.No.)
	• पर्यायवाची शब्द • विलोम शब्द • बहुवचन शब्द • मुहावरों के अर्थ • उपसर्ग और प्रत्यय • 'जी' के प्रयोग • वाक्य बनाइए • क्रिया शब्द • मूल शब्द	• 'कर्म प्रधान विश्व रचि राखा' विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए। • विचारगत प्रश्न	7
	• समस्तपदों का विग्रह करते हुए समास का नाम	• विचारगत प्रश्न	11
	• संज्ञा-भेद • विलोम शब्द • उपसर्गों का प्रयोग	• विचारगत प्रश्न • यदि आप लाला सदानंद की जगह होते तो पंडित शादीराम का ऋण उतारने के लिए क्या करते? लिखिए। • विचारगत प्रश्न	18
	• शब्द-युग्म • सर्वनाम शब्द • निर्देशानुसार उत्तर लिखिए	• प्रार्थना-सभा में हिंदी समाचार-पत्र के उस अंश को पढ़कर सुनाइए, जिसमें किसी गरीब, असहाय व्यक्ति की सहायता की गई हो। • विचारगत प्रश्न	24
	• संज्ञा-भेद • उद्देश्य और विधेय • वाक्य भेद	• लियो टॉलस्टॉय की कहानी 'कितनी जमीन' पढ़िए। कितनी जमीन के नायक 'दीना' और 'लालच बुरी बला है।' • विचारगत प्रश्न	31
	• वाक्य पढ़िए • वाक्य बनाइए • यौगिक शब्द • उद्देश्य तथा विधेय • मुहावरों के अर्थ • शब्द सोचकर लिखिए	• जल सेना, थल सेना और वायु सेना पर एक प्रस्तुतीकरण बनाइए। • वीरता के लिए मिलने वाले पुरस्कारों की सूची बनाइए। • विचारगत प्रश्न	38
	• निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द	विचारगत प्रश्न	43
			47
	• प्रत्यय रिक्त स्थान • वाक्य बनाकर लिखिए • पर्यायवाची • वाक्य परिवर्तित	• विचारगत प्रश्न	49
	• तत्सम शब्दों के तद्भव रूप • वर्ण-विच्छेद • रिक्त स्थान • काल • गुणवाचक विशेषण	• 'माँ' पर विभिन्न कविताओं का संकलन कीजिए। • ''पूत कपूत सुने हैं पर नहीं माता सुनी कुमाता''- विषय पर अनुच्छेद लिखिए। • विचारगत प्रश्न	55
	• वाक्यांशों के शब्द • विशेषण शब्द • उत्तरावस्था और उत्तमावस्था के शब्द • समास का नाम	• रामवृक्ष बेनीपुरी की अन्य रचनाएँ जैसे- 'चार एकांकी', 'जंजीरें और दीवारें', 'तथागत', 'विजेता' आदि पुस्तकालय अथवा कंप्यूटर की सहायता से पढ़िए। 'मंगर' हलवाहे की कहानी पढ़कर कक्षा में सुनाइए।	61
	• उपसर्ग व प्रत्यय • पदों के विलोम • शब्दों के लिंग • सर्वनाम शब्द	• विचारगत प्रश्न	68
	• काल • वाक्यों के वाच्य पहचाने • संधि-विच्छेद	• महोदय को पत्र • सामाजिक कार्यकर्ताओं को जागरूक • विचारगत प्रश्न	74
	• पदों का परिचय • शब्द भेद • शब्दों को उचित शीर्षक के नीचे लिखिए • उचित स्थान पर स्वार लगाइए	• हास्य-व्यंग्य प्रधान कहानियाँ •विद्यालय के वार्षिकोत्सव पर इसका मंचन कीजिए	82
	• वर्ण-विच्छेद • प्रत्यय का प्रयोग • प्रत्यय लगाकर इनके अर्थ लिखिए	• इस विषय पर एक लेख लिखिए • वास्तुकला की चित्रकला • विचारगत प्रश्न	91
	• अकर्मक और सकर्मक क्रियाएँ • निषेधात्मक और संदेहबोधक वाक्य • अर्थों के अनुरूप वाक्य • मुहावरें • आरोह अवरोह	• प्रार्थना सभा • मध्य संवाद • विचारगत प्रश्न	96
	• हिंदी शब्द लिखिए • कारक चिह्न • रिक्त स्थान	• विचारगत प्रश्न • श्रीराम की बाल-लीला कविता का मंचन अपनी कक्षा में कीजिए।	105
	• कारक चिह्न • वाक्य बनाइए • रिक्त स्थान • भेद	• विचारगत प्रश्न	109
	• लोकोक्तियाँ • सही विकल्प • क्रिया-विशेषण भेद • मूल शब्द और प्रत्यय	• सामूहिक चर्चा • वाद-विवाद प्रतियोगिता • विचारगत प्रश्न	115
			125
	• विपरीतार्थक शब्द • शब्दों के दो-दो अर्थ • भाषा शब्द	• वाक्य लिखिए • पूजा-स्थलों के नाम लिखिए	127
			133
			135

विषय-सूची

1.	कर्मवीर	7
2.	चाँदी का जूता	11
3.	एलबम	18
4.	परीक्षा	24
5.	लालच बुरी बला है	31
6.	आकाश में अकेले	38
7.	भारत माता	43
•	प्रकाश पुञ्ज	47
8.	बलि का बकरा	49
9.	एक तसवीर के दो पहलू	55
10.	गोशाला	61
11.	जाना-पहचाना अजनबी	68
12.	बिंदा	74
13.	चिकित्सा का चक्कर	82
14.	भारत की वस्तुकला	91
15.	छींक	96
16.	श्रीराम की बाल-लीला	105
17.	कर्तव्यबोध	109
18.	मैं और मेरा देश	115
•	ग्राम श्री	125
19.	धर्म की आड़	127
•	आदर्श प्रश्न पत्र–1 (Model Test Paper)-1 —	133
•	आदर्श प्रश्न पत्र–2 (Model Test Paper)-2 —	135

1 कर्मवीर

आज करना है जिसे करते उसे हैं आज ही।
सोचते कहते हैं जो कुछ कर दिखते हैं वही।।
मानते जी की हैं सुनते हैं सदा सबकी कही।
जो मदद करते हैं अपनी इस जगत में आप ही।।
भूलकर वे दूसरों का मुँह कभी तकते नहीं।
कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नहीं।।

जो कभी अपने समय को यों बिताते हैं नहीं।
काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं।।
आज कल करते हुए जो दिन गँवाते हैं नहीं।
यत्न करने में कभी जो जी चुराते हैं नहीं।।
बात है वह कौन जो होती नहीं उनके किए।
वे नमूना आप बन जाते हैं औरों के लिए।।

चिलचिलाती धूप को जो चाँदनी देवें बना।
काम पड़ने पर करें जो शेर का भी सामना।।
जोकि हँस-हँस के चबा लेते हैं लोहे का चना।
'है कठिन कुछ भी नहीं' जिनके है जी में यह ठना।।
कोस कितने ही चलें पर वे कभी थकते नहीं।
कौन-सी है गाँठ जिसको खोल वे सकते नहीं।।

काम को आरंभ करके यों नहीं जो छोड़ते।
सामना करके नहीं जो भूलकर मुँह माड़ते।।
जो गगन के फूल बातों से वृथा नहीं ताड़ते।
संपदा मन से करोड़ों को नहीं जो जोड़ते।।
बन गया हीरा उन्हीं के हाथ से है कार्बन।
काँच को करके दिखा देते हैं वे उज्ज्वल रतन।।

-अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

शब्द-अर्थ

जी	—	मन	सदा	—	हमेशा
जगत	—	विश्व	यत्न	—	प्रयास
नमूना	—	उदाहरण	चिलचिलाती धूप	—	तेज धूप
कठिन	—	मुश्किल	आरंभ	—	शुरुआत
गगन	—	आकाश	वृथा	—	बेकार
संपदा	—	संपत्ति	उज्ज्वल	—	चमकदार

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) दूसरों का मुँह ताकने का अर्थ क्या होता है?

(ख) आजकल करते हुए दिन गँवानेवाले लोग किस प्रवृत्ति के होते हैं?

(ग) कार्बन से क्या बनता है?

(घ) कविता का लययुक्त वाचन कीजिए।

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) परिश्रमी चिलचिलाती धूप को भी क्या बना देते हैं?

☐ अँधेरा ☐ पानी

☐ रोशनी ☐ चाँदनी

(ख) कौन दूसरों का मुँह नहीं ताकते?

☐ जो अपनी मदद स्वयं करते हैं। ☐ जो सपने देखते रहते हैं।

☐ जो डरपोक होते हैं। ☐ जो कुछ नहीं करते हैं।

(ग) कैसे लोग दूसरों के लिए उदाहरण बन जाते हैं?

☐ जो समय व्यर्थ नहीं गँवाते ☐ जो यत्न करने में कभी जी नहीं चुराते

☐ (i) और (ii)दोनों ☐ इनमें से कोई नहीं

2. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(क) औरों के लिए उदाहरण बन जाने वाले लोगों में क्या-क्या खूबियाँ होती हैं?

(ख) 'जोकि हँस-हँस के चबा लेते हैं लोहे का चना' से कवि क्या कहना चाहता है?

(ग) इस जगत में अपनी मदद अपने आप करने से क्या होता है?

(घ) काम को आरंभ करके बीच में क्यों नहीं छोड़ना चाहिए?

(ङ) इस कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहते हैं? लिखिए।

(च) आशय स्पष्ट कीजिए—

चिलचिलाती धूप को जो चाँदनी देवें बना।
काम पड़ने पर करें जो शेर का भी सामना।।
जोकि हँस-हँस के चबा लेते हैं लोहे का चना।
'है कठिन कुछ भी नहीं' जिनके है जी में यह ठना।।
कोस कितने ही चलें पर वे कभी थकते नहीं।
कौन-सी है गाँठ जिसको खोल वे सकते नहीं।।

भाषा-ज्ञान

1. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए।

(क) दो पर्यायवाची लिखिए—

(i) जगत – _____ , _____ (ii) यत्न – _____ , _____

(iii) गगन – _____ , _____ (iv) फूल – _____ , _____

(ख) विलोम शब्द लिखिए—

(i) दिन – _____ , _____ (ii) कठिन – _____ , _____

(iii) आज – _____ , _____ (iv) उज्ज्वल – _____ , _____

(ग) बहुवचन लिखिए—

(i) नमूना – _____ , _____ (ii) चना – _____ , _____

(iii) गाँठ – _____ , _____ (iv) हीरा – _____ , _____

(घ) मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए—

(i) मँह ताकना – _____ _____

(ii) जी चुराना – _____ _____

(iii) मुँह मोड़ना – _____ _____

(iv) लोहे के चने चबाना– _____ _____

(ङ) यत्न में उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर दो नए शब्द बनाइए—

_____ _____

2. 'जी' के प्रयोगों को समझिए।

(क) यत्न करने में कभी जो जी चुराते हैं नहीं ⟶ मन

(ख) चाचा जी आए हैं। ⟶ आदरसूचक शब्द

एक ही शब्द अलग-अलग वाक्य में अलग-अलग अर्थ में प्रयोग हो रहा है। जो शब्द एक से अधिक अर्थ दें, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं।

- दिए गए शब्दों के अलग-अलग अर्थों में वाक्य बनाइए।

(क) कर –_____

कर –_____

(ख) कल –_____

कल –_____

(ग) पर –_____

पर –_____

3. पाठ में आए क्रिया शब्दों को ढूँढ़कर लिखिए।

_____

_____

4. हिंदी में प्रयोग किए जानेवाले संस्कृत के मूल शब्द तत्सम कहलाते हैं। जैसे- वृथा, उज्ज्वल, यत्न आदि। तत्सम शब्दों के परिवर्तित रूप को तद्भव कहते हैं। जैसे- सर्प से साँप, दुग्ध से दूध, मृत्तिका से मिट्टी आदि।

- दिए गए तत्सम और तद्भव शब्दों को अलग-अलग करके लिखिए।

घर, भ्रमर, हाथ, मस्तक, गृह, भँवरा, हस्त, माथा, सुपुत्र, शाम, वार्ता, आधा, सपूत, सायं, बात, अर्ध

तत्सम		तद्भव	
_____	_____	_____	_____
_____	_____	_____	_____
_____	_____	_____	_____
_____	_____	_____	_____

क्रियात्मक गतिविधि

- 'कर्म प्रधान विश्व रचि राखा' विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।
- साहस, हिम्मत, आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास, परिश्रम, लगन आदि भावों पर आधारित कविताओं का संकलन तैयार कीजिए।
- चर्चा कीजिए-
- जो करना है आज करो।
- कर्मठ जीवन या आमोदप्रिय जीवन।
- अपने साथियों की मदद से कविता बनाइए। कक्षा की पहली पंक्ति का पहला छात्र एक वाक्य बोलकर कविता को आरंभ करे। दूसरा छात्र समान तुक मिलाते हुए कविता की दूसरी पंक्ति बनाए। इस प्रकार कविता को आगे बढ़ाएँ। कविता रोचक तथा पठनीय होनी चाहिए। पूरी कविता बन जाने पर सामूहिक रूप से उसका गान करें।
- 'कर्म करो-फल की चिंता मत करो' यथार्थ के धरातल पर यह बात कितनी व्यावहारिक है? लिखिए।

चाँदी का जूता 2

संयोग की बात थी, मैं जिस दिन अपने वकील मित्र शिवराम के घर पहुँचा, उसी दिन मेरे मित्र के पुत्र की वर्षगाँठ धूमधाम से मनाई जा रही थी। भोज में निमंत्रित व्यक्तियों में वेंकटेश्वर राव को देखकर मेरी बाछें खिल गईं। वे एकदम उछलकर मुझसे गले मिले और कुशलता संबंधी प्रश्नों की बौछार कर दी।

दूसरे दिन प्रातः मित्र का न्योता पाकर मैं नाश्ता करने उसके घर पहुँचा। सर्वप्रथम विलायती व कीमती अलसेशियन सोनी ने हमारा स्वागत इस तरह किया, मानो वह यह जानती हो कि मैं उसके मालिक का अभिन्न मित्र हूँ।

बाथरूम से सर पोंछते हुए वेंकटेश्वर राव सीधे बैठक में आ पहुँचा, पंखा चलाया। अखबार हाथ में थमाकर कपड़े पहनने के लिए शयनकक्ष में चला गया। बैठक इस प्रकार सजाई गई थी, मानो फिल्मी शूटिंग करने के लिए अभी-अभी तैयार किया गया सेट हो। मैं। मन-ही-मन अपने मित्र की पत्नी की अलंकारप्रियता की प्रशंसा करने लगा, साथ ही उससे अपनी घरवाली की तुलना भी करने लगा। दीवारों पर सुप्रसिद्ध कलाकारों की पेंटिंग सुशोभित थीं। मैं सोचने लगा कि हॉस्टल में रहते समय वेंकटेश्वर राव कैसा लापरवाह रहा करता था, आज उसकी रुचि में ऐसा भारी परिवर्तन कैसे हुआ? वह सदा अपनी चीजे अस्त-व्यस्त रख छोड़ता था, उन्हें करीने से सजाने की उसकी आदत ही न थी। मैं चिढ़कर उसे लाख समझाता, किंतु उसकी लापरवाही में कोई परिवर्तन न देख मैं भी हार मान चुका था। कभी-कभी कहा करता था, "यार, तुम्हारी घरवाली ही शायद तुम्हें बदल सकेगी।" अचानक मुझे स्मरण हो आया कि वेंकटेश्वर राव में तो कोई परिवर्तन न हुआ होगा, यह उसकी श्रीमती रमा की सुरूचि का परिचय है। वाह! रमा तो सौंदर्य की आराधिका होगी।

भाई साहब, "नमस्ते। शायद आप रास्ता भूल गए हैं, जो हमारे घर आए।" रमा एक साँस में कह गई। मैंने ब्लिट्ज को तिपाई पर रखते हुए दृष्टि उठाई, तो देखता क्या हूँ, सामने हाथ जोड़े हँसमुख रमा खड़ी है। मैंने उठकर अभिवादन का प्रत्युत्तर दिया। तभी रमा पूछ बैठी, "आप सुरेश की शादी में क्यों नही आए? हमने तो आपका बहुत इंतजार किया।"

"क्या! सुरेश की शादी हो गई। मुझे न्योता कहाँ मिला, जो चला

आता? निमंत्रण पत्र तो भेजा नहीं, उलटे मुझ पर दोषारोपण कर रही हो! वाह उलटा चोर कोतवाल को डाँटे!''

''आप क्या कह रहे हैं? हमने तो पहली किश्त में ही कार्ड आपके नाम पोस्ट कर दिया था।''

''हो सकता है रमा जी, पर मुझे मिलता तब न मैं आता! सच कह रहा हूँ, मेरे नाम कोई निमंत्रण नहीं आया।'' मैंने अपनी तरफ से पूरी सफाई देने की कोशिश की।

शायद रमा के तर्क के सामने मैं हार बैठता, तभी वेंकटेश्वर राव ने प्रवेश करके मेरी रक्षा की।

रमा नाश्ते का प्रबंध करने भीतर चली गई। थोड़ी देर बाद भीतर से बुलावा आया। भोजनालय मे गुड़िया जैसी सुंदर कन्या तश्तरियों में मिठाइयाँ सजा रही थी। वेंकटेश्वर राव ने अपनी बहू का परिचय कराया, ''यह सीमा, मेरी पुत्रवधू! जानते हो, इसने एम0 ए0 प्रथम श्रेणी में किया है। विश्वविद्यालय भर में यह प्रथम आई। इसे स्वर्ण-पदक भी प्राप्त हुआ है।'' फिर राव ने अपनी पुत्रवधू से कहा, ''बेटी, चाचा को जरा वह पदक तो दिखलाओ।''

सीमा को शायद पदक दिखाना पसंद न था। वह सर झुकाए चाय के प्याले मेज पर लगा रही थी। रमा दौड़कर बैठक में गई। अलमारी से पदक लाकर उसने मेरे हाथ में थमा दिया।

''भैया, हमारी बिरादरी में आज तक किसी ने स्वर्ण पदक प्राप्त नहीं किया। अपनी सीमा पर हमें गर्व है। यह तो रात-दिन पढ़ती है। पी0 एच0 डी0 भी कर रही है। कहती है कि मैं डी0 लिट्0 भी करूँगी। मुझे डर है कि रात-दिन जागने पर बहू की तबीयत कहीं बिगड़ न जाए। मैं लाख समझाती हूँ कि बहू, तुम आराम करो, लेकिन हमारी बात सुनती नहीं। रसोई बनाती है, खाना परोसती है, ससुर की सेवा करती है, साथ ही कॉलेज में पढ़ाती भी है।''

''भाभी, तब कोई रसोइया क्यों नही रख लेतीं? कमाने वाली बहू से काम लेना तो ठीक नहीं है। लोग क्या सोचेंगे?''

''मैं भी सोचती हूँ, लेकिन मुझे अपने हाथ का खाना ही अच्छा लगता है। काम भी क्या है! चार जने हैं। आखिर हमारा भी तो समय कटना चाहिए। काम करने से तबीयत भी अच्छी रहती है।''

''रमा, झूठ बोलने की भी हद होती है। ये पराए थोड़े ही हैं। यार, असली बात यह है कि रमा रसोइए के पीछे खर्च करना बेकार मानती है। मैंने एक-दो नौकर रखे भी, पर कोई-न-कोई बहाना बनाकर इसने भगा दिया।'' वेंकटेश्वर राव ने कहा।

''तुम सारा दोष मुझ पर क्यों मढ़ते हो? तुम्हीं ने तो एक दिन

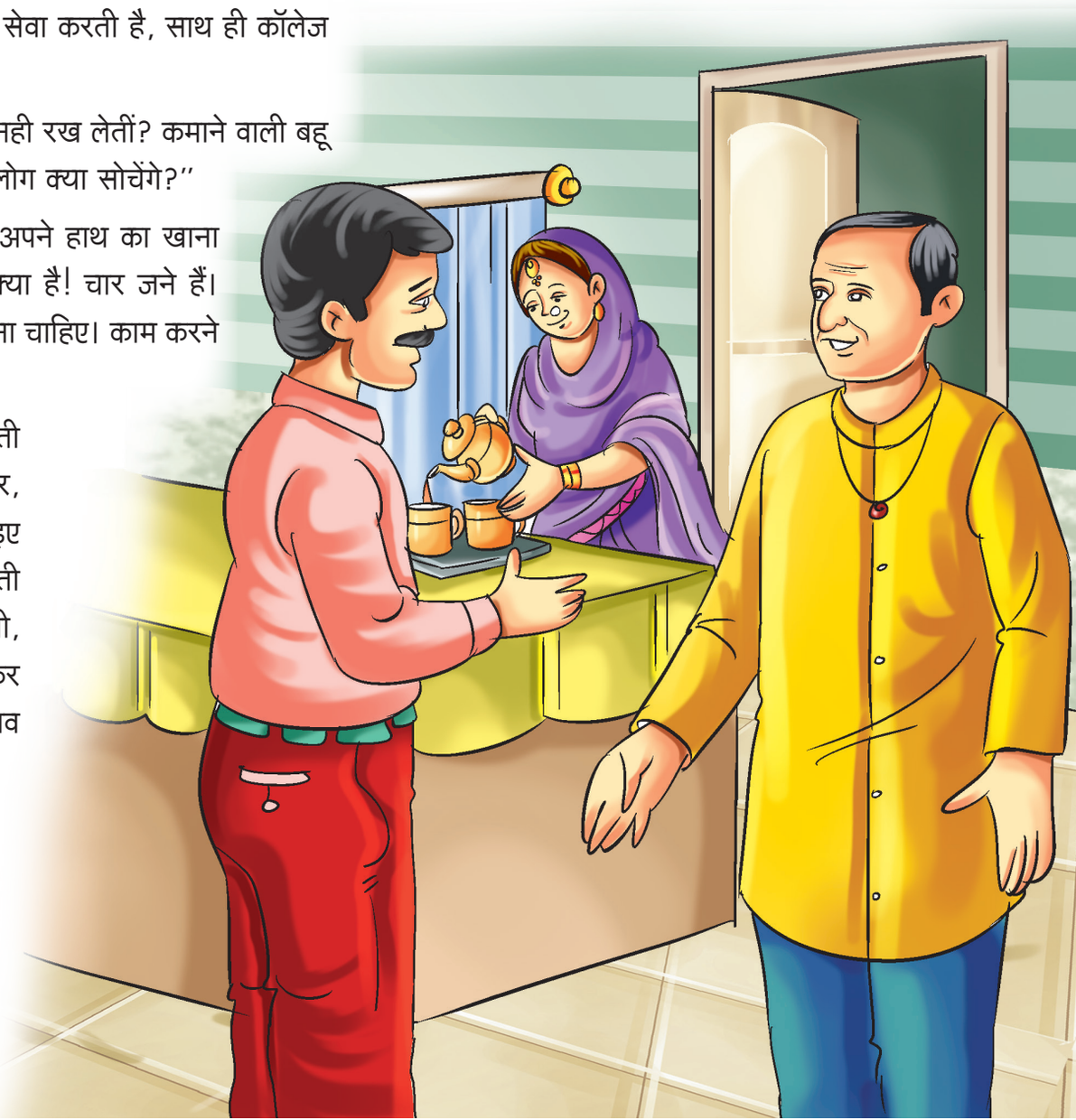

नौकर को किसी काम का नहीं बताया। इसलिए मैंने हटा दिया, वरना मेरा क्या जाता है? कमानेवाले तुम हो और खर्चने वाले भी तुम्हीं हो। मैं आराम से बैठ जाती हूँ। मुझे क्या पड़ी है, हाथ जलाने की!'' रमा खीझ उठी।

मैंने बीच-बचाव के खयाल से समझाया, ''अपना काम खुद करने में बुरा क्या है? भाभी का समय भी कटेगा और तुम लोगों को बढ़िया खाना भी मिलेगा। जब वे स्वयं खाना बनाने को तैयार हैं, तो तुम रोकने की क्यों सोचते हो?''

''अगर वह खुद बना ले, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है, मगर बेचारी बहू से सारा दिन काम लेती है। उसे पढ़ने की फुरसत नहीं मिलती। जब वह छह सौ रुपये मासिक कमा कर लाती है, तो उसमें से एक सौ रुपये रसोइए के पीछे खर्च करने में क्या हर्ज है? अगर अशिक्षित बहू घर आती तो क्या होता? मेरे भाई के घर ही हालत जानते हो? वे पचास हजार रुपए दहेज लेकर मैट्रिक पास बहु को घर लाए। वह रानी की तरह बैठी रहती है। परोसने तक का काम नहीं करती। कोई उसे छोटा-मोटा काम बता दे, तो कहती है, ''मेरे पिताजी ने इसलिए पचास हजार रुपये नहीं दिए हैं कि मैं आपके घर बेगारी करूँ। वे रुपये बैंक में जमा कर दो जो ब्याज मिले, उससे नौकर-चाकर रख लो।'' आखिर मेरी बहू तो ऐसी नहीं। बेचारी अपना एक भी मिनट आराम करने को नहीं बिताती। समझो कि यह हमारी खुशकिस्मती थी कि ऐसी बहू हमें मिली।''

पति को बहू की तारीफ के पुल बाँधते देख रमा से रहा नहीं गया। वह तनकर बोली, ''मैं ही चाकरी करने के लिए पैदा हुई हूँ न! मेरे बाप-दादे जमींदार थे। हमारे मायके में नौकर-चाकर, गाड़ी-वाड़ी सब कुछ थी, लेकिन मैं यहाँ क्या भोग रही हूँ?''

बात बढ़ते देख वेंकटेश्वर राव के साथ मैं बैठक में आ गया। वेंकटेश्वर राव ने सिगरेट के केस आगे बढ़ाते हुए कहा, ''मैं जानता हूँ, तुमने सिगरेट पीना छोड़ दिया है। पर मेरी कसम, तुम एक सिगरेट तो पी लो। 'नहीं' मत कहो, वरना मुझे दुख होगा।''

मैं उस हालत में राव को अप्रसन्न नहीं करना चाहता था। सिगरेट जलाकर कश लेते हुए मैं सोचने लगा कि राव के घर में नाहक तनाव आ गया। राव ने ऐश ट्रे लाकर तिपाई पर रखा। मेरी उत्सुकता जगी। वह चाँदी का बना था। उलटे पैर के जूते की आकृति का था। इस किस्म का ऐश ट्रे मैंने पहली बार देखा था। मैंने पूछा, ''यार! तुमने इसे कहाँ से खरीदा?''

राव दार्शनिक की भाँति गंभीर हो गया। फीकी मुस्कान उसके चेहरे पर खिल उठी।

दोस्त मैं तुमसे क्यों छिपाऊँ? यह ऐश ट्रे मेरे थोथे आदर्शों का उपहास करने वाला अविस्मरणीय चिह्न है। तुम जानते हो, हमने कॉलेज में पढ़ते समय शपथ ली कि हम भूलकर भी दहेज न लेंगे। यह भी जानते हो हमने अपने विवाह के समय इसका पालन भी किया, पर क्या बताऊँ? जब मेरे पुत्र सुरेश के विवाह का प्रश्न उठा, तब मैंने बिना देहज के एक मित्र की कन्या के साथ रिश्ता पक्का किया। मेरी श्रीमती जी को वह रिश्ता पसंद नहीं आया। कई अच्छे परिवारों की लड़कियों के पिताओं ने मेरे घर की अनेक बार परिक्रमाएँ कीं, किंतु देवी रमा उन भक्तों की दक्षिणा पर प्रसन्न नहीं हुई। आखिर मैंने यह रिश्ता तय किया। रमा ने सीमा को देखा। पसंद किया। रिश्ता पक्का भी हो गया। निमंत्रण पत्र भी छप गए।

विवाह में केवल पंद्रह दिन रह गए थे। रमा सोच रही थी कि सीता के पिता सिविल सप्लाई अफसर हैं, उन्होंने दोनों हाथों से खूब कमाया होगा। बिना माँगे हजारों की दक्षिणा मिल जाएगी। आखिर न मालूम कैसे उसके कानों में यह भनक पड़ी कि सीमा के पिता बड़े ही भद्रपुरुष हैं और ईमानदार हैं। उन्होंने कभी रिश्वत नहीं ली, इसलिए वह विवाह ठाठ से तो करेंगे, किंतु दहेज में एक भी पैसा न देंगे। जब सुंदर, सुशील एवं योग्य कन्या को हम 'कन्यादान' की रस्म अदा कर सौंपते हैं, तो दक्षिणा क्यों चुकाएँ?

मैंने भी कभी सीमा के पिता से दहेज की माँग नहीं की थी। रमा मुझ पर दबाव डालने लगी कि मैं सीमा के पिता से दहेज की रकम की बात पक्की कर लूँ।

आखिर मैं विवश हो गया। झिझकते हुए मैंने सीमा के पिता के कानों में वह बात डाल दीं मैंने सिर्फ इतना ही कहा, "भाई साहब, कई लोग लाख रुपयों के दहेज का लोभ दिखाते मेरे घर आए, लेकिन मैंने उन सभी रिश्तों को ठुकरा दिया। मैं सिर्फ लड़की को योग्य, सुशील और सुंदर देखना चाहता था, लेकिन मेरी श्रीमती कुछ और सोचती हैं। मैं यही कहूँगा कि हम दोनों परिवारों की प्रतिष्ठा को ध्यान में रखते हुए उचित अवश्य दें।"

ये शब्द कहकर मैं घर लौट आया। वह भले मानुस थे, मुझ पर नाराज भी नहीं हुए, लेकिन मैंने घर लौटकर रमा को सूचना दी कि अच्छी खासी रकम दहेज में मिल जाएगी, तुम फिक्र मत करो। विवाह के दिन तक रोज वह मुझे तंग करती रही कि तुमने यह क्यों नहीं कहा कि पचास हजार रुपयों का दहेज मिलने पर ही हम आपकी कन्या को ब्याहेंगे।

मैंने एक सप्ताह बाद सुना कि सीमा के पिता ने 'राइस मिल्स एसोसिएशन' के सदस्यों को अपने घर बुलाया था। 'राइस मिल्स एसोसिएशन' ने कन्या को एक बहुत बड़ा चाँदी का बरतन भेंट किया। वही बरतन हमें दहेज में प्राप्त हुआ। मेरी श्रीमती जी ने विवाह संपन्न होते ही वह बरतन लेकर कमरे में सुरक्षित रख दिया। मुझे अलग से बुलाकर बरतन का ढक्कन खोला। उसकी आँखे विस्मय से चमक उठीं। नोटों के बंडलो से वह बरतन भरा हुआ था।

रमा ने सारे बंडल जमीन पर उड़ेल दिए। उसमें कुल मिलाकर साठ हजार एक सौ सालह रुपयें थे। रमा, सीमा के पिता की उदारता की प्रशंसा करती रही। वे सभी नोट एकदम नए थे। मुझे तो डर लगा कि कहीं ये जाली नोट तो नहीं।

रमा रुपयों के बंडलों को एक बक्स में सजाने लगी। मैंने बरतन में हाथ डाला, तो कोई और चीज हाथ लगी वह चाँदी का जूता था। मेरे समधी ने वह जूता मेरे सिर पर नहीं, दिल पर मारा था।

—बालशौरि रेड्डी

शब्द-अर्थ

प्रश्नों की बौछार – लगातार एक के बाद एक प्रश्न पूछना
अभिन्न – जो भिन्न न हो
आराधिका – आराधना करने वाली (प्रसंग के अनुसार–प्रशंसा करनेवाली)
बिरादरी – एक ही जाति के लोगों का समुदाय
बेगारी करना – बिना पैसे के काम करना
परिक्रमाएँ – चक्कर लगाना
प्रतिष्ठा – इज्जत
न्योता – निमंत्रण
हॉस्टल – छात्रावास
दोषारोपण – दोष लगाना
आपत्ति – संकट, ऐतराज
उत्सुकता – जानने की इच्छा
दक्षिणा – अतिरिक्त द्रव्य या दान (यहाँ प्रसंग के अनुसार दहेज)
भलेमानुस – सज्जन

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) किसके पुत्र की वर्षगाँठ धूमधाम से मनायी जा रही थी?
(ख) किसे देखकर लेखक बहुत प्रसन्न हुए?
(ग) 'सीमा' कौन थी?
(घ) बैठक की सजावट देखकर लेखक को कैसा लगा?
(ङ) स्वर्ण पदक किसे मिला था?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) दहेज लेने के पक्ष मे कौन था?

◯ शिवराम ◯ लेखक
◯ रमा ◯ वेंकटेश्वर राव

(ख) पुत्रवधू सीमा कितने रुपए मासिक कमाती थी?

◯ सौ रुपए ◯ छह सौ रुपए
◯ तीन सौ रुपए ◯ पाँच सौ रुपए

(ग) ''अगर वह खुद खाना बना ले, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं।'' किसने कहा?

◯ वेंकटेश्वर राव ने ◯ रमा ने
◯ वेंकटेश्वर राव के भाई ने ◯ सीमा ने

(घ) सीमा के पिता जी क्या काम करते थे?

- ◯ सेना में काम करते थे।
- ◯ व्यवसाय करते थे
- ◯ शिक्षक थे
- ◯ सिविल सप्लाई अफसर थे।

(ङ) 'ऐश-ट्रे' देखकर लेखक की उत्सुकता क्यों बढ़ गई?

- ◯ क्योंकि वह सोने का बना था।
- ◯ क्योंकि वह लोहे का बना था।
- ◯ देखने में फूलदान जैसा लग रहा था।
- ◯ क्योंकि वह उलटे पैर के जूते की आकृति जैसा बना था।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) लेखक को नाश्ते का न्योता किसने दिया था?

(ख) मित्र ने लेखक के हाथों में कौन-सा अखबार थमाया?

(ग) लेखक सुरेश की शादी में क्यों नहीं गए थे?

(घ) रसोइया रखने का प्रस्ताव किसने रखा?

(ङ) पति को बहू की तारीफ के पुल बाँधते देख रमा क्यों तुनक उठी?

(च) हॉस्टल का लापरवाह वेंकटेश्वर राव इतना सुव्यवस्थित कैसे हो गया था?

(छ) वेंकटेश्वर राव और उनकी पत्नी रमा ने सीमा की विशेषताएँ बताते हुए क्या कहा?

(ज) वेंकटेश्वर राव के भाई के घर की विडंबना क्या थी?

(झ) राव ने 'ऐश-ट्रे' को उनके थोथे आदर्शों का उपहास करनेवाला अविस्मरणीय चिह्न क्यों कहा?

(ञ) वह कौन-सी विशेषता थी, जिसक तहत लेखक ने विवाह में उचित रकम देने की बात सीमा के पिता से कही?

(ट) वेंकटेश्वर राव यदि पत्नी के आग्रह के सामने न झुकते, तो क्यों वे अपने साथ न्याय करते?

भाषा-ज्ञान

1. समास– शब्दों के संक्षिप्तीकरण को समास कहा जाता है।

(क) द्विगु समास– जिस समास का पूर्व संख्यावाची होता है, उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे– षड्रस-छह रसों का समाहार।

(ख) कर्मधारय समास– जिस समास का पूर्व पद विशेषण और दूसरा अर्थात् उत्तर पद विशेष्य होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे– भद्रपुरुष-भद्र है जो पुरुष।

(ग) बहुव्रीहि समास– जिस समस्तपद में दोनों पद गौण हो अर्थात् जिसमें पहले और दूसरे पद की अपेक्षा तीसरे अन्य पद या अर्थ की प्रधानता होती है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

जैसे– कमलासना– कमल है आसन जिसका अर्थात् 'लक्ष्मी'।

लंबोदर– लंबा है उदर जिसका अर्थात् 'गणेश'

(नोट– यहाँ पर उपर्युक्त तीन समास के बारे में ही पढ़ेंगे।)

- **नीचे लिखे समस्तपदों का विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए-**

		विग्रह	समास का नाम
(क) चंद्रमुख	=	_____	_____
(ख) चारपाई	=	_____	_____
(ग) गजानन	=	_____	_____
(घ) त्रिलोचन	=	_____	_____
(ङ) नीलगाय	=	_____	_____

क्रियात्मक गतिविधि

- **दहेज प्रथा उन्मूलन के लिए हिंदी समाचार-पत्रों के उन शीर्षकों को पढ़कर कक्षा में सुनाइए, जिनमें दहेज प्रथा को समाप्त करने की बात कही गई हो।**
- **भविष्य में दहेज ने लेने वाले युवकों के आदर्श पात्रों को लेकर एक नुक्कड़ नाटक लिखिए। विद्यालय की सदन प्रतियोगिता में उसका प्रदर्शन कीजिए।**
- **अगर आप कहीं पर शादी में जा रहे हो और शादी में दहेज को लेकर विवाद हो जाए, तो अपने विचार वहाँ पर कैसे रखोगे लिखिए।**
- **अगर हमें दहेज प्रथा को खत्म करना हो, तो हमें इसके लिऐ क्या-क्या कदम उठाने पड़ेंगे अपने विचारों की समीक्षा कीजिए।**

एलबम 3

पंडित शादीराम ने ठंडी साँस भरी, और सोचने लगे-क्या यह ऋण कभी सिर से न उतरेगा?

वे निर्धन थे, परंतु दिल के बुरे न थे। वे चाहते थे कि चाहे जिस प्रकार भी हो, अपने यजमान-लाला सदानंद का रुपया अदा कर दें। उनके लिए एक-एक पैसा मोहर के बराबर था। अपन पेट काटकर बचाते थे, परंतु जब चार पैसे इकट्ठे हो जाते, तो कोई ऐसा खर्च निकल आता कि सारा रुपया उड़ जाता। शादीराम के हृदय पर बर्छियाँ चल जाती थीं। उनका वही हाल होता था, जो उस डूबते हुए मनुष्य का होता है, जो हाथ-पाँव मारकर किनारे पहुँचे और किनारा टूट जाए। उस समय उसकी दशा कैसी करुणाजनक, कैसी हृदय-विदारक होती है? वह प्रारब्ध को गालियाँ देने लगता है। यही दशा शादीराम की थीं। इसी प्रकार कई वर्ष बीत गए, शादीराम ने पैसा-पैसा बचाकर अस्सी रुपये जोड़ लिएं। उन्हें लाला सदानंद के पाँच सौ रुपये देने थें। इस अस्सी रुपये की रकम से ऋण उतरने का समय निकट आता प्रतीत हुआ। परंतु आशा धोखा दे गई। एकाएक उनका छोटा लड़का बीमार हुआ और लगातार चार महीने तक बीमार रहा। पैसा-पैसा करके बचाए हुए रुपये दवा-दारू में उड़ गए। पंडित शादीराम ने सिर पीट लिया। अब चारों ओर फिर अंधकार था। उसमें प्रकाश की हल्की-सी किरण भी दिखाई न देती थी। उन्होंने ठंडी साँस भरी, और सोचने लगे-क्या यह ऋण कभी सिर से न उतरेगा?

लाला सदानंद अपने पुरोहित की विवशता को जानते थे, और यह न चाहते थे कि वह रुपये देने का प्रयत्न करें। उन्हें इस रकम की रत्ती-भर भी परवाह न थी। उन्होंने इसके लिए कभी तगादा तक नहीं किया, न कभी शादीराम से इस विषय में कोई बात छेड़ी। इस बात से वे इतना डरते थे, मानो पैसे स्वयं उन्हीं को देने हों। परंतु शादीराम के हृदय में शांति न थी। प्रायः सोचा करते थे कि यह कैसे भलेमानस हैं, जो अपनी रकम के बारे में मुझसे बात तक नहीं करते? खैर, यह कुछ नहीं करते, सो ठीक है, परंतु इसका तात्पर्य यह थोड़े ही है कि मैं निश्चिंत हो जाऊँ।

उन्हें लाला सदानंद के सामने सिर उठाने का साहस न था। उसे ऋण के बोझ ने नीचे झुका दिया था। यदि लाला सदानंद ऐसी सज्जनता न दिखलाते, और शादीराम को बार-बार तगादा करके तंग करते, तो उन्हें इतना मानसिक कष्ट न होता। हम अत्याचार का सामना सिर उठाकर कर सकते हैं, परंतु भलमनसी के सामने आँखें नहीं उठतीं।

एक दिन लाला सदानंद किसी काम से पंडित शादीराम के घर गए, और उनकी आलमारी में कई सौ बंगला, हिंदी, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं की मासिक पत्रिकाएँ देखकर बोले, ''यह क्या है?''

पंडित शादीराम ने पैर के अँगूठे से ज़मीन कुरेदते हुए उत्तर दिया, ''पुरानी पत्रिकाएँ हैं। बड़े भाई को पढ़ने का बड़ा चाव था, वे प्रायः मँगवाते रहते थे। जब जीवित थे, तो किसी को हाथ न लगाने देते थे। अब इन्हें कीड़े खा रहे हैं।''

''रद्दी में क्यों नहीं बेच देते?''

''इनमें चित्र हैं। जब कभी बच्चे रोने लगते हैं, तो एक-आध निकालकर दे देता हूँ। इससे उनके आँसू थम जाते हैं।'' लाला सदानंद ने आगे बढ़कर कहा, ''दो-चार परचे दिखाओ तो!''

पंडित शादीराम ने कुछ परचे दिखलाए। हर एक परचे में कई-कई सुंदर और रंगीन चित्र थे। लाला सदानंद कुछ देर तक उलट-पलटकर देखते रहे। सहसा उनके हृदय में एक विचित्र विचार उठा। चौंककर बोले, ''पंडित जी! ये चित्रकला-सौंदर्य के अति उत्तम नमूने हैं। अगर किसी शौकीन को पसंद आ जाँए, तो हज़ार-दो हज़ार रुपये कमा लो।''

पंडित शादीराम ने एक ठंडी साँस लेकर कहा, ''ऐसे भाग्य होते, तो यों धक्के न खाता फिरता।''

लाला सदानंद बोले, ''एक काम करो, आज बैठकर इन पत्रिकाओं में जितनी अच्छी-अच्छी तस्वीरें हैं, सबको छाँटकर अलग कर लो। जब यह कर चुको, तो तुझे बता देना।''

''आप क्या करेंगे?''

''मैं इनका एलबम बनाऊँगा और तुम्हारी ओर से विज्ञापन दे दूँगा। संभव है, यह विज्ञापन किसी शौकीन के हाथ पड़ जाए, और तुम चार पैसे कमा लो।''

पंडित शादीराम को यह आशा न थी कि कोयले में हीरा मिल जाएगा। घोर निराशा ने आशा के द्वार चारों ओर से बंद कर दिए थे। वह उन हतभाग्य मनुष्यों में से थे, जो संसार में असफल और केवल असफल रहने के लिए उत्पन्न होते हैं। सोने को हाथ लगाते थे, तो वह भी मिट्टी हो जाता था। उनकी ऐसी धारणा ही नहीं, पक्का विश्वास था कि यह प्रयत्न भी कभी सफल न होगा। परंतु लाल सदानंद के आग्रह से दिन-भर बैठकर तस्वीरें छाँटते रहे। न मन में लगन थी, न हृदय में चाव परंतु लाला सदानंद की बात को टाल न सके। शाम को देखा, एक-से-एक बढ़िया दो सौ चित्र हैं। उस समय वह उन्हें देखकर स्वयं उछल पड़े। उनके मुख पर आनंद की आभा नृत्य करने लगी, जैसे फेल हो जाने का विश्वास करके अपने प्रारब्ध पर रो चुके विद्यार्थी को पास हो जाने का तार मिल गया हो। उस समय वह कैसा प्रसन्न होता है? चारों ओर कैसी विस्मित और प्रफुल्लित दृष्टि से देखता है? यही अवस्था पंडित शादीराम की थी। वह उन चित्रों की ओर इस प्रकार देखते थे, मानो उनमें से प्रत्येक चित्र दस-दस रुपये का नोट हो। बच्चों को उधर देखने न देते थे। वे सफलता के विचार से ऐसे प्रसन्न हो रहे थे, जैसे सफलता प्राप्त हो चुकी हो, यद्यपि वह अभी कोसों दूर थी। लाला सदानंद की आशा उनके मस्तिष्क में निश्चय का रूप धारण कर चुकी थी।

लाला सदानंद ने चित्रों को एलबम में लगवाया, और कुछ उच्च कोटि के समाचार-पत्रों में विज्ञापन दे दिया। अब पंडित शादीराम हर समय डाकिये की प्रतीक्षा करते रहते थे। रोज़ सोचते कि आज कोई चिट्ठी आवेगी। दिन बीत जाता, और कोई उत्तर न आता था। रात को आशा सड़क की धूल की तरह बैठ जाती थी। परंतु दूसरे दिन लाला सदानंद की बातों से टूटी हुई आशा फिर बँध जाती थी, जिस प्रकार गाड़ियाँ चलने से पहले दिन की बैठी हुई धूल हवा में उड़ने लगती है। आशा फिर अपना चमकता हुआ मुख दिखाकर दरवाज़े पर खड़ा कर देती थी। डाक का समय होता, तो बाज़ार में ले जाती, और

वहाँ से डाकखाने पहुँचाती थी। इसी प्रकार एक महीना बीत गया, परंतु कोई पत्र न आया। पंडित शादीराम सर्वथा निराश हो गए। परंतु फिर भी कभी-कभी सफलता का विचार आ जाता था, जिस प्रकार अँधेरे में जुगनू चमक जाता है। यह जुगनू की चमक निराश हृदयों के लिए कैसी जीवनदायिनी, कैसी हृदयहारिणी होती है। इसके सहारे भूले हुए पथिक मंज़िल पर पहुँचने का प्रयत्न करते हैं और कुछ देर के लिए अपना दुख भूल जाते हैं। इसमें वर्षा की नमी हो या न हो, परंतु इससे काली घटा का जादू कौन छीन सकता है? आखिर एक दिन शादीराम के भाग्य जागे। कोलकाता के एक मारवाड़ी सेठ ने पत्र लिखा कि एलबम भेज दो, यदि पसंद आ गया, तो खरीद लिया जाएगा। मूल्य की कोई चिंता नहीं, चीज़ अच्छी होनी चाहिए। यह पत्र उस करवट के समान था, जो सोया हुआ मनुष्य जागने से पहले बदलता है और उसके पश्चात उठकर बिस्तरे पर बैठ जाता है।

यह किसी पुरुष की करवट न थी, किसी स्त्री की करवट न थी, यह भाग्य की करवट थी। पंडित शादीराम दौड़ते हुए लाला सदानंद के पास पहुँचे, और उन्हें पत्र दिखाकर बोले, "भेज दूँ?"

लाला सदानंद ने पत्र को अच्छी तरह देखा, और उत्तर दिया– "रजिस्ट्री द्वारा भेज दें। शौकीन आदमी है, खरीद लेगा। लिख दें, एक हज़ार रुपये से कम पर सौदा न होगा।"

कुछ दिन बाद उन्हें उत्तर में एक बीमा मिला। पंडित शादीराम के हाथ-पैर काँपने लगे। परंतु हाथ-पैरों से अधिक उनका हृदय काँप रहा था। उन्होंने जल्दी से लिफ़ाफ़ा खोला, और उछल पड़े। उसमें सौ-सौ के दस नोट थे। पहले उनके भाग्य ने करवट बदली थी, अब वह पूर्णरूप से जाग उठा। पंडित शादीराम खड़े थे, बैठ गए। सोचने लगे, "अगर दो हज़ार रुपये लिख देता, तो शायद उतने भी मिल जाते, इस विचार ने उनकी सारी प्रसन्नता किरकिरी कर दी।"

सायंकाल के समय वह लाला सदानंद के पास गए और पाँच सौ रुपये के नोट सामने रखकर बोले, "परमात्मा को धन्यवाद है कि मुझे इस भार से छुटकारा मिला। अपने रुपये सँभाल लीजिए। आपने जो दया और सज्जनता दिखलाई है, उसे मैं मरण-पर्यंत न भूलूँगा।"

लाला सदानंद ने विस्मित होकर पूछा, "पंडित जी! क्या सेठ ने एलबम खरीद लिया?"

"जी हाँ, रुपये भी आ गए-एक हज़ार। नहीं तो मुझ निर्धन ब्राह्मण के पास क्या था, जो आपका ऋण चुका देता, परमात्मा ने मेरी सुन ली।"

"मैं पहले भी कहना चाहता था, परंतु कहते हुए हिचकिचाता था कि आपके हृदय को कहीं ठेस न पहुँचे पर अब मुझे यह भय नहीं है, क्योंकि रुपये आपके हाथ में हैं। मेरा विचार है कि आप ये रुपये अपने ही पास रखें। मैं आपका यजमान हूँ। मेरा धर्म है कि आपकी सेवा करूँ।"

पंडित जी की आँखों में आँसू आ गए, दुपट्टे से पोंछते हुए बोले, "आप जैसे सज्जन संसार में बहुत थोड़े हैं। परमात्मा आपको चिरंजीवी रखे। परंतु अब तो मैं ये रुपये न लूँगा। इतने वर्ष आपने माँगे तक नहीं, यह उपकार कोई थोड़ा नहीं है। मुझे इससे उऋण होने दीजिए। ये पाँच सौ रुपये देकर मैं हृदय की शांति खरीद लूँगा।"

निर्धन ब्राह्मण की यह उदारता और सच्चरित्रता देखकर सदानंद का मन-मयूर नाच उठा। उन्होंने नोट ले लिए। मनुष्य रुपये देकर भी ऐसा प्रसन्न हो सकता है, इसका अनुभव उन्हें पहली ही बार हुआ। पंडित जी के चले जाने पर उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं, और किसी विचार में मग्न हो गए। इस समय उनके मुख-मंडल पर एक विशेष आत्मिक तेज़ था।

छह मास बीत गए। लाला सदानंद बीमार थे। ऐसे बीमार वह सारी आयु में न हुए थे। पंडित शादीराम उनके लिए दिन-रात माला फेरा करते थे। वे वैद्य न थे, डॉक्टर न थे। वे ब्राह्मण थे, उनकी औषधि माला फेराना ही था, और यह काम वे अपनी आत्मा की पूरी शक्ति, अपने मन की पूरी श्रद्धा से करते थे। उन्हें औषधि की अपेक्षा आशीर्वाद और प्रार्थना पर अधिक भरोसा था।

एक दिन लाला सदानंद चारपाई पर लेटे थे। उनके पास उनकी बूढ़ी माँ उनके दुर्बल और पीले मुख को देख-देखकर अपनी आँखों के आँसू अंदर-ही-अंदर पी रही थी। थोड़ी दूर पर, एक कोने में, उनकी नवोढ़ा स्त्री घूँघट निकाले खड़ी थी, और देख रही थी कि कोई काम ऐसा तो नहीं, जो रह गया हो। पास पड़ी हुई एक चौकी पर पंडित शादीराम बैठे रोगी को भगवद्गीता सुना रहे थे।

एकाएक लाला सदानंद बेसुध हो गए। पंडित जी ने गीता छोड़ दी, और उठकर उनके सिरहाने बैठ गए। स्त्री गरम दूध लेने के लिए बाहर दौड़ी, और माँ अपने बेटे को घबराकर आवाज़े देने लगीं। इस समय पंडित जी को रोगी के सिरहाने के नीचे कोई कड़ी-सी चीज़ चुभती हुई जान पड़ी। उन्होंने नीचे हाथ डालकर देखा, तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही! यह सख्त चीज़ वही एलबम थी, जिसे किसी सेठ ने नहीं, बल्कि स्वयं लाला सदानंद ने खरीद लिया था। पंडित शादीराम इस विचार से बहुत प्रसन्न थे कि उन्होंने सदानंद का ऋण उतार दिया है, परंतु यह जानकर उनके हृदय पर चोट-सी लगी कि ऋण उतरा नहीं, बल्कि पहले से दूना हो गया है। उन्होंने अपने बेसुध यजमान के पास बैठे-बैठे एक ठंडी साँस भरी, और सोचने लगे, "क्या यह ऋण कभी न उतरेगा?"

कुछ देर के बाद लाला सदानंद को होश आया। उन्होंने पंडित जी से एलबम छीन लिया, और धीरे से कहा, "यह एलबम सेठ साहब से अब मैंने मँगवा लिया है।"

पंडित जी जानते थे कि यजमान जी झूठ बोल रहे हैं, परंतु वह उन्हें पहले की अपेक्षा अधिक सज्जन, अधिक उपकारी और अधिक ऊँचा समझने लगे थे।

–सुदर्शन

शब्द-अर्थ

ऋण — कर्ज

हृदय-विदारक — हृदय को चरने वाला

विवशता — मजबूरी

भलेमानस — नेक व्यक्ति

सज्जनता — शिष्टता

चाव — शौक

विज्ञापन — इश्तहार

शौकीन — किसी कार्य या बात में रुचि रखने वाला

आभा — चमक

प्रफुल्लित — खुश

अदा करना — चुकाना

प्रारब्ध — भाग्य

तगादा — माँग

तात्पर्य — अर्थ

भलमनसी — भद्रतापूर्ण व्यवहार

नमूना — प्रतिरूप

हतभाग्य — भाग्यहीन

आग्रह — नम्र निवेदन

विस्मित — आश्चर्यचकित

मस्तिष्क — दिमाग

जीवनदायिनी – जीवन देनेवाली
पथिक – यात्री
किरकिरा करना – काम खराब करना
चिरंजीवी – लंबी आयु तक जीवित रहने वाला
सच्चरित्रता – सदाचार
नवोढ़ा – नव-विवाहित स्त्री
हृदयहारिणी – हृदय को हरने वाली
भाग्य जागना – भाग्योदय
मरण-पर्यंत – मृत्यु तक
उऋण – ऋण-मुक्त
दुर्बल – कमज़ोर
बेसुध – बेहोश

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) इस पाठ का कोई अन्य शीर्षक सोचकर बताइए।

(ख) प्रस्तुत पाठ के लेखक का नाम बताइए।

(ग) शादीराम करें ने कितने रुपये जोड़ लिए थे?

(घ) शादीराम के अस्सी रुपये कैसे खर्च हो गए?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) पंडित शादीराम कैसे व्यक्ति थे?

☐ निडर ☐ निर्धन ☐ धनवान ☐ क्रूर

(ख) पंडित शादीराम का छोटा लड़का कितने महीने बीमार रहा?

☐ दो ☐ पाँच ☐ चार ☐ तीन

(ग) कहाँ के मारवाड़ी सेठ ने शादीराम को पत्र लिखा था?

☐ कोलकाता ☐ राजस्थान ☐ दिल्ली ☐ बनारस

(घ) सेठ से पंडित शादीराम को एलबम के लिए कितने रुपये मिले?

☐ 2000 रुपये ☐ 700 रुपये ☐ 1000 रुपये ☐ 500 रुपये

2. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(क) पंडित जी में लाला सदानंद के सामने सिर उठाने का साहस क्यों नहीं था?

(ख) लाला सदानंद के बीमार होने पर पंडित जी माला क्यों फेर रहे थे?

(ग) पंडित जी को एलबम के वास्तविक खरीददार का पता कैसे लगा?

भाषा-ज्ञान

1. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। इसके मुख्यत: तीन भेद हैं-

व्यक्तिवाचक संज्ञा—किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध कराने वाले शब्दों को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे— सचिन, दिल्ली, रामचरितमानस, दीवाली, आदि।

जातिवाचक संज्ञा— जिस संज्ञा शब्द से संपूर्ण जाति का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे— लड़के, पक्षी, पर्वत, नारी आदि।

भाववाचक संज्ञा— जिन संज्ञा शब्दों से किसी व्यक्ति, स्थान अथवा वस्तु के गुण, दोष, दशा या अवस्था आदि का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे— खुश, बचपन, ममता, बुढ़ापा आदि।

- **दिए गए शब्दों के लिए संज्ञा-भेद लिखिए।**

(क) अत्याचार – _____ (ख) मनुष्य – _____

(ग) सदानंद – _____ (घ) शादीराम – _____

(ङ) प्रसन्न – _____ (च) एलबम – _____

2. विलोम शब्द लिखिए।

(क) आशा x _____ (ख) प्रकाश x _____

(ग) सज्जन x _____ (घ) निर्धन x _____

(ङ) उपकारी x _____ (च) दुर्बल x _____

3. दुर्बल शब्द 'दुर्' उपसर्ग के योग से बना है— दुर् + बल।

- **नीचे दिए उपसर्गों का प्रयोग करते हुए तीन शब्द बनाइए।**

(क) उप – _____ _____ _____

(ख) सु – _____ _____ _____

(ग) अ – _____ _____ _____

क्रियात्मक गतिविधि

- **विभिन्न रंगीन पत्रिकाओं में से सुंदर रंगीन चित्र काटकर एलबम बनाइए।**
- **प्रेमचंद की 'सवा सेर गेहूँ' कहानी पढ़िए।**
- **'निराशा में आशा की किरण' पर एक भावपूर्ण कहानी डायरी में लिखिए।**
- **लाला सदानंद जब पंडित शादीराम के घर आए, उस दौरान हुई बातचीत को कक्षा के दो छात्र मिलकर संवाद के रूप में प्रस्तुत कीजिए।**
- **यदि आप लाला सदानंद की जगह होते तो पंडित शादीराम का ऋण उतारने के लिए क्या करते? लिखिए।**
- **पहले कर्ज सिर्फ़ लाला- महाजन आदि से ही लिए जाते थे किंतु अब विभिन्न बैंकों द्वारा लोन लिया जा सकता है। 'लोन' का अर्थ क्या है? लान लेने के लिए आवश्यक नियम या शर्तें क्या हाती हैं, पता लगाइए।**

परीक्षा 4

जब रियासत देवगढ़ के दीवान सुजानसिंह बूढ़े हुए, तो उन्हें परमात्मा की याद आई। जाकर महाराज से उन्होंने विनय की– "दीनबंधु! दास ने श्रीमान् की सेवा चालीस साल तक की। अब कुछ दिन परमात्मा की भी सेवा करने की आज्ञा चाहता हूँ। दूसरे, अब अवस्था भी ढल गई, राज-काज सँभालने की शक्ति नहीं रह गई, कहीं भूल-चूक हो जाए, तो बुढ़ापे में दाग लगे, सारी जिंदगी की नेकनामी मिट्टी में मिल जाए।"

राजा साहब अपने अनुभवशीलता और नीति-कुशल दीवान का बड़ा आदर करते थे। उन्होंने बहुत समझाया, लेकिन जब दीवान साहब ने माने, तो हारकर उन्होंने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली, पर शर्त यह लगा दी कि रियासत के लिए नया दीवान उन्हीं को खोजना पड़ेगा।

दूसरे दिन देश के प्रसिद्ध समाचार-पत्रों में यह विज्ञापन निकला– "देवगढ़ के लिए एक सुयोग्य दीवान की आवश्यकता है। जो सज्जन अपने को इसके योग्य समझें, वे वर्तमान दीवान सरदार सुजानसिंह की सेवा में उपस्थित हों। यह जरूरी नहीं कि वे ग्रेजुएट हों, मगर उनका हृष्ट-पुष्ट होना आवश्यक है। मंदाग्नि के मरीजों को यहाँ तक आकर कष्ट उठाने की कोई जरूरत नहीं। एक महीने तक उम्मीदवारों के रहन-सहन, आचार-विचार की परख की जाएगी; विद्या कम, परंतु कर्तव्य का अधिक विचार किया जाएगा। जो महाशय इस परीक्षा मे खरे उतरेंगे, वे ही इस उच्च पद पर सुशोभित होंगे।"

इस विज्ञापन ने सारे मुल्क में हलचल मचा दी। ऐसा ऊँचा पद और किसी प्रकार की कैद नहीं। केवल नसीब का खेल है। सैंकड़ो आदमी अपना-अपना भाग्य परखने के लिए चल पड़े। देवगढ़ में नए-नए और रंग-बिरंगे मनुष्य दिखाई देने लगे। प्रत्येक रेलगाड़ी से उम्मीदवारों का एक मेला-सा उतरता। कोई पंजाब से चला आ रहा था, तो कोई मद्रास से। कोई नए फैशन का प्रेमी था, तो कोई पुरानी सादगी पर मिटता था। पंडितों

और मौलवियों को भी अपने-अपने भाग्य की परीक्षा करने का अवसर मिला। बेचारे सनद के नाम को रोया करते थे, तो यहाँ उसकी कोई जरूरत नहीं थी। रंगीन तमगे, चोंगे और नाना प्रकार के अँगरखे और कंटोप देवगढ़ मे अपनी सजधज दिखाने लगे, क्योंकि सनद की कैद न होने पर भी सनद से परदा तो ढका ही रहता है।

सरदार सुजानसिंह ने इस महानुभावों के आदर-सत्कार का बड़ा अच्छा प्रबंध कर दिया था। लोग अपने-अपने कमरों में बैठे हुए रोजेदार मुसलमानों की तरह महीने के दिन गिना करते थे। हर एक मनुष्य अपने जीवन को अपनी बुद्धि के अनुसार अच्छे रूप में दिखाने की कोशिश करता था। 'मिस्टर 'अ' दिन के नौ बजे तक सोया करते थे, लेकिन आजकल वे बगीचे मे टहलते हुए उषा का दर्शन करते थे। मिस्टर 'ब' को हुक्का पीने की लत थी, पर आजकल वे बहुत रात गए किवाड़ बंद करके अँधेरे मे हुक्का पीते थे। मिस्टर 'स', 'द' और 'ज' से उनके घरों पर नौकरों की नाक में दम था, लेकिन ये सज्जन आजकल 'आप' और 'जनाब' के बगैर नौकरों से बातचीत नहीं करते थे। महाशय 'क' नास्तिक थे- हक्सले के उपासक, मगर आजकल उनकी धर्मनिष्ठा देखकर मंदिर के पुजारी को पदच्युत हो जाने की आशंका लगी रहती। मिस्टर 'ल' को किताबों से घृणा थी, परंतु आजकल बड़े-बड़े धर्मग्रंथ खोले पढ़ने में डूबे रहते थे। जिससे भी बातचीत कीजिए, वही नम्रता और सदाचार का देवता मालूम होता था। शर्माजी बड़ी रात से ही वेद-मंत्र पढ़ने लगते थे और मौलवियों को नमाज तलावत के सिवा और कोई काम ही न था। लोग समझते थे कि एक महीने का झंझट है, किसी जरह काट लें, कहीं कार्य सिद्ध हो गया तो फिर कौन पूछता है? लेकिन मनुष्यों का वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा देख रह था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा है?

एक दिन नए फैशन वालों को सूझी कि आपस मे हॉकी का खेल हो जाए। यह प्रस्ताव हॉकी के मँझे खिलाड़ियों ने पेश किया। यह भी तो आखिर एक विद्या है, इसे क्यों छिपाए रखें? संभव है, कुछ हाथों की सफाई ही काम कर जाए। चलिए तय हो गया, कोर्ट बन गए, खेल शुरू हो गया और गेंद किसी दफ्तर के अपरेंटिस की तरह ठोकरें खाने लगी।

रियासत देवगढ़ में यह खेल बिल्कुल निराला था। पढ़े-लिखे भलेमानुस तो शतरंज और ताश जैसे गंभीर खेल खेलते थे। दौड़-कूद के खेल तो बच्चों के खेल समझे जाते थे।

खेल बड़े उत्साह से जारी था। धावे के लोग जब गेंद लेकर तेजी से उठते, तो ऐसा जान पड़ता था कि कोई लहर बढ़ती हुई लहर को इस तरह रोक लेते थे मानो लोहे की दीवार हों।

संध्या तक यह धूम-धाम रही। लोग पसीने में तर हो गए। खून की गरमी आँख और चेहरे से झलक रही थी। हाँफते-हाँफते बेदम हो गए, लेकिन हार-जीत का निर्णय न हो सका। अँधेरा हो गया था। इस दौरान से जरा दूर हटकर एक नाला था। उस पर कोई पुल न था। पथिकों को नाले में घुसकर आना पड़ता था। खेल अभी बंद हुआ था और खिलाड़ी लोग बैठे दम ले रहे थे कि एक किसान अनाज से भरी हुई गाड़ी लिए उस नाले के पास आया। लेकिन कुछ तो नाले में कीचड़ था और कुछ उसकी चढ़ाई इतनी ऊँची थी कि गाड़ी ऊपर न चढ़ सकती थी। वह कभी बैलों को ललकारता, कभी पहिये को हाथों से ढकेलता, लेकिन बोझ अधिक था और बैल कमजोर। गाड़ी ऊपर को न चढ़ती, और चढ़ती भी तो कुछ दूर चढ़कर फिर खिसककर नीचे पहुँच जाती। किसान बार-बार जोर लगाता और बार-बार झुँझलाकर बैलों को मारता, लेकिन गाड़ी उभरने का नाम न लेती। बेचारा किसान इधर-उधर निराश होकर ताकता, मगर वहाँ कोई सहायक नजर न आता था। गाड़ी को अकेले छोड़कर वह कहीं जा भी नहीं सकता था। वह बड़ी विपत्ति में फँसा हुआ था। इसी बीच खिलाड़ी हाथों में डंडे लिए झूमते-झामते उधर से निकले। किसान ने उसकी तरफ सहमी हुई आँखों से देखा, परंतु किसी से मदद माँगने का साहस न हुआ। खिलाड़ियों ने भी उसको देखा, मगर बंद आँखों से। उनमें सहानुभूति का नाम तक न था; उनमें स्वार्थ था, मद था, मत्सर था, उदासीनता थी, पर वात्सल्य का नाम भी न था। उसी समूह मे एक ऐसा मनुष्य भी था, जिसके हृदय में दया थी और साहस था। आज हॉकी खेलते हुए उसके पैरों में चोट लग गई थी। लँगड़ाता हुआ वह धीरे-धीरे चला आ रहा था। अकस्मात् उसकी निगाह गाड़ी पर

पड़र। वह ठिठक गया। उसे किसान को देखते ही सब बात ज्ञात हो गई। उसने हॉकी किनारे पर रख दी, कोट उतारा और किसान के पास जाकर बोला, "मैं तुम्हारी गाड़ी निकलवा दूँ?"

किसान ने देखा कि गठे हुए बदन का एक लंबा आदमी सामने खड़ा है। डरकर बोला, "हुजूर! आपसे कैसे कहूँ?" युवक ने कहा, "मालूम होता है, तुम यहाँ बड़ी देर से फँसे हुए हो। अच्छा, तुम गाड़ी पर जाकर बैलों को साधो, मैं पहिये को ढकेलता हूँ। अभी गाड़ी नाले के ऊपर आ जाती है।"

किसान गाड़ी पर जाकर बैठा, युवक ने पहिये को जोर लगाकर खिसकाया। कीचड़ बहुत ज्यादा था। वह घुटने तक जमीन में पड़ गया, लेकिन उसने हिम्मत न हारी।

उसने फिर जोर लगाया, उधर किसान ने बैलों को ललकारा, बैलों को सहारा मिला, उनकी भी हिम्मत बँध गई, उन्होंने कंधे झुकाकर एक बार जोर लगाया, बस गाड़ी नाले के ऊपर थी।

किसान युवक के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और बोला "महाराज! आपने मुझे उबार लिया, नहीं तो सारी रात यहीं बैठना पड़ता।"

युवक ने हँसकर कहा, "अब मुझे कुछ इनाम देते हो?"

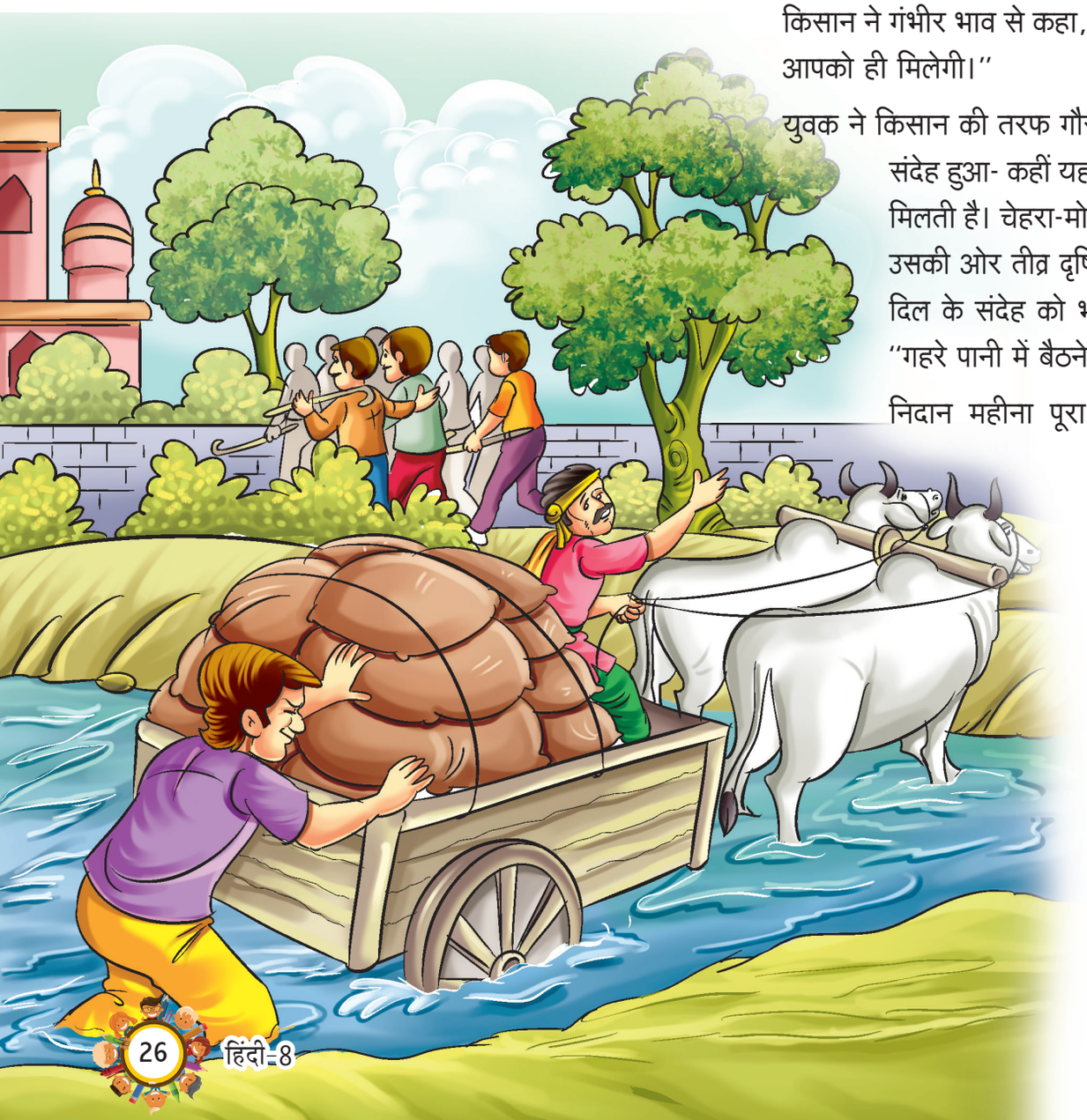

किसान ने गंभीर भाव से कहा, "नारायण चाहेंगे, तो दीवानी आपको ही मिलेगी।"

युवक ने किसान की तरफ गौर से देखा। उसके मन में एक संदेह हुआ- कहीं यह सुजानसिंह तो नहीं? आवाज मिलती है। चेहरा-मोहरा भी वही है। किसान ने भी उसकी ओर तीव्र दृष्टि से देखा। शायद वह उसके दिल के संदेह को भाँप गया। मुसकुराकर बोला, "गहरे पानी में बैठने से ही मोती मिलता है।"

निदान महीना पूरा हुआ। चुनाव का दिन आ पहुँचा। उम्मीदवार लोग प्रातःकाल से ही अपनी किस्मत का फैसला सुनने के लिए उत्सुक थे। दिन काटना पहाड़-सा हो गया। प्रत्येक के चेहरे पर आशा और निराशा के रंग आते थे। नहीं मालूम आज किसके नसीब जागेंगे, न जाने किस पर लक्ष्मी की कृपादृष्टि होगी? संध्या समय राजा साहब का दरबार सजाया गया,

शहर के रईस ओर धनाढ्य लोग, राजा के कर्मचारी और दरबारी तथा दीवानी के उम्मीदवार, सब रंग-बिरंगे, सज-धज बनाए दरबार में आ विराजे। उम्मीदवारों के कलेजे धड़क रहे थे।

तब सरदार सुजानसिंह ने खड़े होकर कहा- "दीवानी के उम्मीदवार महाशयो! मैंने आप लोगों को जो कुछ कष्ट दिया हो, उसके लिए क्षमा कीजिए। मुझे इस पद के लिए एक ऐसे पुरुष की आवश्यकता थी, जिसके हृदय में दया हो और साथ-ही-साथ आत्म-बल भी। हृदय वही है, जो उदार हो, आत्म-बल वही है, जो विपत्ति का वीरता के साथ सामना करे और इस रियासत के सौभाग्य से हमको ऐसा पुरुष मिल गया। ऐसे गुण वाले संसार में कम हैं, जो हैं वे कीर्ति और मान के शिखर पर बैठे हुए है। उन तक हमारी पहुँच ही नहीं। मैं रियासत को पंडित जानकीनाथ-सा दीवान पाने पर बधाई देता हूँ। रियासत के कर्मचारियों और रईसों ने पं0 जानकीनाथ की तरफ देखा और उम्मीदवारों के दल की आँखें भी उधर उठीं, मगर उन आँखों में सत्कार था और इन आँखों में ईर्ष्या।

सरदार साहब ने फिर फरमाया- "आप लोगों को यह स्वीकार करने में कोई आपत्ति न होगी कि जो पुरुष स्वयं जख्मी होने पर भी एक गरीब किसान की भरी हुई गाड़ी को दलदल से निकालकर नाले के ऊपर चढ़ाए, उसके हृदय मे साहस, आत्म-बल और उदारता का निवास है। ऐसा आदमी गरीबों को कभी न सताएगा। उसका संकल्प दृढ़ है, जो उसके चित्त को स्थिर रखेगा। वह चाहे स्वयं धोखा खा जाए, परंतु दया और धर्म के मार्ग से कभी न हटेगा।"

—प्रेमचंद

लेखक परिचय

'उपन्यास-सम्राट' मुशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, 1880 को वाराणसी के लमही नामक ग्राम में हुआ था। उनका वास्तविक नाम धनपत राय था। अंग्रेज सरकार के हस्तक्षेप के कारण उन्होंने पहले 'नवाबराय', फिर 'प्रेमचंद' के नाम से लिखना प्रारंभ किया। वे महात्मा गांधी के विचारों से बहुत प्रभावित थे। उनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं– 300 से अधिक कहानियाँ 'मानसरोवर' के आठ भागों में संकलित हैं। उनके द्वारा लिखित नाटक हैं- 'कर्बला', 'संग्राम', 'प्रेम की वेदी'। उनके प्रमुख उपन्यासों में 'सेवा सदन', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', 'गबन', 'गोदान', 'मंगलसूत्र' (अपूर्ण) शामिल हैं। प्रेमचंद के निबंध प्रसंग नाम से तीन भागों में प्रकाशित हुए हैं। उनकी मृत्यु 8 अक्टूबर, 1936 को हुई थी।

शब्द-अर्थ

दीनबंधु — दीन-दुखियों के सहायक
यशस्वी — सुप्रसिद्ध
योग्य — काबिल
सनद — डिग्री
जौहरी — पारखी, बहुमूल्य रत्न परखने वाला व्यापारी
मत्सर — द्वे, क्रोध
किस्मत — भाग्य
जख्मी — घायल
नेकनामी — प्रसिद्धि, यश, अच्छाई के नाम होना
सुयोग्य — सर्वथा योग्य
मंदाग्नि — पाचन शक्ति का कमजोर होना
पदच्युत — अपने पद से हटाया हुआ या बरखास्त किया हुआ
अपरेंटिस — सीखने के लिए काम करने वाला, शिक्षु, शागिर्द
उबार — बचाव करना
कृपादृष्टि — दयादृष्टि

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) सरदार सुजानसिंह किस रियासत के दीवान थे?

(ख) सरदार सुजानसिंह सेवानिवृत्त क्यों होना चाहते थे?

(ग) देवगढ़ में सभी उम्मीदवारों के आचार-व्यवहार पर कितने दिनों तक निगरानी रखी गई?

(घ) नए फैशन वाले उम्मीदवारों ने देवगढ़ में किस खेल का आयोजन किया?

(ङ) अनाज से भरी बैलगाड़ी हाँकने वाला बूढ़ा किसान कौन था?

लिखित

1. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) देवगढ़ रियासत के राजा साहब सरदार सुजानसिंह को सेवामुक्त करने के पक्ष में इसलिए नहीं थे, क्योंकि–

- ◯ सरदार सुजानसिंह वृद्ध हो गए थे।
- ◯ सरदार सुजानसिंह अनुभवशीलता और नीतिकुशल दीवान थे।
- ◯ देवगढ़ के लोग उनका सम्मान करते थे।
- ◯ वे राजा साहब के विश्वासपात्र थे।

(ख) देवगढ़ के लिए दीवान की आवश्यकता से संबंधित विज्ञापन ने सारे मुल्क में हलचल मचा दी, क्योंकि–

- ◯ सभी धर्मों के लोग इस पद के प्रत्याशी बन सकते थे।
- ◯ उम्मीदवारों के लिए अच्छा खिलाड़ी होना अनिवार्य था।
- ◯ इस ऊँचे पद के लिए सनद का कोई विशेष बंधन नहीं था।
- ◯ एक महीने तक उम्मीदवारों के आदर-सत्कार के प्रबंध का भार देवगढ़ की रियासत पर था।

(ग) अनाज से लदी बैलगाड़ी को नाले से बाहर निकालने में किसान की मदद किसने की?

- ◯ हॉकी खेलने वाले खिलाड़ियों ने
- ◯ गाँववालों ने
- ◯ रियासत के अन्य कर्मचारियों ने
- ◯ पंडित जानकीनाथ ने

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) देश के प्रसिद्ध समाचार-पत्रों में विज्ञापन किसने निकलवाया था और क्यों?

(ख) लोग देवगढ़ में रियासत के दीवान पद को प्राप्त करना भाग्य का खेल क्यों समझ रहे थे?

(ग) उम्मीदवार दिखावा क्यों कर रहे थे?

(घ) हॉकी के खेल मे हार-जीत का निर्णय क्यों न हो सका?

(ङ) 'खिलाड़ियों ने किसान की ओर देखा, मगर बंद आँखों से।' कथन का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।

(च) सरदार सुजानसिंह ने राजा साहब से क्या प्रार्थना की?

(छ) विज्ञापन ने सारे मुल्क में हलचल क्यों मचा दी?

(ज) 'मनुष्यों का वह बूढ़ा जौहरी आड़ मे बैठा देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा है?'

(i) बूढ़ा जौहरी और बगुला किसे कहा गया है?

(ii) सच्चे उम्मीदवार को ढूँढ़ने के लिए बूढ़े जौहरी ने क्या योजना बनाई?

(झ) 'गहरे पानी में बैठने से ही मोती मिलता है।'

(i) यह वाक्य किसने किससे कहा?

(ii) इस वाक्य में निहित अभिप्राय को स्पष्ट कीजिए।

(ञ) ''रियासत के सौभाग्य से हमको ऐसा पुरुष मिल गया है।''

सरदार सुजानसिंह को किन गुणों से संपन्न नए दीवान की आवश्यकता थी? देवगढ़ का नया दीवान किसे चुना गया?

(ट) 'आचरण एवं चरित्र की शुद्धता और कर्मठता से ही जीवन में ऊँचा पद और मान-सम्मान मिलता है।' क्या आप इस कथन से सहमत हैं?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्द-युग्मों के भेद लिखिए-

हृष्ट-पुष्ट	सजातीय शब्द-युग्म	हाँफते-हाँफते	पुनरुक्त शब्द-युग्म
रहन-सहन	_____	आदर-सत्कार	_____
आचार-विचार	_____	अपना-अपना	_____
धूम-धाम	_____	झूमते-झामते	_____

2. सर्वनाम- संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द 'सर्वनाम' कहलाते हैं। जैसे- उन्होंने गरीबों को अपनी कहानी सुनाई।

ऊपर लिखे वाक्य में रेखांकित शब्द 'उन्होंने' तथा 'अपनी' पाठ के अंतर्गत बाबा अब्दुल्ला (संज्ञा) के लिए प्रयुक्त किए गए हैं।

सर्वनाम के छह भेद होते हैं-

- पुरुषवाचक सर्वनाम
- निश्चयवाचक सर्वनाम
- अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- प्रश्नवाचक सर्वनाम
- संबंधवाचक सर्वनाम
- निजवाचक सर्वनाम

- **नीचे लिखे वाक्यों में सर्वनाम शब्दों को रेखांकित करते हुए उनके भेदों के नाम लिखिए-**

	सर्वनाम के भेद
(क) मैं बगदाद नगर में पैदा हुआ था।	_____
(ख) आप इतना धन लेकर क्या करेंगे?	_____
(ग) उसने अपने आप लकड़ियाँ एकत्र कीं।	_____

(घ) उसने अपनी झोली से कुछ निकाल कर आग में डाल दिया। _____

(ङ) अब्दुल्ला ने कहा,– ''मैंने जैसा किया, वैसा भोग रहा हूँ।'' _____

(च) वह मेरा बस्ता है। _____

3. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए–

(क) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए–

नगर में रहने वाला – _____

किसी पद के प्रत्याशी – _____

जिसे भुलाया न जा सके – _____

जिसे जीता न जा सके – _____

(ख) निम्नलिखित श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों से वाक्य बनाइए–

(i) अचार – (खाने की वस्तु) _____।

आचार – (चाल-चलन, व्यवहार) _____।

(ii) अपेक्षा – (तुलना में) _____।

उपेक्षा – (तिरस्कार, निरादर) _____।

(iii) दिन – (दिवस) _____।

दीन – (गरीब) _____।

(iv) योग्य – (लायक) _____।

योग – (जोड़, मेल) _____।

क्रियात्मक गतिविधि

- **प्रार्थना-सभा में हिंदी समाचार-पत्र के उस अंश को पढ़कर सुनाइए, जिसमें किसी गरीब, असहाय व्यक्ति की सहायता की गई हो।**
- **प्रेमचंद हिंदी के सुप्रसिद्ध कहानीकार थे। उनकी कहानी 'दो बैलों की कथा' पर टी० वी० धारावाहिक का निर्माण किया गया है। उनकी सी० डी० प्राप्त कर कक्षा के स्मार्ट बोर्ड पर दिखाइए।**
- **आर० के० नारायण के 'मालगुडी डेज' की टी० वी० पर दिखाई गई किसी प्रभावशाली कहानी को कक्षा में सुनाइए।**

लालच बुरी बला है

5

बाबा अब्दुल्ला ने कहा कि मैं इसी बगदाद नगर में पैदा हुआ था। मेरे माँ-बाप मर गए, तो उनका धन उत्तराधिकारी में मैंने पाया। वह धन इतना था कि उससे मैं जीवनभर आराम से रह सकता था, किंतु भोग-विलास में सारा धन शीघ्र ही उड़ा दिया। फिर मैंने जी-तोड़ परिश्रम कर धनार्जन किया और उससे अस्सी ऊँट खरीदे। मैं उन ऊँटों को किराए पर व्यापारियों को दिया करता था। उनके किराए से मुझे काफी लाभ हुआ।

एक बार हिंदुस्तान जाने वाले व्यापारियों का माल ऊँटों पर लादकर मैं बसरा ले गया। वहाँ माल को जहाजों पर चढ़ाकर और अपना किराया तथा अपने ऊँट लेकर बगदाद वापस जाने लगा। रास्ते में एक बड़ा-सा हरा-भरा मैदान देखकर मैंने ऊँटों के पाँव बाँधकर उन्हें चरने छोड़ दिया और खुद आराम करने लगा। इतने में बसरा से बगदाद को जाने वाला एक फकीर भी मेरे पास आ बैठा। मैंने भोजन निकाला और उसे भी साथ खाने को कहा। खाते-खाते हम लोग बातें भी करते जाते थे। उसने कहा, "तुम रात-दिन बेकार मेहनत करते हो। यहाँ से कुछ दूरी पर एक ऐसी जगह है, जहाँ अपार द्रव्य भरा पड़ा है। तुम इन अस्सी ऊँटों को बहुमूल्य रत्नों और अशर्फियों से लाद सकते हो और वह धन तुम्हारे जीवनभर के लिए काफी होगा।"

मैंने यह सुनकर उसे गले लगाया और यह जानना चाहा कि वह इससे कोई स्वार्थ सिद्ध तो नहीं करना चाहता है। मैंने उससे कहा, "तुम तो महात्मा हो, तुम्हे सांसारिक धन से क्या लेना देना? तुम मुझे वह जगह दिखाओं, तो मैं ऊँटों को रत्नादि से लाद लूँ। मैं वादा करता हूँ कि उनमें से एक ऊँट तुम्हें दे दूँगा।" मैंने कहने को तो कह दिया, किंतु मेरे मन में द्वंद होने लगा। कभी सोचता कि बेकार ही एक ऊँट उसे देने को कहा, कभी सोचता कि क्या हुआ, मेरे लिए उन्यासी ऊँट ही बहुत हैं। वह फकीर मेरे मन के द्वंद को समझ गया। उसने मुझे पाठ पढ़ाना चाहा और बोला, "एक ऊँट को लेकर मैं क्या करूँगा? मैं

तुम्हें इस शर्त पर वह जगह दिखाऊँगा कि तुम खजाने से लदे अपने ऊँटों में से आधे ऊँट मुझे दे दोगे। अब तुम्हारी मरजी है। तुम खुद ही सोच लो कि चालीस ऊँट क्या तुम्हारे लिए कम हैं?'' मैंने विवशता में उसकी बात स्वीकार कर ली। मैंने यह भी सोचा कि चालीस ऊँटों पर लादा गया धन ही मेरी कई पीढ़ियों के लिए काफी होगा। हम दोनों एक अन्य दिशा में चले। एक पहाड़ के तंग दर्रे से निकलकर हम लोग पहाड़ों के बीच एक खुले स्थान में पहुँचे। वह जगह बिल्कुल सुनसान थी। फ़कीर ने कहा, ''ऊँटों को यहीं बिठा दो और मेरे साथ आओ।'' मैं ऊँटों को बिठाकर उसके साथ गया। कुछ दूर जाकर फकीर ने सूखी लकड़ियाँ जमा करके जगमग पत्थर से आग निकाली और लकड़ियाँ को सुलगा दिया। आग जलने पर उसने अपनी झोली में से एक सुगंधित द्रव्य निकालकर आग में डाला। उसमें से धुएँ का एक जबरदस्त बादल उठा और वह एक ओर चलने लगा। कुछ दूर जाकर वह बादल फट गया और उसमें एक बड़ा टीला दिखाई दिया। जहाँ हम थे, वहाँ से टीले तक एक रास्ता भी बन गया। हम दोनों उसके पास पहुँचे, तो टीले में एक द्वार दिखाई दिया। द्वार से आगे बढ़ने पर एक बड़ी गुफा मिली, जिसमे जिन्नों का बनाया हुआ एक भव्य भवन दिखाई दिया।

वह भवन इतना भव्य था कि मनुष्य उसे बना ही नहीं सकते थे। हम लोग उसके अंदर गए, तो देखा कि उसमें असीम द्रव्य भरा हुआ था। अशर्फियों के एक ढेर को देखकर मैं उस पर ऐसे झपटा, जैसे किसी शिकार पर शेर झपटता है। मैंने ऊँटो की खुर्जियों में अशर्फियाँ भरनी शुरू की। फकीर भी द्रव्य-संग्रह करने लगा, किंतु वह केवल रत्नों को भर रहा था। उसने मुझे भी अशर्फियों को छोड़कर केवल रत्न उठाने को कहा। मैं भी ऐसा करने लगा। हम लोगों ने सारी खुर्जियाँ बहुमूल्य रत्नों से भर लीं। मैं बाहर जाने ही वाला था कि वह फकीर एक अन्य कमरे में गया और मैं भी उसके साथ चला गया। उसमें भाँति-भाँति स्वर्णनिर्मित वस्तुएँ रखी थीं। फकीर ने सोने की एक संदूकची खोली। उसमें से लकड़ी की एक डिबिया निकाली और उसे खोलकर देखा। उसमें एक प्रकार का मरहम रखा हुआ था। उसने डिबिया बंद करके अपनी जेब में रख ली। फिर उसने आग जलाकर उसमें सुगंधित द्रव्य डाला और मंत्र पढ़ा, जिससे वह गुफा एवं टीला सभी गायब हो गए, जो उसने मंत्र बल से पैदा किए थे। अब हम लोग उसी मैदान में आ गए जिसमें मेरे ऊँट बँधे थे।

हमने सारे ऊँटों को खुर्जियों से लादा और वादे के अनुसार आधे-आधे ऊँट बाँटकर फिर उस तंग दर्रे से निकले, जहाँ से होकर आए थे। बसरा और बगदाद के मार्ग पर पड़ने वाले मैदान में पहुँचकर मैं अपने चालीस ऊँट लेकर बगदाद की ओर चला और फकीर चालीस ऊँट लेकर बसरे की ओर रवाना हुआ। मैं कुछ ही कदम चला था कि शैतान ने मेरे मन में लोभ कर दिया और मैंने पीछे की ओर दौड़कर फकीर को आवाज दी। वह रुका तो मैंने कहा, ''साईं जी! आप तो भगवान के भक्त हैं। आप इतना धन लेकर क्या करेंगे?

आपको तो इससे भगवान की आराधना में कठिनाई ही होगी। आप अगर बुरा न मानें, तो मैं आपके हिस्से में से दस ऊँट ले लूँ। आप तो जानते ही हैं कि मेरे जैसे सांसारिक लोगों के लिए धन का महत्त्व होता है।'' फकीर इस पर मुस्कुराया और बोला, ''अच्छा, दस ऊँट और ले जाओ।''

जब फकीर ने अपनी इच्छा के बगैर हीला-हुज्जत किए दस ऊँट मुझे दे दिए, तो मुझे और लालच ने धर दबाया और मैंने सोचा कि इससे दस ऊँट और ले लूँ, इसे तो कोई फर्क पड़ना नहीं है। अतएव मैं उसके पास फिर गया और बोला, ''साईं जी! आप कहेंगे कि यह आदमी बार-बार परेशान कर रहा है, लेकिन मैं सोचता हूँ कि आप जैसे संत- महात्मा तीस ऊँटों को भी कैसे सँभालेंगे? इससे आपकी साधना-आराधना में बहुत विघ्न पड़ेगा। इनमें से दस ऊँट मुझे और दे दीजिए।'' फकीर ने फिर मुसकराकर कहा, ''तुम ठीक कहते हो, मेरे लिए बीस ऊँट ही काफी हैं। तुम दस ऊँट और ले लो।''

दस ऊँट और लेकर मैं चला, किंतु मुझ पर लालच का भूत बुरी तरह सवार हो गया था या यह समझों के वह फकीर की अपनी निगाहों और अपने व्यवहार से मेरे मन में लालच पैदा किए जा रहा था। मैंने अपने रास्ते से पलटकर पहले जैसी बातें कहकर और दस ऊँट उससे माँगे। उसने हँसकर यह बातें भी स्वीकार कर ली और दस ऊँट अपने पास रखकर दस ऊँट मुझे दे दिए, किंतु मैं अभागा इतने से भी संतुष्ट न हुआ। मैंने बाकी दस ऊँटों का विचार अपने मन से निकालना चाहा, किंतु मुझे उनका ध्यान बना रहा। मैं रास्ते से लौटकर एक बार फिर उस फकीर के पास गया और बड़ी मिन्नतें करके बाकी के ऊँट भी उससे माँगे। वह हँसकर बोला, ''भाई, तेरी तो नीयत ही नहीं भरती। अच्छा यह बाकी दस ऊँट भी ले जा, भगवान तेरा भला करें।''

सारे ऊँट पाकर भी मेरे मन का खोट न गया। मैंने उससे कहा, ''साईं जी! आपने इतनी कृपा की है, तो वह मरहम की डिबिया भी दे दीजिए, जो आपने जिन्नों के महल से उठाई थी।'' उसने कहा, ''मैं यह डिबिया नहीं दूँगा।'' अब मुझे उसका लालच हुआ। मैं फ़कीर से उसे देने के लिए हुज्जत करने लगा। मैंने मन में निश्चय कर लिया था कि यदि फकीर ने अपनी इच्छा से डिबिया नहीं दी, तो मैं जबरदस्ती करके उससे डिबिया ले लूँगा। मेरे मन की बात को जानकर फकीर ने वह डिबिया भी मुझे दे दी और कहा, ''तुम डिबिया जरूर ले लो, लेकिन यह जरूरी है कि तुम इस मरहम की विशेषता समझ लो। अगर तुम इसमें से थोड़ा-सा मरहम अपनी बाईं आँख में लगाओगे, तो तुम्हें सारे संसार के गुप्त कोश दिखाई देने लगेंगे। अगर तुमने इसे दाहिनी आँख में लगाया, तो तुम सदैव के लिए अपनी दोनों आँखों से अंधे हो जाओगे।''

मैंने कहा, ''साईं जी! आप तो इस मरहम के पूरे जानकार हैं। आप ही इसे मेरी आँख में लगा दें।'' फकीर ने मेरी आँख बंद की और थोड़ा-सा मरहम लेकर पलक के ऊपर लगा दिया। मरहम लगते ही वैसा ही हुआ, जैसा उस फकीर ने कहा था यानी दुनिया भर के गुप्त और भूमिगत धन-कोष मुझे दिखाई देने लगे। मैं लालच में अंधा तो हो ही रहा था। मैंने सोचा कि अभी और कई खजाने होंगे, जो नहीं दिखाई दे रहे हैं। मैंने दाहिनी आँख बंद की और फकीर से कहा, ''इस पर भी मरहम लगा दो ताकि बाकी खजाने भी मुझे दिखने लगें।'' फकीर ने कहा, ''ऐसी बात न करो, अगर दाहिनी आँख में मरहम लगा, तो तुम हमेशा के लिए अंधे हो जाओगे।''

मेरी अक्ल पर परदा पड़ा हुआ था। मैंने सोचा कि यह फकीर मुझे धोखा दे रहा है। यह भी संभव है कि दाहिनी आँख मे मरहम लग जाने से मुझे उस फकीर की शक्तियों के रहस्य मालूम हो जाएँ। वह फकीर बार-बार कहता रहा कि यह मूर्खता की जिद छोड़ो और मरहम को दाईं आँख में लगवाने की बात न करो, किंतु मैं यही समझता रहा कि वह स्वार्थवश ही मेरी दाईं आँख में मरहम नहीं लगा रहा है।

उसने मुझसे कहा, ''भाई, तू क्यों जिद कर रहा है? मैंने तेरा जितना लाभ कराया है, क्या उतनी ही हानि मेरे हाथ से उठाना चाहता है? मैं एक बार भलाई करके अब तेरे साथ बुराई क्यों करूँ? किंतु मैंने कहा, ''जैसे आपने अभी तक मेरी हर जिद

पूरी की, वैसे ही आखिरी जिद भी पूरी कर दीजिए। अगर इससे मेरी कोई हानि होगी, तो उसकी जिम्मेदारी मुझ पर ही होगी, आप पर नहीं।''

फकीर ने कहा, ''अच्छा, तू अपनी बरबादी चाहता है, तो वही सही। यह कहकर उसने मेरी दाहिनी आँख की पलक पर भी उस मरहम को लगा दिया। मरहम लगते ही मैं बिल्कुल अंधा हो गया। मुझे अपार दुख हुआ। मुझे अपनी मूर्खता भी याद न रही। मैंने फकीर को भला-बुरा कहना शुरू किया और कहा, ''अब यह सारा धन मेरे किस काम का? तुम मुझे अच्छा कर दो और अपने हिस्से के चालीस ऊँट लेकर चले जाओ।'' उसने कहा, ''अब कुछ नहीं हो सकता, मैंने तुम्हें पहले ही चेतावनी दी थी।''

मैंने उससे बहुत अनुनय-विनय की, तो वह बोला, ''मैंने तो तुम्हारी भलाई का भरसक प्रयत्न किया था और तुम्हें हमेशा सत्यपरामर्श ही दिया था, किंतु तुमने मेरी बातों को कपटपूर्ण समझा और गलत बातों के लिए जिद की। अब जो कुछ हो गया है, वह मुझसे ठीक नहीं हो सकता। तुम्हारी दृष्टि कभी वापिस नहीं लौटेगी।'' मैंने उससे गिड़गिड़ाकर कहा, ''साईं जी, मुझे अब कोई लालच नहीं रहा। आप शौक से सारी धन-संपदा और मेरे सभी अस्सी ऊँट ले जाइए, सिर्फ मेरी आँखों की ज्योति वापस दिला दीजिए।'' उसने मेरी बात का कोई उत्तर नहीं दिया, बल्कि सारे ऊँट और उन पद लदी हुई संपत्ति लेकर वह बसरा की ओर चल दिया। ऊँटों के चलने की आवाज सुनकर मैं चिल्लाया, ''साईं जी, इतनी कृपा तो कीजिए कि इस जंगल में इसी दशा में न छोड़िए। अपने साथ मुझे भी ले चलिए। रास्ते मे कोई व्यापारी बगदाद जाता हुआ मिलेगा, तो मैं उसके साथ हो लूँगा।'' किंतु उसने मेरी बात न सुनी और चला गया। अब मैं अँधेरे में इधर-उधर भटकने लगा। मुझे मार्ग का भी ज्ञान न था कि पैदल ही चल देता। अंत में थककर गिर गया और भूख-प्यास से तड़पने लगा।

सौभाग्य से दूसरे ही दिन व्यापारियों का एक दल बसरा से बगदाद को जाते हुए उस मार्ग से निकला। वे लोग मेरी हालत पर तरस खाकर मुझे बगदाद ले आए। अब मेरे सामने इसके अलावा कोई रास्ता नहीं रहा कि मैं भीख माँगकर पेट पालूँ। मुझे अपनी लालच और मूर्खता पर इतना खेद हुआ कि मैंने कसम खा ली कि किसी से भीख नहीं लूँगा।

उसकी दर्द भरी कहानी सुनकर खलीफा ने कहा, ''तुम अपनी हालत के लिए खुद जिम्मेदार हो, अल्लाह तुम्हें माफ करे। अब तुम जाकर सारी भिक्षुक-मंडली को अपना वृतांत बताओ ताकि सभी को मालूम हो कि लालच का क्या फल होता है। अब तुम भीख माँगना छोड़ दो। मेरे खजाने से तुम्हें हर रोज पाँच रुपये मिला करेंगे और यह व्यवस्था तुम्हारे जीवनभर के लिए होगी।''

बाबा अब्दुल्ला ने जमीन से सिर लगाकर कहा, ''सरकार के आदेश को मैं खुशी से पालन करूँगा।''

—'अलिफ लैला से'

शब्द-अर्थ

उत्तराधिकार — विरासत
विवशता — मजबूरी
जिन्न — भूत
हुज्जत — तर्क-वितर्क या कहा-सुनी (तकरार)
दर्रा — पहाड़ों के बीच सँकरा दुर्गम रास्ता
द्रव्य — खजाना
टीला — छोटी पहाड़ी
खुर्जियाँ — पशुओं की पीठ पर सामान रखने वाला बड़ा थैला
असंख्य — अनगिनत

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) बाबा अब्दुल्ला किसे अपनी कहानी सुना रहे थे?
(ख) बाबा अब्दुल्ला के पास कितने ऊँट थे?
(ग) बसरा से लौटते समय उन्हें रास्ते में कौन मिला?
(घ) जिन्नों के बनाए भव्य भवन में उन्होंने क्या देखा?
(ङ) मरहम को दाहिनी आँख की पलक पर लगाने का क्या परिणाम हुआ?

लिखित

1. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) फकीर किस शर्त पर खजाना दिखाने को तैयार हुआ?

- ◯ रत्नों से लदे एक ऊँट पाने पर
- ◯ रत्नों से लदे दस ऊँट पाने पर
- ◯ रत्नों से लदे चालीस ऊँट पाने पर
- ◯ अपने किसी भी काम में दखल न देने पर

(ख) फकीर खुर्जियों में क्या भर रहा था?

- ◯ केवल स्वर्ण निर्मित वस्तुओं को
- ◯ केवल रत्नों को
- ◯ केवल अशर्फियों को
- ◯ सोने की संदूकचियों को

(ग) बाबा अब्दुल्ला ने अंत में कितने ऊँट फकीर से ले लिए?

- ◯ रत्नों से लदे दस ऊँट
- ◯ रत्नों से लदे चालीस ऊँट
- ◯ रत्नों से लदे पचास ऊँट
- ◯ रत्नों से लदे सत्तर ऊँट

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) बाबा अब्दुल्ला ने उत्तराधिकार में मिले धन का क्या किया?
(ख) फकीर ने अब्दुल्ला को रातों-रात अमीर बनने का क्या रास्ता सुझाया?

(ग) खजाने से भरे भवन को देखकर अब्दुल्ला की क्या दशा हुई?

(घ) अब्दुल्ला के अंधे हो जाने पर फकीर ने क्या किया?

(ङ) मनुष्य अपने लालच पर नियंत्रण क्यों नहीं रख पाता? कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(च) अब्दुल्ला की क्या विवशता थी, जिससे उसने फकीर की शर्त स्वीकार कर ली?

(छ) खजाने से भरा महल कैसे प्रकट हुआ?

(ज) खजाने के भवन से बाहर निकलने के पहले फकीर दूसरे कमरे में क्यों गया?

(झ) तंग दर्रे से बाहर निकलकर अब्दुल्ला क्या सोचने लगा?

(ञ) फकीर ने मरहम की डिबिया देते हुए अब्दुल्ला को क्या हिदायत दी?

(ट) खलीफा ने अब्दुल्ला को क्या आदेश दिया?

(ठ) इस कहानी से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

भाषा-ज्ञान

1. शब्द-युग्म- हिंदी में योजक चिह्न लगाकर कुछ शब्द जोड़े में लिखे जाते हैं। इन शब्दों को शब्द-युग्म कहते हैं। इन शब्द-युग्मों का प्रयोग करने से अर्थ में रोचकता आ जाती है। जैसे

(क) सार्थक-निरर्थक शब्द-युग्म	—	रोटी-वोटी
(ख) विलोम शब्द-युग्म	—	रात-दिन, लेना-देना
(ग) पुनरुक्त शब्द-युग्म	—	बार-बार, भाँति-भाँति
(घ) सजातीय शब्द-युग्म	—	खाते-पीते
(ङ) निरर्थक शब्द-युग्म	—	अंट-संट
(च) परसर्ग युक्त शब्द-युग्म	—	ज्यादा-से-ज्यादा

- **निम्नलिखित शब्दों के संज्ञा-भेद लिखिए-**

(क) उम्मीदवार	_____	(ख) महाशय	_____
(ग) सुजानसिंह	_____	(घ) गाड़ी	_____
(ङ) देवगढ़	_____	(च) खिलाड़ी	_____
(छ) रियासत	_____	(ज) वीरता	_____

2. वाक्य के अंग- वाक्य के दो अंग होते हैं। वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाता है, उसे उद्देश्य और उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं

जैसे- मेरे मित्र श्याम ने हॉकी-मैच जीता।

इस वाक्य में-

उद्देश्य- मेरे मित्र श्याम ने विधेय- हॉकी-मैच जीता।

- **नीचे लिखे वाक्यों में से उद्देश्य और विधेय छाँटकर लिखिए-**

(क) चालीस ऊँटों का धन मेरे लिए पर्याप्त होगा।

(i) उद्देश्य _____

(ii) विधेय _____

(ख) रास्ते में चलते हुए मैं थककर पेड़ की छाँव में बैठ गया।

(i) उद्देश्य _____

(ii) विधेय _____

(ग) तुम दस ऊँट और ले लो।

(i) उद्देश्य _____

(ii) विधेय _____

3. रचना के आधार पर वाक्य भेद- रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं-

(क) सरल/साधारण वाक्य- इन वाक्यों में एक मुख्य क्रिया का प्रयोग किया जात है तथा समान्यतया योजक शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता है। जैसे- मैंने फकीर को गले लगाया।

(ख) संयुक्त वाक्य- जहाँ दो या अधिक सरल वाक्य 'और', 'अथवा', 'किंतु', 'परंतु', 'इसलिए' आदि योजक शब्दों से जुड़े होते हैं, वे संयुक्त वाक्य कहलाते हैं। जैसे-

(i) मैंने कह तो दिया, परंतु मेरे मन में द्वंद्व होने लगा।

(ii) उसने आग लगाई और लकड़ियों को सुलगा दिया।

(ग) मिश्र वाक्य- जिन वाक्यों में एक प्रधान उपवाक्य और दूसरे आश्रित उपवाक्य होते हैं तथा ये परस्पर 'जो-यदि', 'जब-तब', 'जैसे-तैसे', 'यद्यपि-तथापि' आदि अव्ययों से जुड़े होते हैं, मिश्र वाक्य कहलाते हैं। जैसे-

(i) मैं बाहर जाने वाला था कि फकीर एक दूसरे कमरे में चला गया।

(ii) उसने मंत्र पढ़ा, जिससे महल गायब हो गया।

- **निम्नलिखित वाक्यों में रचना के आधार पर वाक्य भेद पहचानकर लिखिए-**

(क) इससे आपकी साधना में बहुत विघ्न पड़ेगा। _____

(ख) शैतान ने मेरे मन में लोभ भी दिया और मैं फकीर की ओर दौड़ा। _____

(ग) साईं जी! वह डिबिया भी दे दीजिए, जो आपने जिन्नों के महल से उठाई थी। _____

(घ) मैंने सोचा कि यह फकीर मुझे धोखा दे रहा है। _____

क्रियात्मक गतिविधि

- **लियो टॉलस्टॉय की कहानी 'कितनी जमीन' पढ़िए। कितनी जमीन के नायक 'दीना' और 'लालच बुरी बला है।'**
- **दूरदर्शन द्वारा समय-समय पर 'अरेबियन नाइट्स' की कहानियाँ बच्चों के कार्यक्रम में दिखाई जाती हैं। ये कहानियाँ टी० वी० धारावाहिक के रूप में भी प्रसारित की जाती है। इन कहानियों की सी० डी० प्राप्त करके कक्षा में स्मार्ट बोर्ड पर दिखाइए।**

आकाश में अकेले

6

14 दिसंबर, 1971 को श्रीनगर हवाई अड्ड पर दुश्मन के छह विमानों ने एक सात आक्रमण कर दिया। उनका ध्येय था हमारे विमानों को खड़ी हालत में ही ध्वस्त कर देना। जितना अधिक उतना बेहतर। इसलिए वे एक बार डाइव मारकर गोलियों और रॉकेटों से प्रहार करने के बाद फिर ऊपर चढ़, चक्कर लगाकर पुनः डाइव मारते। उन्होंने यही क्रम चालू रखा, जिससे हमारे विमानो को ज़्यादा-से-ज़्यादा नुकसान पहुँचे।

उस समय फ़्लाइंग ऑफ़िसर निर्मलजीत सिंह सेखों हवाई अड्डे पर तैयारी की हालत में थे। उस स्थिति में ऊपर कैसे उड़ते? ऐसे समय में विमान हवाई-पट्टी के आसपास 'हैंगरों' में ही सुरक्षित माने जाते हैं। यदि उन्हें हैंगरो से बाहर आकर उड़ान भरनी हो, तो वह शत्रु के आक्रमण के पहले संभव है या उसकी समाप्ति के पश्चात, परंतु हमले के दौरान कदापि नहीं। हमले के दौरान ऐसा करना आत्मघात के सदृश माना जाता है। कारण यह है कि हवाई जहाज़ बटन दबाते ही उड़ान नहीं भर सकता। हैंगर से बाहर निकालकर, पहले उसकी 'टैक्सी' (धीमी गति से मोटर की तरह चलते हुए करते हुए उसे हवाई पट्टी के एक कोने तक पहुँचाना पड़ता है। वहाँ पहुँच जाने के बाद उसे वहीं खड़े रखकर, पीछे की ओर मोड़ना पड़ता है। फिर रनवे की ओर मुँह करके खड़ा करना होता है। फिर उसी स्थिति में खड़े-खड़े जहाज़ के ईंधन को स्पीड दी जाती है। उचित स्पीड मिल जाने पर विमान रनवे पर ही सरकना शुरू होता है। फिर गति पकड़ता हुआ अंततः हवा में उड़ान भरता है।

हवाई अड्डे पर शत्रु के विमानों का हमला अकस्मात हुआ। हमारा रडार पूर्व चेतावनी नहीं दे पाया। हमले का पहला झपट्टा मारकर शत्रु के विमान ऊपर हो लिए। उसी समय फ़्लाइंग ऑफ़िसर सेखों दौड़कर अपने नेट में जा बैठे। उन्होंने शत्रु के विमानों के दूसरे झपट्टे का इंतजार किया। थोड़ी ही देर में वे फिर आए और रॉकेट छोड़कर, गोलियों की झड़ी लगाकर, फिर ऊपर चढ़ गए। फ़्लाइंग ऑफ़िसर सेखों ने तब तक अपना हिसाब लगाकर इंजन स्टार्ट कर दिया था।

दुश्मन के फड़फड़ाते हुए विमानों के ऊपर से गुजरते ही उन्होंने नेट को तेज़ी से हवाई पट्टी के कोने तक ले जाकर फुरती के साथ मोड़ा। कुछ सेकेंड बाद उनका विमान पट्टी पर सनसनाता नज़र आया। यह क्या? सब देखने वाले चौंके!

दुश्मन के छह आधुनिक विमान सिर पर मँडरा रहे थे और नेट जैसे पुराने ढर्रे के विमान में बैठा एक अकेला जाँबाज उनसे लोहा लेने ऊपर जा चढ़ा। ऐसी हिम्मत तो आज तक किसी ने नहीं दिखाई थी। ऐसा जोखिम भरा काम कोई विराला रणबाँकुरा ही कर सकता है।

अब आकाश में हवाई जहाज़ों के बीच संघातक युद्ध छिड़ गया। हमारे एक नेट के पीछे दुश्मन के छह जहाज़ लगे थे। इसके पहले कि वे कुछ कर पाएँ, फ़्लाइंग ऑफ़िसर सेखों ने एक विमान को निशाना बना उस पर अपनी तोप दाग दी। गोला ठीक बीचों-बीच निशाने पर लगा। विमान वहीं दो टुकड़े होकर ढह गया। फिर अपने नेट को बड़े कौशल के साथ निशाना लगाने की दिशा में लाकर, एक गोला और दागा। इससे दुश्मन के एक और विमान में आग लग गई। आग और धुएँ के गुबार छोड़ता वह विमान रजौरी की ओर भागता देखा गया।

अब रह गए दुश्मन के चार विमान और हमारा एक अकेला अलबेला। चाहते तो फ़्लाइंग ऑफ़िसर सेखों अपने विमान को उनकी पकड़ के बाहर ले जा सकते थे, पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। शत्रु के विमानों के साथ और दो-दो हाथ करने के लिए वे वहीं अड़े रहे। अब चारों पाकिस्तानी विमान आपस में तालमेल बना, इकट्ठे होकर हमारे नेट पर आ झपटे। नेट मुड़ने में तेज़ था, मगर विपक्षी विमानों की सिधाई के रुख में ऊपर चढ़ने की क्षमता कहीं अधिक थी।

विमान-युद्ध वृक्षों की फुनगियों की ऊँचाई पर होने लगा। आखिर, चार साइबर जेट विमानों के घेरे में आया एक अकेला नेट और क्या कर पाता? कितनी देर खैर मनाता?

दुश्मन के एक गोले ने नेट को ध्वस्त कर दिया और अपने प्यारे नेट विमान के साथ वीरगति को प्राप्त हुए फ़्लाइंग ऑफ़िसर सेखों। केवल छब्बीस साल की उम्र में।

फ़्लाइंग ऑफ़िर सेखों के नेट को नष्ट करते ही दुश्मन के चारों विमान तेज़ी से वापस सीमा की ओर मुड़ गए। उन्होंने अब न हवाई अड्डे पर आक्रमण किया, न श्रीनगर के अन्य किसी स्थल पर। फ़्लाइंग ऑफ़िसर सेखों के आत्मबलिदान ने दुश्मन को वहीं थाम दिया, साथ ही उसके दो विमान चकनाचूर कर दिए।

रणभूमि में असाधारण वीरता के साथ आत्मबलिदान करते हुए वीरगति पाने वाले फ़्लाइंग ऑफ़िसर निर्मलजीत सिंह सेखों मरणोपरांत सशस्त्र सेनाओं के उच्चतम वीरता पदक 'परमवीर चक्र' से अलंकृत हुए। यह वायुसेना को मिला प्रथम 'परमवीर चक्र' है।

–मेज़र जनरल सूरजप्रकाश भाटिया

शब्द-अर्थ

आक्रमण — प्रहार, हमला
ध्वस्त — विनष्ट/तबाह
कदापि नहीं — कभी नहीं
सदृश — समान
चेतावनी — प्रबोधन
जोखिम — खतरा
रणबाँकुरा — योद्धा
विपक्ष — प्रतिद्वंद्वी
मरणोपरांत — मृत्यु के बाद
ध्येय — लक्ष्य
हैंगर — विमान–गृह
आत्मघात — आत्महत्या करना
अकस्मात — अचानक
आधुनिक — नवीन
विरला — दुर्लभ
संघातक — घातक
वीरगति — युद्ध करते समय मृत्यु
अलंकृत — सम्मानित

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) पहले झपट्टे के बाद फ़्लाइंग ऑफ़िसर सेखों कहाँ बैठ गए?

(ख) हमले के दौरान क्या करना आत्मघात सदृश था?

(ग) दुश्मन के कितने आधुनिक विमान सिर पर मँडरा रहे थे?

(घ) फ़्लाइंग ऑफ़िसर सेखों को परमवीर चक्र से क्यों अलंकृत किया गया?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) हवाई अड्डे पर शत्रु के कितने विमानों का हमला हुआ?

☐ छह ☐ दस ☐ बारह ☐ बीस

(ख) हवाई हमले के दौरान विमान को हैंगर से निकालकर उड़ाना क्या माना जाता है?

☐ पागलपन ☐ आत्मघात ☐ देशद्रोह ☐ कायरता

(ग) मरणोपरांत सेखों को किस पदक से पुरस्कृत किया गया?

☐ भारत भूषण ☐ पद्म भूषण ☐ परमवीर चक्र ☐ नोबेल पुरस्कार

(घ) फ़्लाइंग ऑफ़िसर किस विमान में थे?

☐ साइबन जेट ☐ साइबर कैट ☐ नेट ☐ कनेक्ट

2. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(क) ''ऐसी हिम्मत तो आज तक किसी ने नहीं दिखाई थी।'' यहाँ किस हिम्मत की बात की गई है?

(ख) आकाश में हवाईजहाज़ों के बीच हुए संघातक युद्ध का वर्णन कीजिए?

(ग) ''फ़्लाइंग ऑफ़िसर सेखों के आत्मबलिदान ने दुश्मन को वहीं थाम दिया।'' इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

(घ) परमवीर चक्र के बारे में लिखिए।

(ङ) फ़्लाइंग ऑफ़िसर सेखों का चरित्र-चित्रण कीजिए।

भाषा-ज्ञान

1. नीचे दिए वाक्य पढ़िए–

(क) विमान रनवे पर सरकना शुरू होता है। (ऊपर)

(ख) फ़्लाइग ऑफ़िसर सेखों अपना विमान उनकी पकड़ से बाहर ले जा सकते थे पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। (किंतु)

(ग) हवाई जहाज़ के पर उड़ान भरने लगे। (पंख)

- दिए गए तीनों वाक्यों में 'पर' का प्रयोग अलग-अलग उद्देश्यों से हुआ। आप भी 'पर' का प्रयोग करते हुए ऐसे तीन वाक्य बनाइए, जिनमें अलग-अलग उद्देश्यों के लिए 'पर' का प्रयोग हुआ हो।

_____

_____

_____

2. दिए गए शब्दों में कुछ और शब्द जोड़कर यौगिक शब्द बनाइए।

(क) वायु + _____ = _____
वायु + _____ = _____
वायु + _____ = _____

(ख) आत्म + _____ = _____
आत्म + _____ = _____
आत्म + _____ = _____

(ग) युद्ध + _____ = _____
युद्ध + _____ = _____
युद्ध + _____ = _____

(घ) कला + _____ = _____
कला + _____ = _____
कला + _____ = _____

3. निम्नलिखित वाक्यों में से उद्देश्य तथा विधेय छाँटिए।

(क) दुश्मन के छह आधुनिक विमान सिर पर मँडरा रहे थे।
उद्देश्य – _____
विधेय – _____

(ख) निर्मलजीत सिंह सेखों हवाई अड्डे पर तैयारी की हालत में थे।
उद्देश्य – _____
विधेय – _____

(ग) फ़्लाइंग ऑफ़िसर ने इंजन स्टार्ट कर दिया।
उद्देश्य – _____
विधेय – _____

4. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(क) कमर कसना – _____
_____

(ख) लोहा लेना – _____
_____

(ग) वीरगति को प्राप्त होना – _____
_____

(घ) हवा से बातें करना – _____
_____

(ङ) दाँत खट्टे करना – _____

_____

(च) आकाश से बातें करना – _____

_____

5. 'ऋ' की मात्रा तथा 'र' के चिह्नों वाले चार-चार शब्द सोचकर लिखिए।

_____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

क्रियात्मक गतिविधि

- जल सेना, थल सेना और वायु सेना पर एक प्रस्तुतीकरण बनाइए।
- वीरता के लिए मिलने वाले पुरस्कारों की सूची बनाइए।
- विभिन्न लड़ाकू विमानों के चित्र एकत्र करके परियोजना कॉपी में लगाइए।
- ''जब सीधी उँगली से घी न निकले तो उँगली टेढ़ी कर लेनी चाहिए।'' इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं?
- कारगिल युद्ध का वर्णन इंटरनेट से पढ़कर डायरी में लिखिए।
- 'वीरों का कैसा हो वसंत' कविता पढ़िए।
- 'बॉर्डर' तथा 'एल० ओ०सी०' जैसी देशभक्ति फ़िल्म देखिए और प्रेरणा ग्रहण कीजिए।
- 'कुछ भी बन बस कायर मत बन' विषय पर परिचर्चा का आयोजन कीजिए।

७ भारत माता

भारत माता
ग्राम-वासिनी!

खेतों में फैला है श्यामल,
धूल भरा फैला-सा अंचल,
गंगा-यमुना में आँसू-जल,
मिट्टी की प्रतिमा
उदासिनी !

दैन्य जड़ित, अपलक नत चितवन,
अधरों में चिर नीरव रोदन,
युग-युग के तम से, विषण्ण मन,
वह अपने घर में
प्रवासिनी!

तीस कोटि सन्तान नग्न तन,
अर्ध, क्षुधित शोषित निर्वस्त्र जन,
मूढ़, असभ्य, अशिक्षित, निर्धन,
नत मस्तक, तरु-तल
निवासिनी!

स्वर्ण शस्य पर पद-तल लुण्ठित,
धरती-सा सहिष्णु मन कुण्ठित
क्रंदन कंपित अधर मौन स्मित,
राहु ग्रसित!
शरदेन्दु हासिनी!

चिंतित भृकुटि क्षितिज तिमिरांकित,
नमित नयन-नभ वाष्पाच्छादित,
आननश्री छाया-शशि उपमित,

ज्ञान मूढ़
गीता प्रकाशिनी!
सफल आज उसका तप संयम,
पिला अहिंसा स्तन्य सुधोपम,
हरती जन-मन भय, भव-तम-भ्रम,
जन-जननी
जीवन विकासिनी!

—सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

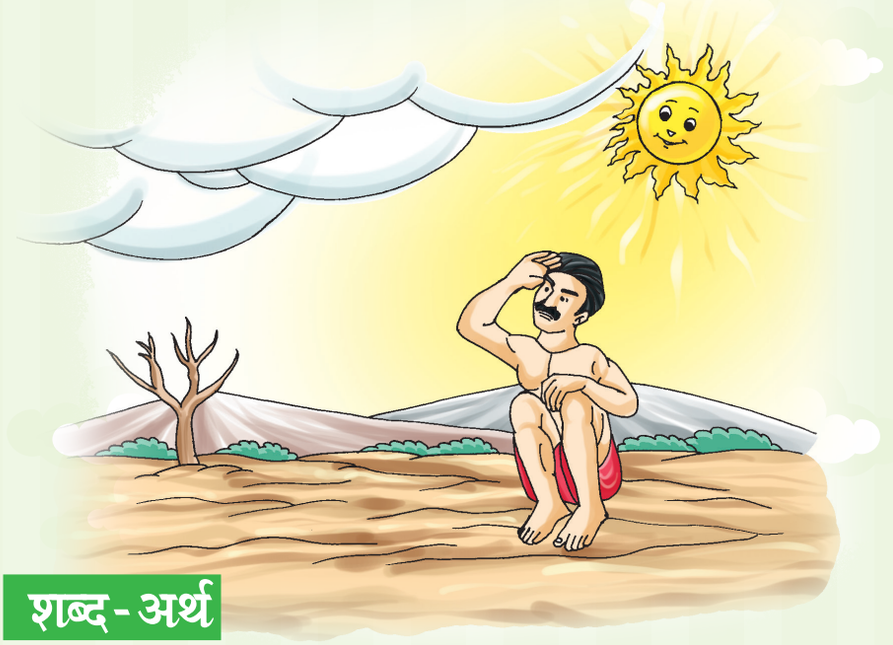

शब्द-अर्थ

ग्राम-वासिनी — गाँवों में रहने वाली,
अपलक — पलक झपके बिना, लगातार,
नीरव — शब्द रहित,
प्रवासिनी — जिसे उसके देश से निकाला गया हो,
निर्वस्त्र — वस्त्र रहित,
लुण्ठित — कुचला हुआ,
क्रन्दन — रुदन, रोना,
अधर — होंठ,
आनन — मुख,
क्षितिज तिमिरांकित — अंधकारमय क्षितिज,
छाया-शशि — छाया पड़ा हुआ चन्द्रमा, जिस चन्द्रमा पर छाया पड़ी हो,
श्री — शोभा,
स्तन्य — स्तन से निकलने वाली, स्तन से उत्पन्न,
भव-तम-भ्रम — संसार का भ्रम रूपी अंधकार,
दैन्य — गरीबी, दीनता,
चितवन — दृष्टि,
विषण्ण — दु:खी,
क्षुधित — भूखा,
शस्य — धन-धान्य,
सहिष्णु — सहनशील,
मौन स्मित — मुस्कराहट से रहित,
शरदेन्दु हासिनी — शरद्काल के चन्द्रमा के समान हँसी वाली,
नभ वाष्पाच्छादित — जल की बूँदों से भरा हुआ आकाश,
ज्ञान मूढ़ — ज्ञान रहित,
गीता प्रकाशिनी — गीता के ज्ञान का प्रकाश देने वाली,
सुधोपम — अमृत के समान,
विकासिनी — बढ़ाने वाली, जीवनदायिनी ।

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) जन-जननी कौन है?

(ख) भारत माता को कवि ने 'ग्राम-वासिनी' क्यों कहा है?

(ग) किसकी आँखें जल की बूँदों से भरी हैं; क्यों?

(घ) भारत माता को कवि ने उदास रूप में चित्रित क्यों किया है?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) भारत कहाँ बसता है?

☐ गाँवों में ☐ शहरों में ☐ नदियों में

(ख) गीता का प्रकाश जगत को किसने दिया है?

☐ श्री राम ने ☐ भगवान विष्णु ने ☐ श्री कृष्ण ने

(ग) अहिंसा का महत्त्व हमें किसने बताया?

☐ चंद्रशेखर आजाद ☐ महात्मा गाँधी ☐ रानी दुर्गावती

(घ) खेतों से हमे क्या मिलता है?

☐ अनाज ☐ रुपया–पैसा ☐ सोना–चाँदी

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) कवि ने भारत माता को 'जीवन विकासिनी' क्यों कहा है?

(ख) भारत माता 'तरु–तल निवासिनी' कैसे है?

(ग) कवि ने यह क्यों कहा है कि उसे अपने घर से 'देश निकाला–सा' मिला हुआ है?

(घ) कवि ने देश को सब कुछ उत्पन्न होने, धन–धान्य से पूर्ण होने पर भी अन्न, वस्त्र तथा भूख से पीड़ित क्यों कहा है?

(ङ) भारत माता को कौन–सा अमृत मिल गया है कि कवि अन्तिम पद में आशान्वित हो उठा है?

3. निम्नलिखित पदों का अर्थ लिखिए–

(क) "खेतों में फैला है श्यामल,
धूल भरा फैला-सा अंचल,
गंगा-यमुना में आँसू-जल,
मिट्टी की प्रतिमा उदासिनि !"

(ख) तीस कोटि सन्तान नग्न-तन,
अर्ध, क्षुधित शोषित निर्वस्त्र जन,
मूढ़, असभ्य, अशिक्षित, निर्धन,
नत मस्तक, तरु-तल
निवासिनी!

(ग) सफल आज उसका तप संयम,
पिला अहिंसा स्तन्य सुधोपम,
हरती जन-मन भय, भव-तम-भ्रम,
जन-जननी
जीवन विकासिनी!

भाषा-ज्ञान

- **निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए-**

(क) जो हिंसा न करे। _____

(ख) जो हिंसा करे। _____

(ग) जो पढ़ा-लिखा न हो। _____

(घ) शहर में रहने वाला। _____

(ङ) खेती करने वाला। _____

क्रियात्मक गतिविधि

- **कवि ने भारतमाता को 'गीता प्रकाशिनी' कहा है। वह ज्ञान किसने, किसको, किस समय और कहाँ दिया था? पता करके अभ्यास-पुस्तिका में लिखिए।**
- **अध्यापक से कवि निराला की जीवनी के विषय में पूछिए तथा उनके काव्य के विषय में ज्ञान प्राप्त कीजिए।**
- **सामने बने चित्र के आधार पर चार पंक्तियों की कविता लिखिए।**

प्रकाश पुञ्ज

(केवल पठन के लिए)

डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के जन्मदिन को प्रतिवर्ष 5 सितंबर को 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाया जाता है। भारतवर्ष के दूसरे राष्ट्रपति डॉ० राधाकृष्णन् महान शिक्षक थे और उन्हें अपने शिक्षक होने पर गर्व था। जब वे राष्ट्रपति थे, तब उन्होंने अपने जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने की इच्छा जताई थी। तब से ही यह दिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

इनका जन्म 5 सितंबर, 1889 ई० में तमिलनाडु के तिरुतानी नामक गाँव में हुआ था। सन् 1905 ई० में उन्होंने चेन्नई के क्रिश्चियन कॉलेज से बी० ए० और फिर एम० ए० की शिक्षा ग्रहण की। सन् 1909 ई० में चेन्नई के एक कॉलेज में दर्शनशास्त्र के अध्यापक बन गए। धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए वे आंध्र विश्वविद्यालय और काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति और भारत के उपराट्रपति पद तक पहुँचे। इनकी मृत्यु 2 जून, 1975 ई० में हुई।

सन् 1954 ई० में भारतरत्न से सम्मानित डॉ० राधाकृष्णन् पहले ऐसे तीन व्यक्तियों में सम्मिलित थे, जिन्हें भारत रत्न दिया गया।

विश्व के जाने-माने वैज्ञानिकों में माने जाने वाले डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम का नाम विश्व-भर में आदर के साथ लिया जाता है। इनका जन्म 15 सितंबर, 1931 ई० में हुआ था। डॉ० कलाम को प्रक्षेपास्त्र के पितामह के रूप में जाना जाता है। हम भारतीयों के लिए यह बड़े गर्व की बात है कि हमारा देश वर्तमान में अंतरिक्ष और प्रक्षेपास्त्र के क्षेत्र में लगातार नित नई ऊँचाईयों को छू रहा है। डॉ० कलाम दिखने व व्यवहार में साधारण और धार्मिक प्रवृत्ति के थे।

राष्ट्रपति पद को सुशोभित करने से पूर्व डॉ० कलाम 'पद्मभूषण', 'पद्म-विभूषण' तथा 'भारत रत्न' से सम्मानित किए जा चुके थे। विज्ञान के क्षेत्र में इनकी उल्लेखनीय सेवाओं के कारण इन्हें 25 नवंबर, 1999 ई० को भारत सरकार का वैज्ञानिक सलाहकार नियुक्त किया गया था। सन् 2001 ई० तक डॉ० कलाम इस पद पर रहे। 25 जुलाई, 2002 को इन्हें भारत का बारहवाँ राष्ट्रपति नियुक्त किया गया। इनका निधन अभी हाल ही में 27 जुलाई, 2015 ई० को शिलाँग (मेघालय) में हुआ।

मदर टेरेसा का जन्म 26 अगस्त, 1910 ई० में हुआ था। इनका बचपन का नाम एग्नेस बोहाझिद्र था। इनके माता-पिता धार्मिक विचारों के थे। अठारह वर्ष की आयु में इन्होंने नन बनने का निर्णय लिया। ये आयरलैंड जाकर लाइटो ननों के केंद्र में शामिल हो गईं। वहाँ से इन्हें भारत भेज गया। सन् 1929 ई० में ये लोरटो एटेली स्कूल में अध्यापिका बनने कोलकाता पहुँची। अपनी योग्यता, कार्यनिष्ठा तथा सेवाभाव के कारण कुछ ही दिनों बाद इन्हें स्कूल की प्रधानाचार्य बना दिया गया।

10 दिसंबर, 1946 ई० में इन्होंने अपने मन की आवाज़ को सुनकर स्कूल छोड़ दिया। सन् 1950 ई० में इन्होंने 'मिशनरीज़ ऑफ़ चैरिटी' की स्थापना की। इन्होंने पीड़ितों की सेवा करने के लिए 'निर्मल हृदय' नामक एक धर्मशाला की स्थापना की। विश्व के करीब 120 देशों में 'निर्मल हृदय' की शाखाएँ आज भी काम कर रही हैं। इस संस्था के तहत वर्तमान में 169 शिक्षण संस्थाएँ, 1369 उपचार केंद्र और 755 आश्रय गृह संचालित हैं।

मदर टेरेसा का स्वभाव अत्यंत, सहनशील, असाधारण और करुणामय था। इन्होंने अपने जीवन को 50 वर्षों तक असहायों, रोगियों और बदहाल महिलाओं की सेवा-सुश्रुषा में लगाया। इनकी मृत्यु 5 सितंबर, 1997 ई० में हुई।

चंद्रशेखर आज़ाद का जन्म 23 जुलाई, 1960 में हुआ था। चंद्रशेखर आज़ाद भारत की आज़ादी की लड़ाई के प्रमुख क्रांतिकारी थे। उनका नाम शहीद भगत सिंह के समान ही भारत के लोगों के दिलों में आदर का स्थान रखता है।

अंग्रेज़ पुलिस आज़ाद के पीछे हाथ धोकर पड़ी रहती थी। एक बार वे पुलिस से बचते-बचते इलाहाबाद पहुँचे और अपने एक परिचित के घर ठहरे। पुलिस को इस बात का सुराग लग गया। वे कुली का भेष बदलकर तथा उस घर की गृहिणी (श्रीदेवी) लड्डुओं का टोकरा उठाकर बाहर निकल गए। पुलिस इंस्पेक्टर ने कुछ कहने के लिए मुँह खोला तो श्रीदेवी ने टोकरी में से लड्डू उठाकर उसके मुँह में ठूँस दिया, "भाई साहब, मिठाई खाइए," कहते हुए वे आगे बढ़ गए। इस प्रकार आज़ाद पुलिस की आँखों में धूल झोंककर बच निकले। ये 27 फरवरी, 1931 ई० में शहीद हुए थे।

बलि का बकरा

8

लोग उसे लालू के नाम से पुकारते थे। लेकिन उसका घर का नाम कुछ और ही होगा। 'लाल' शब्द का अर्थ 'प्रिय' होता है। यह नाम उसका किसने रखा था, यह मैं नहीं जानता। लेकिन देखा ऐसा गया है कि कोई-कोई व्यक्ति यों ही सबके प्रिय बन जाते हैं।

लालू भी ऐसा ही जीव था।

स्कूल से पास होकर हम कॉलेज में दाखिल हो गए। लालू ने कहा, "भाई! अब मैं रोज़गार करूँगा।"

इसके बाद अपनी माँ से दस रुपये माँगकर उसने ठेकेदारी करना शुरू कर दिया। हम लोगों ने हँसकर उसका मखौल उड़ाते हुए कहा, "दस रुपये से भला कहीं रोज़गार होता है। अगर इतनी पूँजी से रोज़गार होता तो सब कर लेते।"

लालू ने कहा, "मेरे लिए यही काफ़ी है।" वह सबके लिए प्रिय था, इसीलिए उसे काम मिलने में देर नहीं लगी। कॉलेज से लौटते वक्त नित्य हम उसे रास्ते में सिर पर छाता लगाए कुछ मज़दूरों के बीच अपने काम में संलग्न पाते थे। हम लोगों को देखते ही चिढ़ाते हुए वह कह उठता था, "अरे! जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाकर जाओ, वरना 'परसेंटेज' में कमी पड़ जाएगी!"

गाँव की पाठशाला में जब हम एक साथ पढ़ते थे, तभी से वह मिस्त्री का काम करने में चतुर था। उसके बस्ते में एक नहरनी, एक छुरी, एक छोटी हथौड़ी, एक घोड़े का नाल और एक छेनी हर वक्त रहती थी। इन चीज़ों का संग्रह उसने कब और कैसे किया, यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन ऐसा कोई कार्य नहीं बचा था, जिसे वह इन सामग्रियों से न बना सके। स्कूल के सभी साथियों के छाते की मरम्मत, स्लेट का फ्रेम ठीक करना, खेल-कूद के समय फटे पायजामा या कमीज़ को सी देना, इसी तरह के बहुत-से कार्य वह किया करता था। किसी भी कार्य के लिए 'ना' उसने कभी नहीं किया। इसके अतिरिक्त भी वह नाना प्रकार की चीज़ें बनाया करता था। एक बार 'छठ' के मेले के समय दो आने का रंगीन कागज़ और मिट्टी के प्याले खरीदकर न जाने क्या बनाकर उसने गंगा किनारे बैठकर उन खिलौनों को ढाई रुपये में बेचा था। उस मुनाफ़े की रकम में से उसने हम लोगों को 'चिनियाबादाम' खिलाया था।

इसी तरह दिन व्यतीत होते गए और हम क्रमशः बड़े होते गए। जिमनास्टिक खेल लालू सबसे अधिक तेज खेलता था। उसके बदन में जैसी ताकत थी वैसा ही साहस भी था। डरने का नाम उसने कभी नहीं सुना। कोई भी आकर बुलाए, उसके यहाँ चला जाता था। प्रत्येक की विपदा के समय सबसे पहले जाकर वह हाज़िर होता था। अगर उसमें कोई ऐब था तो एक यही था कि मौका पाने पर वह लोगों को भयभीत करता था। चाहे कोई भी क्यों न हो, बच्चा-बूढ़ा उसके निकट बराबर थे। हम तो सोच ही नहीं पाते थे, पर वह न जाने कैसे ऐसे विचित्र उपायों को खोज डालता था! आज उसकी एक कहानी सुना ही दूँ।

पड़ोस के मनोहर चटर्जी के यहाँ काली-पूजा हो रही थी। ठीक अर्द्धरात्रि के समय बारा-बलिदान होने वाला था, लेकिन बलि देने वाले लोहार का कहीं पता नहीं था। देर होते देख कई व्यक्ति उसके यहाँ गए तो देखा लोहार के पेट में काफ़ी दर्द है और आने में बिलकुल असमर्थ है। लौटकर लोगों ने समाचार दिया। खबर पाते ही सब-के-सब सिर पर हाथ रखकर बैठ गए। इधर बिना बलिदान किए पूजा अधूरी रह जाएगी। अब इतनी रात को दूसरे आदमी की तलाश कहाँ की जाए। इस साल अब देवी पूजा ठीक से नहीं हो पाएगी। तभी किसी ने कहा-'' अरे भाई! लालू यह कार्य कर सकता है। इस तरह न जाने कितने बकरों को वह काट चुका है।''

इतना कहना था कि कुछ लोग लालू के घर उसे बुलाने के लिए दौड़ पड़े। लालू उस समय सो रहा था। उठकर बोला- ''नहीं।''

''नहीं? अरे बेटा! नहीं मत करो। चले-चलों, वरना देवी की पूजा संपन्न न होने से गाँव का सर्वनाश हो जाएगा।''

लालू ने कहा, ''होने दो। बलिदान कार्य बचपन में अलबत्ता किया था, लेकिन अब नहीं करूँगा।''

जो लोग बुलाने आए, काफ़ी मान-मनौवल करने लगे, क्योंकि बलिदान के मुहूर्त में अब 15 मिनट बाकी थे। इसके बाद बलिदान देना, न देना बराबर होगा। महाकाली के कोप से सर्वनाश हो जाएगा।

तभी लालू के पिता ने आकर कहा-''ये लोग चारों तरफ़ से निराश होकर आए हैं। गाँव-कल्याण के लिए तुम्हें जाना चाहिए, जाओ।'' इस आदेश को अस्वीकार कर दे, इतनी हिम्मत लालू में नहीं थी। फलस्वरूप उसे चटर्जी साहब के यहाँ जाना पड़ा।

लालू को अपने यहाँ देखकर चटर्जी महाशय प्रसन्न हो उठे। इधर बलिदान का समय नज़दीक आता जा रहा था। जल्दी से बकरा लाकर उसे माला-सिंदूर पहनाया गया। फिर कठघरे में उसका सिर रख दिया गया। पूजा देखने के लिए आई हुई जनता 'काली माता की जय' के नारे लगाने लगी। उसी के बीच में देखते-ही-देखते खच्च से आवाज़ हुई और एक निरीह बेजान जीव का धड़ सिर से अलग होकर नीचे गिर पड़ा। खून के फ़ौव्वारे से धरती लाल हो उठी। लालू ने कुछ देर के लिए अपनी आँखें बंद कर ली। पुनः कुछ देर के लिए शंखध्वनि, घंटे की आवाज़ रुक गई। दूसरा बकरा आया, उसे भी पहले वाले की तरह माला-फूल और सिंदूर लगाया गया।इसके बाद भक्तों की 'जय काली माता' की आवाज़ हुई और लालू का दाव एक बार पुनः ऊपर उठा और फिर एक बार आखिरी बार तड़फड़ाते हुए बकरा समस्त सज्जन भक्तों के विरुद्ध न जाने कौन-सी फ़रियाद करते हुए शांत हो गया। उसके खून से लाल मिट्टी पुनः भीग उठी। बाहर शहनाई बज रही थी, आँगन में बहुत-से व्यक्ति जमा थे। सामने गलीचों के ऊपर मनोहर चटर्जी आँखें मूँदकर इष्ट नाम जप रहे थे। तभी लालू एकाएक भयंकर रूप से गरज उठा। कोलाहल, वाद्य-ध्वनि सब कुछ एक बारगी रुक गया। सबकी कौतुहल भरी निगाहें लालू की ओर घूम गईं।

लालू ने अपनी बड़ी-बड़ी आँखें नचाते हुए कहा-''और बकरा कहाँ है?''

घर के भीतर से किसी ने डरते हुए कहा-''और बकरा! दो ही का तो बलिदान होने वाला था।''

लालू ने खून से लथपथ दाव को ऊपर की ओर तीन-चार बार घुमाते हुए भीषण गर्जन करते हुए कहा-''और बकरा नहीं है?''

''यह नहीं हो सकता। मेरे सिर पर खून चढ़ गया है, लाओ बकरा, वरना आज मैं जिसे पाऊँगा उसी का बलिदान करूँगा। नर

बलि-'जय भवानी की! जय माता काली!' '' कहता हुआ इधर-से-उधर उछलने लगा। इधर उसके हाथ का दाव लाठी की तरह भनाभन घूम रहा था। उस समय लालू का रंग-ढंग देखकर वहाँ की जो हालत हुई, उसका वर्णन करना मुश्किल है। सभी एक साथ बाहर की ओर दौड़ पड़े कि कहीं लालू उन्हें पकड़कर बलि न दे दे। इस भगदड़ के कारण वहाँ की हालत अत्यंत खराब हो गई। कोई इधर गिरा तो कोई किसी के हाथ के नीचे से भाग रहा है तो कोई किसी के टाँग के भीतर से । यह सब कांड कुछ समय तक होता रहा।, फिर सब शांत हो गया। लालू गरज उठा।, ''मनोहर चटर्जी कहाँ है? पुरोहित कहाँ गया?''

पुरोहित महाशय दुबले-पतले थे और इस भगदड़ के समय काली देवी की प्रतिमा के पीछे जाकर छिप गए। गुरुदेव महाशय कुशासन पर बैठे माला जप रहे थे, हालत देखकर वे भी एक बड़े खंभे की आड़ में जा छिपे। लेकिन मनोहर चटर्जी अपनी भारी-भरकम तोंद लेकर भागने में लाचार रहे। लालू ने आगे बढ़कर उनका एक हाथ कसकर पकड़ते हुए कहा-''चलो, अब तुम्हारी बलि दूँ।''

एक तो उसने हाथ को कसकर पकड़ रखा था और ऊपर से उसके दूसरे हाथ में दाव देखकर चटर्जी के प्राण सूख गए। रोते हुए विनती करते हुए बोले-''लालू! बेटा लालू! जरा शांत होकर देख, मैं बकरा नहीं हूँ, आदमी हूँ, संबंधी के नाते, मैं तेरा ताऊ लगता हूँ। तेरे पिता मेरे छोटे भाई की तरह हैं।''

''यह सब मैं नहीं जानता! इस वक्त मुझे खून चाहिए। चलो, तुम्हारा बलिदान करूँगा। जगदंबा की यही इच्छा है।''

चटर्जी फफककर रोते हुए बोले-''नहीं बेटे! माँ की यह इच्छा नहीं है। वे तो जगजननी हैं।''

''वे जगजननी हैं इसका ज्ञान है तुम्हें? फिर बकरा बलिदान करोगे? मुझे बलिदान देने के लिए बुलाओगे?''

चटर्जी ने रोते-रोते कहा-''नहीं बेटा! अब बलिदान कभी नहीं कराऊँगा। मैं काली माता के सामने प्रतिज्ञा करता हूँ, आज से मेरे यहाँ कभी बलिदान नहीं होगा।''

''ठीक कह रहे हो न? देवी की सौगंध लो।''

''हाँ, बेटा! ठीक कह रहा हूँ। अब कभी नहीं कराऊँगा! देवी की सौगंध। मेरा हाथ छोड़ दे बेटा।''

लालू ने हाथ छोड़ते हुए कहा-''अच्छा जाओ, तुम्हें छोड़े दे रहा हूँ। लेकिन पुरोहित कहाँ गया? और गुरुदेव? वह कहाँ गया?'' कहता हुआ वह एक बार पुनः गरज उठा। फिर कमरे में से इधर-उधर घूमते हुए बरामदे के करीब आ गया।

उसका भयंकर रूप देखकर खंभे की आड़ से गुरुदेव और प्रतिमा की आड़ से पुरोहित जी दोनों एक साथ करुण स्वर में दो प्रकार की आवाज़ों में चीख उठे। दोनों का स्वर दो ढंग का था और दोनों के स्वर से मिलकर ऐसा बेसुरा स्वर निकल रहा था कि लालू अपने को सँभाल नहीं सका। हो-होकर हँसते हुए दाव एक ओर फेंककर भाग खड़ा हुआ।

तब यह किसी को समझते देर नहीं लगी कि लालू ने यह सब ढोंग किया था। सचमुच उसके ऊपर काली माता सवार नहीं हुई थी। यह कांड लोगों को डराने के लिए ही उसने किया। थोड़ी देर बाद पुनः भक्तों की भीड़ जुट गई। अभी पूजा संपूर्ण नहीं हुई थी। थोड़ी ही देर में महाकलरव के साथ पूरा समारोह शुरू हो गया।

मनोहर चटर्जी ने नाराज़ होकर कहा-"कल को कमबख्त ललुवा को पचास जूते उसके बाप से लगवाऊँगा।" लेकिन उसे जूते नहीं खाने पड़े। सवेरा होने के पहले ही वह गाँव से गायब हो गया। एक हफ़्ते के बाद एक दिन शाम के समय मनोहर चटर्जी के यहाँ जाकर उनसे क्षमा माँग आया। बाप की नाराज़गी भी दूर हो गई लेकिन इससे एक फ़ायदा यह हुआ कि उस घटना के बाद फिर कभी मनोहर चटर्जी के यहाँ बलिदान नहीं हुआ।

–शरतचंद्र चट्टोपाध्याय

शब्द-अर्थ

दाखिल — प्रवेश
मखौल उड़ाना — मज़ाक उड़ाना
संलग्न — साथ लगा हुआ; संबंधित
कौतुहल — जिज्ञासा
नाल — घोड़ों के खुर अथवा जूते आदि में लगाने वाला अर्ध-चंद्राकार लोहा
व्यतीत होना — बीतना, निकल जाना
ऐब — दोष
बलिदान — देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए प्राणी-वध
संपन्न — पूर्ण, पूरा होना
मान-मनौवल — राज़ी करना
अस्वीकार करना — स्वीकृत न करना
विरुद्ध — खिलाफ़
वाद्य-ध्वनि — बाजों की आवाज़
रोज़गार — धंधा, व्यवसाय
नित्य — हमेशा
नहरनी — एक औज़ार जिससे नाई नाखून काटते हैं
मुनाफ़ा — लाभ
सौगंध — कसम, शपथ
विपदा — विपत्ति
अर्द्धरात्रि — आधीरात
फ़रियाद — सहायता के लिए पुकार
सर्वनाश — संपूर्ण विनाश
कल्याण — भलाई
निरीह — निर्दोष/मासूम

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) लालू शब्द का अर्थ बताइए।

(ख) लालू कब से मिस्त्री का काम करने में माहिर था? उसके बस्ते में किन-किन चीज़ों का संग्रह था?

(ग) आधी रात को पड़ोस के मनोहर चटर्जी के यहाँ से लोग लालू को बुलाने क्यों आए?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) लालू की माँ ने उसे रोज़गार के लिए कितने रुपये दिए?

☐ एक सौ रुपये ☐ पचास रुपये ☐ एक हज़ार रुपये ☐ दस रुपये

(ख) ''मेरे लिए यही काफ़ी है।'' लालू ने यह बात किनसे कही?

☐ अपने पिता जी से ☐ अपने अध्यापक से ☐ अपनी माता जी से ☐ अपने मित्रों से

(ग) मनोहर चटर्जी के यहाँ कौन-सी पूजा हो रही थी?

☐ काली-पूजा ☐ लक्ष्मी-पूजा ☐ लक्खी-पूजा ☐ गणेश-पूजा

(घ) कौन अपनी भारी-भरकम तोंद के कारण भागने में लाचार रहे?

☐ पुरोहित जी ☐ मनोहर चटर्जी ☐ लालू के पिता ☐ गुरुदेव

2. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(क) लालू अपने किन गुणों के कारण सबको प्रिय था?

(ख) काली पूजा के समय लोहार क्यों नहीं आया? उसके बदले में किसे बुलाया गया?

(ग) ''बकरा समस्त सज्जन भक्तों के विरुद्ध न जाने कौन-सी फ़रियाद करते हुए शांत हो गया।'' इस कथन का आशय समझाइए।

(घ) चटर्जी ने लालू से क्या विनती की और क्यों?

(ङ) फिर कभी मनोहर चटर्जी के यहाँ बलिदान क्यों नहीं हुआ?

भाषा-ज्ञान

1. 'ई' प्रत्यय का प्रयोग करके नए शब्द बनाइए।

(क) बलिदान + ई – _____ (ख) नज़दीक + ई – _____

(ग) तलाश + ई – _____ (घ) तख्त + ई – _____

(ङ) सनक + ई – _____ (च) ऊँचा + ई – _____

2. जो शब्द दो शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को आपस में जोड़ते हैं, वे समुच्चयबोधक कहलाते हैं।

उचित समुच्चयबोधकों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

इसलिए एवं या अन्यथा और

(क) माँ का कहना मानो _____ पछताओगे।

(ख) लालू की नज़र में राजा _____ रंक समान थे।

(ग) उसके सिर पर खून सवार था _____ सब डर गए थे।

(घ) परोहित _____ राजगुरु छिप गए।

(ङ) तुम चुप करोगे _____ मैं चला जाऊँ।

3. निम्नलिखित उदाहरण के अनुसार वाक्य बनाकर लिखिए।

उदाहरण– पिता ने उसे समझाया। पिता ने कहा। — पिता ने उसे समझाते हुए कहा।

(क) लालू भागा। पुरोहित के पास पहुँचा। _____

(ख) पूजा शुरू की गई। बकरा लाया गया। _____

(ग) हम लोगों को चिढ़ाया हम लोगो को कहा। _____

(छ) पुरोहित भागा। प्रतिमा के पीछे छिप गया। _____

4. दिए गए शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए।

(क) घर – _____ _____ _____

(क) माँ – _____ _____ _____

(ख) पिता – _____ _____ _____

(ग) आँख – _____ _____ _____

5. उदाहरण के अनुसार वाक्य परिवर्तित कीजिए।

उदाहरण– हम कॉलेज में दाखिल हो गए। — हम कॉलेज में दाखिल नहीं हुए।

(क) अब मैं रोज़गार करूँगा। _____

(ख) वह मिस्त्री का काम करने में चतुर था। _____

(ग) लोहार के पेट में दर्द है। _____

(छ) उसके बदन में बहुत ताकत थी। _____

क्रियात्मक गतिविधि

- पता लगाइए कि भारत में किन-किन अवसरों पर बलि का आयोजन होता है।
- बलि प्रथा पर एक रिपोर्ट बनाइए।
- इस कहानी को नाटक के रूप में लिखिए।
- आपके अनुसार बलिप्रथा सही है अथवा गलत। कक्षा में चर्चा कीजिए।
- ''अहिंसा परमधर्म है,'' इस विषय पर अनुच्छेद लिखिए।
- जातिप्रथा का विरोध करने वाली एक कविता चार्ट पर लिखकर कक्षा में लगाइए।
- 'जिमनास्टिक खेल' पर चित्रात्मक चार्ट बनाइए।

एक तस्वीर के दो पहलू

9

मैं एक जंगली नागरिक हूँ। जंगली नागरिक की तरह रहता हूँ नगर में, खाता-पीता और जीता हूँ नगर में, पर जीने का रस मुझे मिलता है जंगलों से, खेतों से, उपवनों से, झीलों से, पर्वतों से। जंगल में बैठकर, प्रकृति के साथ मिलकर बातें करना, हँसना, खेलना मेरे जीवन का एक खास शौक है। मेरे मित्रों में और परिवार में ऐसे भी लोग हैं, जो मुझे मेरे इस स्वभाव के कारण घुमक्कड़ कहते हैं। उन लोगों की तर्क-शैली संक्षेप में यह है- अरे भाई! उठना-बैठना चार साथी मित्रों में, यह क्या कि जंगल में अकेले जा पड़े! उन्हें समझाने को कभी मैं कहता हूँ– भई! जंगल में जाकर भी जो अपने को अकेला महसूस करे, उससे अधिक अभागा कौन होगा, तो वे इस तरह हँसते हैं जैसे मैंने कोई एकदम पागलपन की बात कह दी हो।

जंगलों में घूमना, या यूँ कहूँ कि नित नए जंगलों में घूमना मेरा स्वभाव है। उस दिन घूमने निकला, तो जा निकला बंदरों के बाग में। यहाँ सैकड़ों बंदर रहते हैं।

वे क्या खाकर जी या पनप रहे हैं, मैं नहीं जानता, पर हाँ, मंगल के दिन नगर के दो-चार पुराने विचारों के सज्जन यहाँ आते हैं, इन्हें हनुमान का रूप समझ, चने और गुड़ अवश्य खिला जाते हैं। पता नहीं, उन्हें उससे लोक- परलोक में क्या फल मिलता होगा, पर यह अवश्य है कि यहाँ का वानर दल न तो मनुष्यों से द्वेष ही रखता है और न भय ही खाता है।

मैं एक वृक्ष की छाया में बैठ गया और संस्कृत का मधुर प्रेमपत्र मालती-माधव पढ़ने लगा। अद्भुत रचना है। मालती की आतुरता, माधव का उत्कट अनुराग, मकरंद की प्रेमपूर्ण चातुरी पाठक को कोलाहलपूर्ण विश्व से उठाकर प्रेम के उल्लासमय विश्व में पहुँचा देती है। पढ़ते-पढ़ते मैं झूम-झूम उठा, खो-खो गया और एक ही प्रकरण को बार-बार पढ़ने लगा। देह शिथिल हो गई। आँखों में नशा-सा छा गया। यह दुनिया ही निराली है।

नशा ज़रा ढीला पड़ा, तो मेरा ध्यान वानर-दल की ओर चला गया। वे अपने ही राग में मस्त थे। एक वृक्ष के नीचे कुछ वानर-शिशु आपस में खेल रहे थे। एक बच्चा दूसरे की पीठ पर चढ़ने लगा, तो तीसरे ने उसकी पूँछ पकड़कर खींच ली। जिसकी पूँछ खींची गई थी, उसने उलटकर खींचने वाले का कान काट लिया।

एक बच्चा पास के छोटे-से वृक्ष से नीचे उतरा और उसने इन खेलते बच्चों में से एक का मुँह चूम लिया। उस छोटे शिशु ने भी उसका मुँह चूमना चाहा, पर अपनी लघुता के कारण वह असफल रहा। दो-तीन बच्चों ने बात भाँप ली और उस बड़े बच्चे को बलपूर्वक पकड़, धरती पर लिटा दिया। छोटे शिशु ने यह देखा, तो उसने लौटकर तड़ातड़ उसे चार बार चूमा और पेट पर एक मीठी चिकोटी भी काटी। अब

वह फुदककर नीचे से उठा और उनमें से एक को गुदगुदाकर फिर पेड़ पर चढ़ गया। प्यार में हार भी जीत है, जीत भी हार है। चारों ओर शैशव का साम्राज्य-सा छा गया। चारों ओर सरसता बरस गई।

एक अन्य वृक्ष के नीचे एक वानर माता अपने दो शिशुओं को सुलाने का प्रयत्न कर रही थी। हाँ, उसी के होंगे दोनों, पर वे अपनी बाल सुलभ चंचलता के कारण इधर-उधर उछल-कूद मचाने की चेष्टा में थे। माँ जब तक एक को चूमकर सुलाने का प्रयत्न करती, तब दूसरा उठ दौड़ता और जब वह दूसरे की ओर दौड़ती तो पहला अपनी बाल-क्रीड़ा आरंभ कर देता। जैसे -तैसे जब तक वह एक को हाथों मे दबोच पाती, तब तक दूसरा उसकी कमर पर चढ़, उसे धराशायी करने में विफल, पर अत्यंत अध्यवसायपूर्ण प्रयत्न में जुट पड़ता। माँ अत्यंत व्यस्त थी और यों भी परेशान थी, पर उसके मुख-मंडल पर झुँझलाह का कोई चिह्न नहीं था।

एक तीसरे पेड़ की शीतल छाया में एक वानर दंपती पृथक ही अपने प्रेम का वितान तान रहे थे। वानरी बैठी हुई थी और वानर उसकी गोद में अपना मस्तक रखे, मीठी नींद ले रहा था। उसका एक हाथ वानरी के संपूर्ण कटि भाग को अपने में लपेटे था, मानो किसी ऋषि का मूर्तिमान् आशीर्वाद किसी विपद्ग्रस्त अबला की रक्षा कर रहा हो। वानरी का दायाँ हाथ किसी देवबाला के वरदहस्त की भाँति वानर के ललाट-प्रदेश पर विलसित हो रहा था। वानर के मुख-मंडल पर सात्विक शांति की सरल आभा सुप्त सौंदर्य की प्रकाश-माला के साथ छिटक रही थी और वानरी की चमकीली एवं मादक आँखों में छलक रहा था प्रेम का पुण्य प्रतिबिंब मानों प्रशस्त प्रकाश पूरित चंद्र की विमल ज्योत्स्ना द्वारा प्रक्षालित फूल के दो सुंदर कटोरों में निर्मल ओस बिंदु प्रोल्लसित हो रहे हों। चारों ओर प्रेम का यही साम्राज्य छाया था। पशु-उपाधि वाले एक वानर जीवन से मैं बहुत प्रभावित हुआ। सोचने लगा, इनमें परस्पर कितना प्रेम है। इनका जीवन कितना सरल है। न ईर्ष्या, न द्वेष, न दूसरों को गिराकर स्वयं आगे बढ़ने की पतित भावना। प्रकृति की पुनीत गोद में ये अलग ही अपनी दुनिया बसाए बैठे हैं। मैं कवि के कल्पित प्रेम-जगत में कपियों की इस प्रत्यक्ष दुनिया का तुलनात्मक विवेचन करता हुआ अपने घर की ओर चल पड़ा।

मैं पहले भी कई बार यहाँ आया था, पर आज के इस निरीक्षण से वानर-दल के प्रति मेरे हृदय में एक प्रकार की आत्मीयता हो आई । फलतः आज यहाँ से चलते समय मैंने हृदय में एक मीठी कसक का अनुभव किया। मैं अपनी विचार-वाटिका में एकाकी विहार करता हुआ धीरे-धीरे घर की ओर आ रहा था। अचानक कहीं वास ही वानर-दल की क्रोध भरी 'खों-खों' ने मुझे अपनी ओर आकर्षित किया। आँखें ऊपर उठा मैंने जो दृश्य देखा, उसने मुझे स्तब्ध कर दिया, मैं अवाक रह गया। ऐ जालीदार गाड़ी में पचास-साठ वानर बंद थे। सभी के मुख-मुंडल पर क्रोध की कठोरता तांडव कर रही थी। एक-दूसरे को फाड़ खाने को तैयार थे, सभी घायल थे, सभी क्षुब्ध।

गाड़ीवान ने बताया, "ये सुंदरपुर से पकड़कर हरिद्वार के जंगलों मे भेजे जा रहे हैं।" मेरे कहने पर गाड़ीवान ने गाड़ी ठहरा दी। मैं और भी पास आकर उन्हें गौर से देखने लगा।

देखा एक वानर-शिशु, जिसके सूखे मुख पर भूख की दीनता बरस रही थी, दूध पीने की इच्छा से अपनी माता की गोद की ओर बढ़ा, पर समीप आते ही माता ने उसे नोचना प्रारंभ कर दिया और फिर तो उसका मस्तक अपने दोनों हाथों में दबाकर इस तरह चबाया कि खून बह निकला, बच्चा चिल्लाया, तड़पा, पर माँ के हृदय पर उसका कुछ भी प्रभाव न हुआ।

मातृत्व के साथ पैशाचिकता का ऐसा संयोग देखने का मुझे कभी अवसर न मिला था। मेरी अंतरात्मा काँप उठी। मैं उससे अधिक देखने का साहस न कर सका। जब सागर ही शुष्क हो जाए, उसमें ही धूल उड़ने लगे, तो अन्यत्र जल-प्राप्ति की आशा कौन मूर्ख करेगा? मातृत्व में भी यदि निर्दयता निवास करने लगे तो जीवन में किसी स्नेह या सरसता-वल्लरी के कुसुमित होने की संभावना कौन सहृदय करेगा?

गाड़ीवान को प्रस्थान का संकेत करके मैं चल पड़ा। दूर तक वानरें की 'खाँव-खाँव' का भीषण निनाद मुझे सुनाई देता रहा। यह दृश्य मेरे पूर्व परिरक्षित दृश्य के बिलकुल प्रतिकूल था। यों कहिए, ये दोनों एक ही तस्वीर के दो पहलू थे। मैं सोचने लगा जो प्राणी उपवन में प्रेम की पुनीत प्रतिमा, सरसता की सुंदर निधि और स्नेह का सागर है, वही गाड़ी में बैठकर दानवता का अवतार, क्रोध का ज्वालामुखी एवं हृदयहीनता की मूर्ति कैसे हो गया? हृदय में एक हूक उठी, स्वातंत्र्य और पारतंत्र्य में यही तो अंतर है।

–कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

शब्द-अर्थ

घुमक्कड़ – अधिक घूमने वाला, खानाबदोश
आतुरता – व्याकुलता
अनुराग – प्रेम
कोलाहलपूर्ण – शोर से भरा
प्रकरण – प्रसंग, संदर्भ
लघुता – छोटापन, नाटापन
धराशयी – ज़मीन पर गिरा हुआ
पृथक – अलग
कटि – कमर
वरदहस्त – आशीर्वाद का हाथ
सात्विक – पवित्र
प्रशस्त – साफ़-सुथरा
ज्योत्स्ना – चंद्रमा की रोशनी
प्रोल्लसित – प्रसन्नता से पूर्ण
कपि – बंदर
कसक – पीड़ा
विहार – भ्रमण
क्षुब्ध – क्रोधित
तर्क-शैली – तर्क करने का तरीका
उत्कट – तीव्र, विकट, बहुत अधिक
मकरंद – फूलों का रस
उल्लासमय – प्रसन्नतायुक्त
शिथिल – थका हुआ
गुदगुदाना – गुदगुदी द्वारा हँसाना
अध्यवसाय – परिश्रम
वितान – आकाश
विपद्ग्रस्त – विपत्ति में पड़ी हुई
ललाट – माथा
आभा – ज्योति
विमल – निर्मल
प्रक्षालित – धुले हुए
परस्पर – आपस में
विवेचन – समीक्षा
एकाकी – अकेला
स्तब्ध – हैरान
पैशाचिकता – क्रूरता

वल्लरी	—	लता	**सरसता**	—	भावुकता
प्रस्थान	—	रवानगी	**सहृदय**	—	दयालु
परिरक्षित	—	जिसकी अच्छी तरह रक्षा की गई हो	**निनाद**	—	शोर
पुनीत	—	पवित्र	**प्रतिकूल**	—	विपरीत
निधि	—	खज़ाना	**शुष्क**	—	सूखा, हृदयहीन

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) लेखक के जीवन का खास शौक क्या है?

(ख) मंगल के दिन बंदरों के बाग में क्या होता है?

(ग) गाड़ीवान ने लेखक को क्या बताया?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) लेखक कैसा नागरिक है?

☐ शहरी ☐ ग्रामीण ☐ जंगली ☐ बंजारा

(ख) मंगलवार को कुछ सज्जन बंदरों को क्या खिलाते थे?

☐ बूँदी ☐ गुड़-चना ☐ चावल ☐ केले

(ग) बंदरों के बाग में चारों ओर किसका साम्राज्य था?

☐ प्रेम ☐ आतंक ☐ शोक ☐ विरह

(घ) वानर शिशु को क्या पीने की इच्छा थी?

☐ चाय ☐ शरबत ☐ पानी ☐ दूध

2. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(क) लेखक ने क्यों कहा कि चारों ओर शैशव का साम्राज्य साधा गया?

(ख) वानर शिशुओं द्वारा परेशान करने पर भी माँ के मुखमंडल पर झँझलाहट का कोई चिह्न क्यों नहीं था?

(ग) क्या देखकर लेखक की अंतरात्मा काँप उठी?

(घ) आशय स्पष्ट कीजिए–

(i) जब सागर ही शुष्क हो जाए, उसमें ही धूल उड़ने लगे, तो अन्यत्र जल प्राप्ति की आशा कौन मूर्ख करेगा?

(ii) हृदय में हूक उठी, स्वातंत्र्य और पारतंत्र्य में यही तो अंतर है।

भाषा-ज्ञान

1. तत्सम शब्द – वे शब्द जो बिना किसी परिवर्तन के संस्कृत के समान ही हिंदी भाषा में प्रयोग किए जाते हैं। जैसे- सूर्य, सत्य आदि।

तद्भव शब्द – वे शब्द जो संस्कृत भाषा से बिगड़कर हिंदी भाषा में प्रयुक्त होते हैं। जैसे- सूरज, सच आदि।

निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखिए।

(क) अग्नि – _____

(ख) रात्रि – _____

(ग) आम्र – _____

(घ) वानर – _____

(ङ) कोकिल – _____

(च) नृत्य – _____

(छ) दंत – _____

(ज) काक – _____

2. दिए गए शब्दों के वर्ण-विच्छेद कीजिए।

(क) ललाट – _____

(ख) निर्मल – _____

(ग) विवेचन – _____

(घ) दीनता – _____

(ङ) अवसर – _____

3. 'का', 'के','की' द्वारा रिक्त स्थान भरिए।

(क) मैं जंगली नागरिक _____ तरह रहता हूँ।

(ख) मेरे इस स्वभाव _____ कारण लोग मुझे घुमक्कड़ कहते हैं।

(ग) वे इस तरह हँसते हैं जैसे मैंने पागलपन _____ बात कही हो।

(घ) नगर _____ पुराने विचारों के दो-चार सज्जन यहाँ आते हैं।

(ङ) एक ने दूसरे वानर _____ मुँह चूम लिया।

4. निर्देशानुसार काल बदलिए।

(क) मैं एक जंगली नागरिक हूँ। (भूतकाल)

_____

(ख) मैं प्रेमपत्र 'मालती-माधव' पढ़ने लगा। (भविष्यत काल)

_____

(ग) वे अपने ही काम में मस्त थे। (वर्तमान काल)

_____

(घ) माँ शिशुओं को सुला रही थी। (भविष्यत काल)

_____

(ङ) प्यार में हार भी जीत है। (भूतकाल)

_____

5. पाठ में से गुणवाचक विशेषण ढूँढ़कर लिखिए।

_____	_____	_____	_____
_____	_____	_____	_____
_____	_____	_____	_____
_____	_____	_____	_____
_____	_____	_____	_____

क्रियात्मक गतिविधि

- विभिन्न प्रकार के बंदरों के विषय में जानकारी एकत्र करके एक रिपोर्ताज लिखिए।
- 'माँ' पर विभिन्न कविताओं का संकलन कीजिए।
- 'National Geographic' चैनल पर दिखाए जाने वाले जंगलों पर आधारित कार्यक्रम देखिए।
- ''पूत कपूत सुने हैं पर नहीं माता सुनी कुमाता''- विषय पर अनुच्छेद लिखिए।
- वन्य प्राणी अभयारण्य पर एक प्रस्तुतीकरण बनाइए।
- चिड़ियाघर एवं अजायबघर के शैक्षिक भ्रमण का आयोजन कीजिए।

गोशाला 10

(1)

उस दिन रिमझिम-रिमझिम वर्षा हो रही थी।

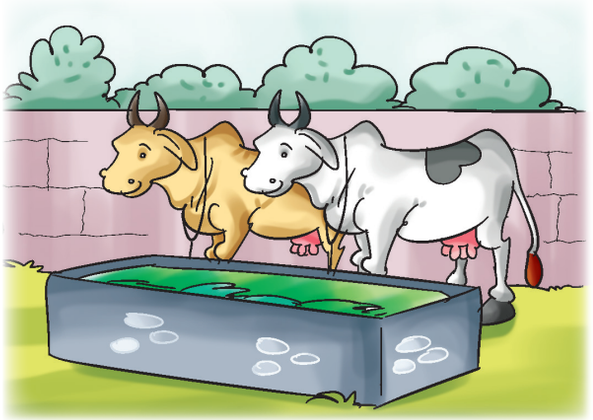

आज स्कूल नहीं जाना होगा। गुरुजी की उस हरी-हरी खजूर की छड़ी से छुट्टी मिली। कभी आँगन में जाकर नाचूँगा, नहाऊँगा; कभी पानी के बुलबुलों से खेलूँगा, खुश होऊँगा और उसके बाद गर्मा-गर्म खिचड़ी खाकर काकी की गोद में सो जाऊँगा।

किंतु उस वर्षा में भी देखा, गाँव के रामफल काका कीचड़ में सने, सिर पर छाता ओढ़े, लेकिन ज्यादातर भीगते, बढ़े जा रहे हैं- मेरे पड़ोसी अक्कल के दरवाजे की ओर!

रामफल काका मेरे गाँव के सबसे धनी, किंतु कंजूस व्यक्ति हैं। अक्कल एक गरीब मजदूर किंतु हरफनमौला इंसान है।

"अक्कल! जरा चलो, भानसघर का खपरैल उधड़ जाने से समूचा घर पानी-पानी हो रहा है, खाना-पीना बंद है। चलो! जरा खपरैलों को दुरुस्त कर दो, बाल-बच्चे भूख से छटपटा रहे हैं।"

"मेरी तबीयत ठीक नहीं। माफ कीजिए, तबीयत ठीक होती, तो हुकुम सिर आँखों पर।"

अक्कल रामफल काका का काम प्रायः ही किया करता था, किंतु उसे सबसे ज्यादा तो इस बात की चिढ़ थी कि कंजूसी के मारे अच्छे दिनों में तो ये घर दुरुस्त नहीं कराते और आफत में जान लेने आए हैं, जैसे गरीब की देह, देह नहीं! उसे सर्दी लग गई थी, वह रह-रहकर खाँसता था, यह बात तो हम पड़ोसी जानते ही थे।

किंतु रामफल काका के साम-दाम-दंड-भेद के सामने उसे झुकना पड़ा। फटी, काली कंबली ओढ़े अक्कल को मैंने रामफल काका के पीछे-पीछे जाते देखा।

(2)

अक्कल- पाँच हाथ का लंबा जवान। रंग-वही भारत के आदिवासियों का। विदेशी आर्यों के रक्त मिश्रण का प्रभाव रंग पर न पड़कर आकार पर ही पड़ा था। हट्टा-कट्टा!

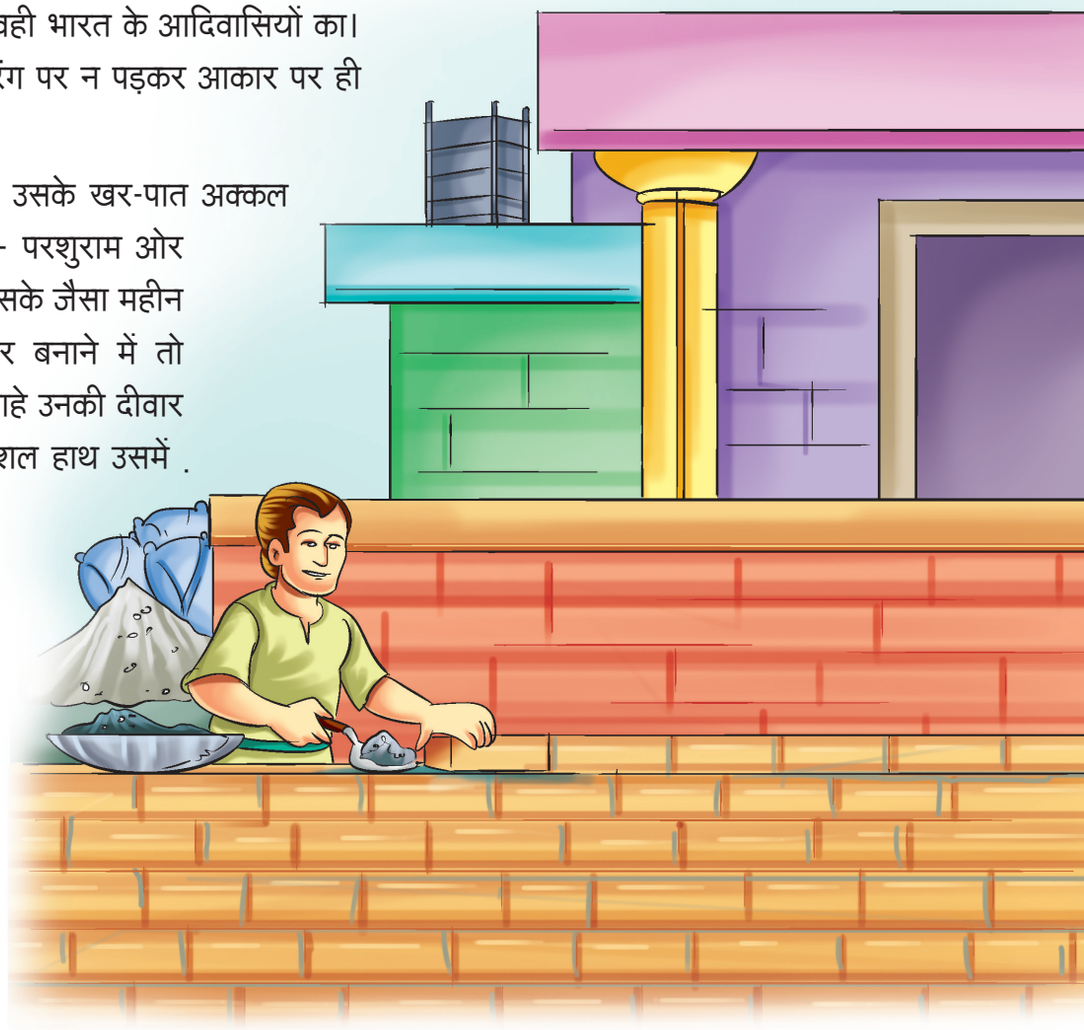

जिस खेत की कोड़नी में अक्कल पहुँचा, उसके खर-पात अक्कल के नाम पर रोए। उसकी कुदाल क्या थी- परशुराम ओर बलराम के कुठार और हल की खिचड़ी! उसके जैसा महीन जोतने वाला हलवाहा कहाँ मिलेगा? घर बनाने में तो उस्ताद। गाँव में जितने अच्छे मकान हैं, चाहे उनकी दीवार बनाने में, चाहे छप्पर में, अक्कल का कुशल हाथ उसमें जरूर है। रामफल काका का वह शानदार बंगला अक्कल की वास्तु-विद्या के अपार ज्ञान का एक उत्कृष्ट नमूना है। अपने इन गुणों के चलते अक्कल मजदूर होकर भी काफी खुशामदें पाता था और पैसे भी।

उसके दो बेटे और एक बेटी थी। बेटों का लालन-पालन उसने औकात से ज्यादा अच्छे ढंग से किया और बेटी को तो वह इस शान से रखता कि गाँव की 'बबुइयाँ' भी मन-ही-मन चढ़तीं।

अक्कल की उदारता की चर्चा होती। गाँव में कभी साधु-संत आते, तो उनकी सेवा अक्कल जरूर करता था। वह काम करने में सक्षम था। उसकी आमदनी साधारण मजदूरों से ज्यादा तो थी ही, उसने एक गाय भी पाल रखी थी और दो-तीन बकरियाँ भी। इनसे भी काफी पैसे आते।

(3)

मैं अब शहरी जीव हूँ। कभी-कभी मन बहलाने को अपने गाँव चला जाता हूँ। एक दिन अपने दरवाजे पर बैठा मैं एक विलायती मैगजीन पढ़ रहा था। एक छोटी-सी रूप कथा थी। मैं सोचता, उफ! ये विदेशी कलाकार कैसी जीवंत तस्वीरें खींचते हैं! कलम है या रंगीन कूँची!

"सलाम बबुआ।"

आँखें न उठीं। मैं कुछ पढ़ने में गर्क था, कुछ गर्क होने का स्वांग भर रहा था, कुछ उपेक्षा भी थी। दिन भर देहातियों के मारे परेशान जो रहता हूँ।

फिर वही आवाज? मैंने आँख उठाई। एक लकुटिया और दो सूखे पैरों के सहारे तीन टाँगों के जानवर-सा झुका एक आदमी दीख पड़ा। चेहरे पर गौर किया- काले चेहरे को सफेद-सफेद बालों के ठूँठ उसे भयानक बना रहे थे। गर्दन लगातार हिल रही थी।

"मैं बबुआ.....अक्कल।"

मैं चौंक पड़ा। क्या वही अक्कल आज ऐसा हो गया? बेचारा अक्कल अब भीख माँगता है! जिसने गाँव भर को घर दिया, वही बेघर-बार है। एक बच्चा जाता रहा, बेटी शादी होते ही अपने ससुराल चल दी। बेटी तो पराई ही होती है। उसकी प्यारी पत्नी बुधनी भी चल बसी। कोई काम-धाम उससे बन पड़ता नहीं। इतनी कमाई तो कभी हुई नहीं कि वह इतना संग्रह कर पाता कि बुरे दिनों को सुख चैन से काटता। सिवाय भीख के अब दूसरा चारा ही क्या था।

और भीख भी क्या सदा मिलती है? भूख-प्यास का मारा अक्कल हड्डी का ढाँचा बन रहा है। "मैं तुमसे भीख लेने नहीं आया, एक नालिश करने आया हूँ, बबुआ! तुम्हीं इंसाफ करो, नहीं तो रामफल बाबू के मुकाबले कौन मुँह खोले?"

अक्कल ने कथा सुनाई। किस तरह जिंदगी की उठान के समय अपनी पूरी शक्ति से रामफल बाबू की मजदूरी की, किस तरह उनकी कितनी ही परती जमीन को उसने हरा-भरा खेत बना डाला, किस तरह उसने उनके पशु-धन की वृद्धि की, किस तरह उसने उनके मकान बनाए, जिस पर पड़ोस के बड़े-बड़े लोगों को ईर्ष्या होती है, लेकिन.....

लेकिन और बातें जाएँ जहन्नुम में, अक्कल के साथ महान अन्याय किया गया था। जाड़े के दिन। न घर, न कपड़ा। रामफल काका के दरवाजे पर एक बड़ा 'घूर' लगता है। बेचारा अक्कल दिनभर भीख माँगता, रात मे उनके पुआल के टाल में घुसकर सो जाता और जब कभी जाड़ा लगता, उनके घूरे मे जाकर आग तापता, किंतु आज रामफल काका ने उसे वहाँ से निकाल दिया है। क्यों? क्योंकि वह रातभर तापकर आग खत्म कर देता है।

"बाबू! जिंदगीभर उनकी सेवा की। इस बुढ़ापे में खाना-पीना, कपड़ा-लत्ता, घर-दुआर देने से रहे, क्या घूरे की आग से भी मुझे महरूम किया जाना चाहिए?" यह थी उसकी दलील। मैं क्या जवाब देता? मेरी आँखों में बचपन का बरसात वाला वह दृश्य नाच उठा। आँखों की बरसात ने शायद उत्तर देना चाहा।

शहर में गोशाला का उत्सव था। मैं उसमें शामिल होकर, अपने गाँव की ओर जा रहा था। मुझे खुशी हो रही थी कि गोशाला के संबंध में मेरे गाँव की भी चर्चा हुई थी। रामफल काका ने दो गाड़ी पुआल गोशाला के लिए दिया था। गोशाला के मंत्री ने इसका उल्लेख किया था।

गोशाला- बूढ़ी, अपाहिज गायों, बैलों की रक्षा के लिए कितना सुंदर प्रबंध! ऐसा होना चाहिए भी! भला जिन गायों ने हमें जिंदगीभर दूध और बछड़े दिए, जिन बैलों ने अपनी हड्डियाँ घुलाकर जमीन को जरखेज बनाया, उनके बुढ़ापे का तो कोई प्रबंध होना ही चाहिए। गोशाला, मनुष्य की मनुष्यता का सुंदर प्रतीक!

यों ही साइकिल सरसराता सोचता चला जा रहा था कि रास्ते में झुके एक आदमी की सूरत दीख पड़ी। यह तो अक्कल है!- "कहाँ चले अक्कल?"

"गाँव में अब गुजर नहीं होता, बबुआ! जा रहा हूँ, कहीं माँग-माँगकर खाऊँगा और राम-नाम लेते....."

अक्कल अपने गाँव को सदा के लिए छोड़कर जा रहा है। कहाँ? जहाँ कहीं भी उसे पेट के खड्ड के लिए मुट्ठीभर अन्न और शरीर के लिए तीन हाथ जमीन मिल जाए।

मनुष्य ने बूढ़े पशुओं के लिए गोशालाएँ बनवाई, किंतु बूढ़े मनुष्यों के लिए? रामफल काका को बूढ़ी गायों से इतनी मुहब्बत और उस बूढ़े आदमी के लिए जिसके.....?

—रामवृक्ष बेनीपुरी

लेखक परिचय

सुप्रसिद्ध गद्य लेखक रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म 1899 ई. में बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुरी नामक गाँव में हुआ था। उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ 'पतितों के देश में', 'जंजीर और दीवारें', 'आम्रपाली', 'माटी की मूरतें', 'चिता के फूल' आदि हैं। उन्होंने सामाजिक समस्याओं को बड़े ही रोचक एवं प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। उनका देहावसान 1968 ई. में हुआ था।

शब्द-अर्थ

कंजूस	—	कृपण	**हरफनमौला**	—	जो बहुत सारे काम जानता हो
भानसघर	—	रसोईघर	**दुरुस्त**	—	जो अच्छी दशा में हो, ठीक
प्राय	—	अक्सर	**हट्टा-कट्टा**	—	हृष्ट-पुष्ट
वास्तु-विद्या	—	भवन-निर्माण की विद्या	**कोड़नी**	—	खेत की गुड़ाई करना
मैगजीन	—	पत्रिका	**औकात**	—	हैसियत
गर्क	—	तल्लीन, डूबा हुआ	**बबुइयाँ**	—	धनी लोगों की लड़कियाँ या स्त्रियाँ
स्वांग भरना	—	नाटक करना	**नालिश**	—	शिकायत
इंसाफ	—	न्याय	**जहन्नुम**	—	नरक
घूर	—	कूड़े-करकट का ढेर, जिसे जलाकर शीतकाल में आग तापते हैं,	**महरूम**	—	वंचित
उल्लेख	—	वर्णन, जिक्र	**जरखेज**	—	उपजाऊ

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) रामफल काका कौन थे?

(ख) अक्कल कौन था?

(ग) गाँव की बबुइयाँ किससे मन-ही-मन चिढ़ती थीं?

(घ) शहर में कौन-सा उत्सव मनाया जा रहा था?

(ङ) अक्कल लेखक के पास किस लिए गया था?

लिखित

1. नीचे लिखे पाठांश को ध्यानपूर्वक पढ़ते हुए पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

गाँव के रामफल काका कीचड़ में सने, सिर पर छाता ओढ़े, लेकिन ज्यादातर भीगते, बढ़े जा रहे हैं– मेरे पड़ोसी अक्कल के दरवाजे की ओर!

रामफल काका मेरे गाँव के सबसे धनी, किंतु कंजूस व्यक्ति हैं। अक्कल एक गरीब मजदूर किंतु हरफनमौला इंसान है।

''अक्कल! जरा चलो, भानसघर का खपरैल उधड़ जाने से समूचा घर पानी-पानी हो रहा है, खाना-पीना बंद है। चलो! जरा खपरैलों को दुरुस्त कर दो, बाल-बच्चे भूख से छटपटा रहा हैं।''

''मेरी तबीयत ठीक नहीं। माफ कीजिए, तबीयत ठीक होती, तो हुकुम सिर आँखों पर।''

अक्कल रामफल काका का काम प्राय: ही किया करता था, किंतु उसे सबसे ज्यादा तो इस बात की चिढ़ थी कि रामफल काका का काम प्राय: ही किया करता था, किंतु उसे सबसे ज्यादा जो इस बात की चिढ़ थी कि कंजूसी के मारे अच्छे दिनों में तो ये घर दुरुस्त नहीं कराते और आफत में जान लेने आए हैं, जैसे गरीब की देह, देह नहीं! उसे सर्दी लग गई थी, वह रह-रहकर खाँसता था, यह बात तो हम पड़ोसी जानते ही थे।

किंतु रामफल काका के साम-दाम-दंड-भेद के सामने उसे झुकना पड़ा। फटी, काली कंबली ओढ़े अक्कल को मैंने रामफल काका के पीछे-पीछे जाते देखा।

(क) बरसात में भीगते हुए कौन, कहाँ जा रहा था?

(ख) बाल-बच्चे भूख से क्यों छटपटा रहे थे?

(ग) अक्कल को रामफल काका की किस बात से चिढ़ थी?

(घ) पड़ोसी क्या जानते थे?

(ङ) अक्कल को किसके सामने झुकना पड़ा?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) शहर में 'गोशाला' क्यों बनवाई गई थी?

(ख) अक्कल क्या-क्या काम करता था?

(ग) अक्कल के परिवार में कितने सदस्य थे?

(घ) लोग अक्कल की खुशामद क्यों करते थे?

(ङ) गाँव में साधु-संतो के आने पर अक्कल क्या करता था?

(च) रामफल काका धनी होकर भी मनुष्यता की कसौटी पर खरे क्यों नही उतरे?

(छ) बूढ़े अक्कल को देखकर लेखक क्यों चौंक पड़े?

(ज) अक्कल ने लेखक को क्या कथा सुनाई?

(झ) अक्कल ने गाँव छोड़ने का निर्णय क्यों लिया?

(ञ) 'मनुष्य ने बूढ़े पशुओं के लिए गोशालाएँ बनावाईं, किंतु बूढ़े मनुष्यों के लिए?' कथन से संबंधित निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(i) इस कथन का प्रयोग किसने और किस संदर्भ में किया है?

(ii) 'बूढ़े मनुष्यों' द्वारा कहानी के किस पात्र की ओर संकेत किया गया है और क्यों?

(iii) वृद्ध जनों के आश्रय की समस्या के समाधान के लिए क्या उपाय किए जाने चाहिए?

भाषा-ज्ञान

1. नीचे लिखे वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए-

(क) एक साथ पकाया गया दाल और चावल। _____

(ख) जो बहुत सारे कार्यों में निपुण हो। _____

(ग) बिना जोते छोड़ी गई जमीन। _____

(घ) कूड़े-करकट का ढेर, जिसे जलाकर आग तापा जाता है। _____

(ङ) बूढ़ी, अपाहिज गायों एवं बैलों की रक्षा के लिए बनाया गया भवन। _____

2. नीचे लिखे भाववाचक संज्ञा शब्दों से विशेषण शब्द बनाइए-

(क) उदारता – _____ (ख) भूख – _____

(ग) चतुराई – _____ (घ) प्यास – _____

(ङ) कठोरता – _____ (च) मूर्खता – _____

(छ) उत्कृष्टता – _____ (ज) बुढ़ापा – _____

3. विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं-

(क) मूलावस्था – कोमल

(ख) उत्तरावस्था – (इनके साथ 'तर' प्रत्यय जोड़ा जाता है।) कोमलतर

(ग) उत्तमावस्था – (इनके साथ 'तम' प्रत्यय जोड़ा जाता है।) कोमलतम

- **नीचे लिखे विशेषण शब्दों की उत्तरावस्था और उत्तमावस्था के शब्द बनाइए-**

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
लघु	लघुतर	लघुतर
उच्च	_____	_____
अधिक	_____	_____
सुंदर	_____	_____
निम्न	_____	_____
अच्छा	उत्तम	सर्वोत्तम

4. समास– समास का अर्थ है- संक्षेपीकरण अर्थात् दो या अधिक पदों के बीच आने वाले शब्दों और विभक्ति चिह्नों को हटाकर, उन्हें संक्षिप्त बनाने की प्रक्रिया 'समास' कहलाती है। समास के छह भेद होते हैं-

(क) अव्ययीभाव समास- जिस समस्त पद का पहला पद अव्यय होता है, उसे अव्ययी भाव समास कहते हैं। जैसे- आजीवन। इस उदाहरण में 'आ' अव्यय है और विग्रह होगा- जीवनभर।

(ख) द्वंद्व समास- जिस समास पद में दोनों पद पद प्रधान हों, वहाँ पदों के बीच योजक चिह्न का प्रयोग किया जाता है, उसे द्वंद्व समास कहते हैं। इन दोनों शब्दों के बीच 'और', 'या', 'अथवा' आदि का लोप होता है। जैसे- 'भूख-प्यास' का विग्रह होगा- भूख और प्यास

(ग) तत्पुरुष समास- जिस समस्त पद में उत्तर पद प्रधान होता है तथा पूर्व पद गौण होता है। प्राय: इन दोनों शब्दों के बीच कारक चिह्नों का लोप हो जाता है। जैसे- 'गोशाला' का विग्रह होगा- गौ के लिए शाला।

नोट - समास के अन्य भेदों के बारे में आगे पढ़ेंगे।

- **नीचे लिखे समस्त पदों का विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए-**

	विग्रह	समास का नाम
(क) भुखमरा	_____	_____
(ख) आरामकुर्सी	_____	_____
(ग) व्यवहारकुशल	_____	_____
(घ) खाना-पीना	_____	_____
(ङ) प्रतिदिन	_____	_____
(च) खर-पात	_____	_____
(छ) भरपेट	_____	_____
(ज) कपड़ा-लत्ता	_____	_____

क्रियात्मक गतिविधि

- **रामवृक्ष बेनीपुरी की अन्य रचनाएँ जैसे- 'चार एकांकी', 'जंजीरें और दीवारें', 'तथागत', 'विजेता' आदि पुस्तकालय अथवा कंप्यूटर की सहायता से पढ़िए। 'मंगर' हलवाहे की कहानी पढ़कर कक्षा में सुनाइए।**

जाना-पहचाना अजनबी

11

जेल की दुकान में जिमी वैलेंटाइन बड़ी तन्मयता से जूते सिलने का काम कर रहा था कि तभी चौकीदार वहाँ आया और उसे अपने साथ सामने वाले ऑफ़िस में वार्डन के पास ले गया।

"आओ जिमी! तुम्हारे लिए खुशखबरी है। कल सुबह तुम यहाँ से रिहा कर दिए जाओगे", वार्डन ने उसे क्षमादान का कागज़ थमाते हुए कहा।

कागज़ थामते हुए जिमी ने कोई उत्सुकता नहीं दिखाई। वास्तव में चार वर्ष की कैद में से अब तक दस महीने की सज़ा तो वह काट ही चुका था। जबकि उसे उम्मीद थी कि अधिक-से-अधिक तीन महीने ही अंदर रहना पड़ेगा, क्योंकि उसका दोस्त माइक उसकी सज़ा माफ़ करवाने की कोशिश में लगा था।

"तो जिमी!" वॉर्डन ने उसे समझाते हुए कहा, "अब एक नेक आदमी बनकर दिखाओ। मैं जानता हूँ कि तुम दिल के बहुत भले हो। अब ये तिज़ोरियाँ-विजोरियाँ तोड़ना छोड़ो!"

"मैं और तिज़ोरी", जिमी ने आश्चर्य से कहा। वार्डन हँसा, "कभी नहीं? फिर स्प्रिंगफील्ड में हुई चोरी के ज़ुर्म में तुम्हें क्यों पकड़ा गया?"

"स्प्रिंगफील्ड और मैं!" जिमी ने बड़ी मासूमियत से कहा, "वॉर्डन साहब! मैं तो कभी स्प्रिंगफील्ड गया ही नहीं।"

"क्रोनिन, इसे ले जाओ," वार्डन ने मुसकराते हुए कहा, "सुबह सात बजे इसे रिहा कर देना।" फिर जिमी की ओर देखते हुए कहा, "और हाँ, मेरी बात पर ध्यान देना जिमी!"

अगले दिन सुबह जिमी वार्डन के ऑफ़िस में खड़ा था। उसके बदन पर चुस्त, भड़कीला सूट था और पैरों में चरमराने वाले जूते, जो जेल अधिकारियों की ओर से सभी सरकारी दामादों को दिए जाते थे। इसके अतिरिक्त उसे रेल की एक टिकट और पाँच डॉलर भी मिले थे। कानून के रखवालों का यह मानना था कि इसकी सहायता से वह फिर से नेक और खाता-पीता नागरिक बन जाएगा।

जेल के रजिस्टर में 'जिमी वैलेंटाइन, 9762' के आगे 'गवर्नर द्वारा क्षमादान' लिख दिया गया और मिस्टर जिमी वैलेंटाइन बाहर की खिली धूप में निकल आए।

रास्ते में पक्षियों की चहचहाहट, मधुर संगीत, झूमते पेड़ों और महकते फूलों को अनदेखा-अनसुना करते हुए जिमी एक रेस्तराँ में घुसा। वहाँ अपना पसंदीदा खाना खाकर उसने आज़ादी का पहला स्वाद चखा। बाहर निकलकर उसने रेस्तराँ के दरवाज़े पर बैठे अंधे की टोपी की ओर एक सिक्का उछाला और स्टेशन की और चल दिया। तीन घंटे बाद वह माइक डॉलर के कैफ़े में था।

"माफ़ करना जिमी! स्प्रिंगफील्ड में चोरी के बाद बहुत हंगामा हुआ, जिसके कारण क्षमादान दिलवाने में हमें ज़्यादा समय लग गया।" माइक ने लाचारी जताते हुए कहा।

माइक ने उसे चाबी थमा दी। चाबी लेकर जिमी ने अपना कमरा खोला और अंदर चारों ओर देखा। सब कुछ वैसा ही था जैसा वह छोड़कर गया था, यहाँ तक कि फ़र्श पर गिरा बेन प्राइस के कॉलर का बटन भी, जो उन दोनों की हाथापाई में टूटकर गिरा था। आखिरकार प्रख्यात जासूस बेन प्राइस ने उसे पकड़ ही लिया था। और फिर यह दस महीने की सज़ा!

जिमी ने आगे बढ़कर दीवार में बनी अलमारी से अपनी अटैची निकाली। उस पर धूल की परत जम चुकी थी। कुछ देर वह अटैची में रखे अपने अनमोल खज़ाने को निहारता रहा-बर्मा, क्लैंप और न जाने ऐसे ही कितने अजीबोगरीब औज़ार। खास तरह के स्टील के बने हुए। इनमें से कई तो जिमी ने स्वयं बनाए थे।

जिमी ने बड़ी लगन से अपनी अटैची साफ़ की और आधे घंटे बाद वह नीचे था। उसने अब बेहतरीन कपड़े पहने हुए थे और उसके हाथ में वही अटैची थी।

जिमी की रिहाई के एक सप्ताह बाद ही रिचमंड, इंडियाना में एक तिज़ोरी को बड़ी सफ़ाई से खाली कर दिया गया। उसके दो सप्ताह बाद लोगनस्पोर्ट में एक नई अैर मज़बूत तिज़ोरी को बहुत आसानी से खोलकर उसमें से पंद्रह सौ डॉलर साफ़ कर लिए गए। इन वारदातों का बेन प्राइस की नज़र में आना स्वाभाविक था। बेन प्राइस अब तक जिमी की आदतों से अच्छी तरह परिचित हो गया था। वारदात के स्थानों का निरीक्षण करने के पश्चात, उसे कहते हुए सुना गया-"लगता है, जिमी ने फिर से काम शुरू कर दिया है। इस ताले को देखिए, इसे इतनी आसानी से खोला गया है, जैसे बरसाती मौसम में मूली उखाड़ी जाती है। जिमी को तिज़ोरियों में छेद करने की ज़रूरत भी नहीं पड़ती।"

एक दिन दोपहर में जिमी अपनी अटैची लिए हुए एक छोटे-से शहर एलमोर पहुँचा। स्टेशन से सवारी लेने की बजाय वह पैदल ही होटल की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसकी नज़र एक खूबसूरत लड़की पर पड़ी। उससे नज़र मिलते ही जिमी भूल गया कि वह कौन है। लड़की भी जिमी के देखकर ठिठक गई, क्योंकि जिमी का व्यक्तित्व भी कम आकर्षक नहीं था। पलभर बाद ही लड़की बगल के 'एलमोर बैंक' के अंदर चली गई।

"यह पौली सिम्पसन ही है न?" जिमी ने बड़ी चालाकी से पास खड़े एक लड़के से पूछा।

"नहीं, यह एनाबेल एडम्स है," लड़के ने बताया, "यह बैंक इसके पिता का है।"

जिमी मन-ही-मन कुछ तय करते हुए होटल पहुँचा। वहाँ उसने 'रॉल्फ़ डी0 स्पेंसर' के नाम से एक कमरा लिया। साल का अंत आते-आते रॉल्फ़ डी0 स्पेंसर की स्थिति इस प्रकार थी- उसे समाज में आदर और मान्यता मिल गई थी। उसकी जूते की दुकान खूब चल रही थी और कुछ दिनों के बाद ही उसकी और एनाबेल एडम्स की शादी होने वाली थी।

एक दिन उसने सेंट लुई स्थित अपने मित्र को एक पत्र लिखा-

प्रिय दोस्त,

बुधवार की रात नौ बजे लिटिल रॉक में सलिवन के घर मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ। मेरे कुछ छोटे-मोटे काम हैं, जिन्हें मैं चाहता हूँ कि तुम पूरा कर दो। मैं तुम्हें अपने औज़ार भी भेंट करना चाहता हूँ। मुझे पता है, इन्हें पाकर तुम्हें खुशी होगी।

और हाँ बिली! अपना पुराना धंधा मैंने छोड़ दिया है। एक साल हो गया। मेरे पास एक अच्छी दुकान है। ईमानदारी से जीवन बिता रहा हूँ, और अब से दो सप्ताह बाद, मैं इस दुनिया की सबसे अच्छी लड़की से शादी करने जा रहा हूँ। यही ज़िदगी है बिली, ईमानदार ज़िदगी । एक अरब डॉलर के लिए भी मैं दूसरे के पैसे को हाथ नहीं लगाऊँगा। शादी करने के बाद मैं सब-कुछ बेचकर कहीं और चला जाऊँगा, जहाँ मुझे अपनी पुरानी ज़िंदगी से कोई खतरा नहीं रहेगा। सच कहता हूँ बिली! वह बहुत अच्छी है। उसे मुझ पर विश्वास है। सारी दुनिया मिल जाए फिर भी अब मैं ऐसा-वैसा काम नहीं करना चाहूँगा। सलिवन के घर ज़रूर आना। मुझे हर हाल में तुमसे मिलना है। औज़ार मैं अपने साथ लेता आऊँगा।

-तुम्हारा दोस्त,

जिमी

उसी रात जिमी को ढूँढ़ता हुआ बेन प्राइस भी एलमोर पहुँचा। शहर में उसे जो कुछ भी पता करना था, कर लिया। 'तो जिमी मिस्टर एडम्स की बेटी से शादी करने जा रहा है', बेन ने अपने-आप से कहा।

बुधवार की सुबह नाश्ता करने के बाद जिमी को अपनी शादी के कपड़े सिलवाने के लिए लिटिल रॉक जाना था और इसी बहाने वह अपनी बहुमूल्य अटैची अपने दोस्त के सुपुर्द करने वाला था।

उस दिन एडम्स परिवार जिमी को साथ लेकर बैंक पहुँचा। जिमी के साथ उसकी अटैची भी थी।

एडम्स साहब ने हाल ही में अपने 'एलमोर बैंक' में नई तिज़ोरी लगवाई थी। वह अपने परिवार वालों को तिज़ोरी दिखा रहे थे। एनाबेल की बड़ी बहन की दोनों बेटियाँ-मेइ और अगाथा कभी तिज़ोरी के चमकते दरवाज़े को छूती तो कभी उसके ताले को।

एडम्स साहब अपने होने वाले दामाद को तिज़ोरी के ताले की विशेषता बता रहे थे, लेकिन 'स्पेंसर साहब' उसमें कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखा रहे थे। कुछ दूरी पर खड़ा बेन उत्सुकता से सारी गतिविधियों को देख रहा था। तभी अचानक किसी बच्चे और औरत के चीखने की आवाज़ आई। हुआ यों था कि खेल-ही-खेल में मेइ ने अगाथा को उस तिज़ोरी में घुसाकर ताले का नंबर घुमा दिया था, जिससे दरवाज़ा बंद हो गया था। उसने मिस्टर एडमस को ऐसा करते हुए देखा था।

मिस्टर एडम्स ने तिज़ोरी के हैंडिल को कई तरह से घुमाया, लेकिन असफल रहे। निराश होकर उन्होंने कहा, "यह ताला खास नंबर मिलने से खुलेगा, और वह नंबर अभी सेट ही नहीं किया गया है।"

अगाथा की माँ पागलों की तरह चीख रही थी, "दरवाजा तोड़ दो! मेरी बच्ची मर जाएगी! कोई कुछ तो करो," बेतहाशा दरवाज़े को पीटती जा रही थी।

"आसपास कोई ऐसा आदमी नहीं है जो इस दरवाज़े को खोल सके," एडम्स साहब ने काँपती आवाज़ में कहा, "हे भगवान! स्पेंसर, अब हम क्या करें?"

एनाबेल ने जिमी की तरफ़ ऐसे देखा मानो उसकी आँखें जिमी से कह रही हों कि क्या तुम कुछ नहीं कर सकते। जिमो ने एनाबेल से कहा, "क्या तुम मुझे यह फूल वापस कर दोगी?"

एनाबेल को विश्वास नहीं हुआ कि उसने ठीक सुना है, फिर भी उसने अपने बालों में लगा गुलाब निकालकर जिमी के हाथ में पकड़ा दिया। जिमी ने अपना कोट उतार फेंका और उस गुलाब को जेब में डालकर वह कमीज़ की बाँहें मोड़ने लगा। रॉल्फ़ स्पेंसर की जगह अब जिमी वैलेंटाइल ने ले ली थी। "आप सभी लोग दरवाज़े के सामने से हट जाएँ।" वहाँ खड़े लोगों को जिमी ने आदेश दिया।

आस-पास की भीड़ से बेखबर होकर उसने अपनी अटैची खेलकर औज़ार निकाले। साथ ही, धीरे-धीरे सीटी भी बजाने लगा। काम करते समय अक्सर वह ऐसा ही करता था। अगले ही पल जिमी का प्यारा बर्मा स्टील के दरवाज़े में बड़ी आसानी से छेद कर रहा था। चारों ओर सन्नाटा छा गया था और लोग मंत्रमुग्ध होकर उसकी कारीगरी को देख रहे थे।

कुछ ही देर में जिमी ने तिज़ोरी का दरवाज़ा खोल दिया था। बेहोशी की कगार पर पहुँच चुकी अगाथा को उसकी माँ ने गोद में उठा लिया और बेतहाशा चूमने लगी।

जिमी ने अपना कोट पहना और चुपचाप बैंक के दरवाज़े की ओर आगे बढ़ने लगा। तभी पीछे से उसे एनाबेल ने पुकारा, "रुको रॉल्फ़! कहाँ जा रहो हो?" लेकिन वह नहीं रुका। बेन प्राइस दरवाज़े पर लगभग उसका रास्ता रोके खड़ा था।

"हैलो, बेन!" जिमी ने फीकी मुसकान के साथ कहा, "आखिर, तुम यहाँ भी पहुँच ही गए। चलो, चलते हैं। मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता।"

"लगता है, आपसे कोई गलती हो गई है मिस्टर स्पेंसर," बेन प्राइस की प्रतिक्रिया अप्रत्याशित थी। "मैं आपको नहीं जानता। बाहर खड़ी बग्घी शायद आप ही का इंतज़ार कर रही है, है न?"

इतना कहकर बेन प्राइस मुड़ा और बाहर निकलकर ओझल हो गया।

—ओ० हेनरी

शब्द-अर्थ

तन्मयता — तल्लीनता
खुशखबरी — अच्छी खबर
मासूमियत — मासूम होने का भाव
हाथापाई — उठा-पटक
अनमोल — जिसका कोई मोल न हो
वारदात — भीषण घटना
व्यक्तित्व — व्यक्ति के विशिष्ट गुणों से निर्मित स्वरूप
बहुमूल्य — अधिक मूल्य वाला
वार्डन — रक्षक, अधीक्षक
क्षमादान — माफ़ी
अनदेखा — बिना देखा
प्रख्यात — अति प्रसिद्ध
बेहतरीन — सबसे अच्छा
निरीक्षण करना — गौर से देखना
आकर्षक — सुंदर
सुपुर्द करना — सौंपना
असफल — जो सफल न हो

दिलचस्पा — रुचि
बेतहाशा — बिना सोचे-समझे
प्रतिक्रिया — किसी कार्य के फलस्वरूप उत्पन्न भाव या क्रिया
मंत्रमुग्ध होना — वश में होना
कारीगरी — कलाकारी
अप्रत्याशित — जिसकी आशा न हो

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) प्रख्यात जासूस का क्या नाम था?

(ख) किसे क्षमादान दिलाने में ज़्यादा समय लग गया?

(ग) बच्ची कहाँ बंद हो गई थी?

(घ) जिमी वैलेंटाइन जेल में क्या कर रहा था?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) जेल की दुकान में जिमी वैलंटाइन बड़ी तन्मयता से क्या सिल रहा था?

☐ कपड़े ☐ जूते ☐ परदे ☐ मोजे

(ख) कहाँ पर हुई चोरी के लिए जिमी को चार साल की सज़ा हुई थी?

☐ लोगन स्पोर्ट ☐ रिचमंड इंडियाना ☐ स्प्रिंगफील्ड ☐ एलमोर

(ग) जिमी अपने मित्र को क्या भेंट करना चाहता था?

☐ फूल ☐ कपड़े ☐ डॉलर ☐ औज़ार

2. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(क) जिमी को सज़ा क्यों हुई थी तथा उसके अनमोल खज़ाने में क्या-क्या था?

(ख) एक सप्ताह तक जिमी ने क्या-क्या कार्य किए?

(ग) जिमी एलमोर जाकर रॉल्फ़ डी० स्पेंसर क्यों बन गया और साल के अंत तक उसकी स्थिति कैसी थी?

(घ) अगाथा के तिज़ोरी में बंद हो जाने पर जिमी ने क्या किया?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग व प्रत्यय अलग-अलग कीजिए।

	उपसर्ग	शब्द	प्रत्यय
(क) विशेषता	_____	_____	_____
(ख) बेहोशी	_____	_____	_____

(ग) स्वाभाविक _____ _____ _____

(घ) असफलता _____ _____ _____

2. रेखांकित पदों के विलोम लिखिए।

(क) मधुर संगीत – _____ (ख) ईमानदार ज़िंदगी – _____

(ग) पुराना धंधा – _____ (घ) पहला स्वाद – _____

(ङ) मज़बूत तिज़ोरी – _____ (च) चुस्त सूट – _____

3. निम्नलिखित रंगीन शब्दों के लिंग लिखिए।

(क) माइक ने उसे चाबी थमा दी। – _____

(ख) जिमी ने बड़ी लगन से अटैची साफ़ की। – _____

(ग) मैं तुम्हें अपने औज़ार भेंट करना चाहता हूँ। – _____

(घ) वे अपने परिवारवालों को तिज़ोरी दिखा रहे थे। – _____

4. निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन सर्वनाम शब्दों के भेद लिखिए।

(क) जिमी स्वयं बैंक पहुँच गया। – _____

(ख) तुम्हारे लिए खुशखबरी है। – _____

(ग) इनमें से कई तो जिमी ने स्वयं बनाए थे। – _____

(घ) उसने आज़ादी का स्वाद पहली बार चखा है। – _____

(ङ) लगता है आपसे काई गलती हुई है। – _____

क्रियात्मक गतिविधि

- बैंक की कार्यप्रणाली पता लगाकर लिखिए।
- विश्व प्रसिद्ध लेखकों की विदेशी कहानियाँ पढ़कर उनका संकलन कीजिए।
- इंटरनेट की सहायता से ओ० हेनरी का जीवन-परिचय पढ़िए।
- ऐसा क्या हुआ कि जिमी ने चोरी करना छोड़ाकर ईमानदारी का रास्ता अपना लिया? दो-दो छात्रों के जोड़े बनाकर आपस में बातचीत कीजिए।
- ''किसी भी काम में कुशल होना अच्छी बात है, पर उस कार्य से किसी को नुकसान नहीं होना चाहिए।''- अपने विचार लिखिए।
- कोई एक जासूसी कहानी स्वयं लिखिए।
- जेलके अधिकारी किस तरह अपना काम करते हैं। उनके पद, वेतन, कार्यों की रूपरेखा इत्यादि के बारे में लिखिए।

12 बिंदा

भीत-सी आँखोंवाली उस दुर्बल, छोटी और अपने-आप ही सिमटी-सी बालिका पर दृष्टि डालकर मैंने सामने बैठे सज्जन को, उनका भरा हुआ प्रवेशपत्र लौटाते हुए कहा– "आपने आयु ठीक नहीं भरी है। ठीक कर दीजिए, नहीं तो पीछे कठिनाई पड़ेगी।" "नहीं यह तो गत आषाढ़ में चौदह की हो चुकी" सुनकर मैंने कुछ विस्मित भाव से अपनी उस भावी विद्यार्थिनी को अच्छी तरह देखा, जो नौ वर्षीय बालिका की सरल चंचलता से शून्य थी और चौदह वर्षीय किशोरी के सलज्ज उत्साह से अपरिचित।

उसकी माता के संबंध में मेरी जिज्ञासा स्वगत न रहकर स्पष्ट प्रश्न ही बन गयी होगी, क्योंकि दूसरी ओर से कुछ कुंठित उत्तर मिला। मेरी दूसरी पत्नी है और आप तो जानती ही होंगी और उनके वाक्य को अधसुना ही छोड़कर मेरा मन स्मृतियों की चित्रशाला में दो युगों से अधिक समय की धूल के नीचे दबे बिंदा या विंध्येश्वरी के धुँधले चित्र पर अंगुली रखकर कहने लगा- ज्ञात है, अवश्य ज्ञात है।

बिंदा मेरी उस समय की बालसखी थी, जब मैंने जीवन और मृत्यु के अमिट अंतर को नहीं समझा था। अपने नाना और दादी के स्वर्ग-गमन की चर्चा सुनकर मैं बहुत गम्भीर मुख और आश्वस्त भाव से घर भर को सूचना दे चुकी थी कि जब मेरा सिर कपड़े रखने की अलमारी को छूने लगेगा, तब मैं निश्चय ही एक बार उनको देखने जाऊँगी। न मेरे इस पुण्य संकल्प को विरोध करने की किसी को इच्छा हुई और न मैंने एक बार मरकर कभी न लौट सकने का नियम जाना। ऐसी दशा में, छोटे-छोटे असमर्थ बच्चों को छोड़कर मर जाने वाली माँ की कल्पना मेरी बुद्धि में कहाँ ठहरती? मेरा संसार का अनुभव भी बहुत संक्षिप्त -सा था। अज्ञानावस्था से मेरा साथ, देने वाली

सफेद कुतिया सीढ़ियों के नीचे वाली अँधेरी कोठरी में आँख मूँदे पड़े रहने वाले बच्चों की इतनी सतर्क पहरेदार हो उठती थी कि उसका गुर्राना मेरी सारी ममता-भरी मैत्री पर पानी फेर देता था। भूरी पूसी भी अपने चूहे जैसे निःसहाय बच्चों को तीखे पैने दाँतों में ऐसी कोमलता से दबाकर कभी लाती, कभी ले जाती थी कि उनको कहीं एक दाँत भी न चुभ पाता था। ऊपर की छत के कोने पर कबूतरों का और बड़ी तस्वीर के पीछे गौरेया का जो भी घोंसला था, उसमें खुली हुई छोटी-छोटी चोंचों और उनमें सावधानी से भरे जाते दानों और कीड़े-मकौड़ों को भी मैं अनेक बार देख चुकी थी। बछिया को हटाते समय भी रँभा-रँभाकर घरभर को यह दुःखद समाचार सुनाने वाली अपनी श्यामा गाय की व्याकुलता भी मुझसे छिपी न थी। एक बच्चे को कंधे से चिपकाये और एक की अंगुली पकड़े हुए जो भिखारिन द्वार-द्वार फिरती थी, वह भी तो बच्चों के लिए ही कुछ माँगती रहती थी। अतः मैंने निश्चित रूप से समझ लिया था कि संसार का सारा कारोबार बच्चों को खिलाने-पिलाने, सुलाने आदि के लिए ही हो रहा है और इस महत्त्वपूर्ण कर्तव्य में भूल न होने देने का काम माँ नामधारी जीवों को सौंपा गया है और बिंदा के भी तो माँ थीं, जिन्हें हम पंडिताइन चाची और बिंदा नयी अम्मा कहती थी। वे अपनी गोरी, मोटी देह को रंगीन साड़ी से सजे-कसे, चारपाई पर बैठकर फूले गाल और चिपटी-सी नाक के दोनों ओर नीले कांच के बटन-सी चमकती हुई आँखों से मोहन को तेल मलती रहती थीं। उनकी विशेष कारीगरी से सँवारी पाटियों के बीच से लाल स्याही की मोटी लकीर-सा सिंदूर, उनींदी-सी आँखों में काले डोरे के समान लगने वाला काजल, चमकीले कर्णफूल, गले की माला, नगदार रंग-बिरंगी चूड़ियाँ और घुँघरूदार बिछुए मुझे बहुत भाते थे, क्योंकि ये सब अलंकार उन्हें गुड़िया की समानता दे देते थे।

यह सब तो ठीक था, पर उनका व्यवहार विचित्र-सा जान पड़ता था। सर्दी के दिनों में जब हमें धूप निकलने पर जगाया जाता था, गर्म पानी से हाथ-मुँह धुलाकर मोजे, जूते और ऊनी कपड़ों से सजाया जाता था और मना-मनाकर गुनगुना दूध पिलाया जाता था, तब पड़ोस के घर में पंडिताइन चाची का स्वर उच्च से उच्चतर होता रहता था। यदि उस गर्जन-तर्जन कोई अर्थ समझ में न आता, तो उसे श्यामा के रँभाने के समान स्नेह का प्रदर्शन भी समझ सकती थी, परंतु उसकी शब्दावली परिचित होने के कारण ही कुछ उलझन पैदा करने वाली थी। 'उठती है या आऊँ', 'बैल के-से दीदे क्या निकाल रही है', 'मोहन का दूध कब गर्म होगा', 'अभागी मरती भी नहीं' आदि वाक्यों में जो कठोरता की धारा बहती रहती थी, उसे मेरा अबोध मन भी जान ही लेता था।

कभी-कभी जब मैं ऊपर की छत पर जाकर उस घर की कथा समझने का प्रयास करती, तब मैली धोती लपेटे हुए बिंदा ही आँगन से चौके तक फिरकनी-सी नाचती दिखाई देती। उसका कभी झाड़ू देना, कभी आग जलाना, कभी आँगन के नल से कलसी में पानी लाना, कभी नयी अम्मा को दूध का कटोरा देने जाना, मुझे बाजीगर के तमाशा जैसे लगता था; क्योंकि मेरे लिए तो वे सब कार्य असंभव-से थे, पर जब उस विस्मित कर देने वाले कौतुक की उपेक्षा कर पंडिताइन चाची का कठोर स्वर गूँजने लगता, जिसमें कभी-कभी पंडित जी की घुड़की का पुट भी रहता था, तब न जाने किस दुःख की छाया मुझे घेरने लगती थी। जिसकी सुशीलता का उदाहरण देकर मेरे नटखटपन को रोका जाता था, वहीं बिंदा घर में चुपके-चुपके कौन-सा नटखटपन करती रहती है, इसे बहुत प्रयत्न करके भी मैं न समझ पाती थी। मैं एक भी काम नहीं करती थी और रात-दिन उधम मचाती रहती, पर मुझे तो माँ ने न मर जाने की आज्ञा दी और न ही आँखें निकाल लेने का भय दिखाया। एक बार मैंने पूछा भी–"क्या पंडिताइन चाची तुमरी तरह नहीं हैं?" माँ ने मेरी बात का अर्थ कितना समझा, यह तो पता नहीं, ना उनके संक्षिप्त "हैं" से न बिंदा की समस्या का समाधान हो सका और न मेरी उलझन सुलझ पायी।

बिंदा मुझसे कुछ बड़ी ही रही होगी, परंतु उसका नाटापन देखकर ऐसा लगता था, मानो किसी ने ऊपर से दबाकर उसे कुछ छोटा कर दिया हो। दो पैसों में आने वाली खँजड़ी के ऊपर चढ़ी हुई झिल्ली के समान पतले चर्म से मढ़े और भीतर की हरी-हरी नसों की झलक देने वाले उसके दुबले हाथ-पैर न जाने किस अज्ञात भय से अवसन्न रहते थे। कहीं से कुछ आहट होते ही उसका विचित्र रूप से चौंक पड़ना और पंडिताइन चाची का स्वर कान में पड़ते ही उसके सारे शरीर का थरथरा उठना, मेरे विस्मय को बढ़ा ही नहीं देता था, प्रत्युत् उसे भय में बदल देता था और बिंदा की आँखे तो मुझे पिंजरे में बंद चिड़िया की याद दिलाती थीं।

एक बार जब दो-तीन करके तारे गिनते-गिनते उसने एक चमकीले तारे की ओर अंगुली उठाकर कहा–"वह रही मेरी अम्मा", तब तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। क्या सबकी एक अम्मा तारों में होती है और एक घर में? पूछने पर बिंदा ने अपने ज्ञान-कोष में से कुछ कण मुझे दिए और तब मैंने समझा कि जिस अम्मा को ईश्वर बुला लेता है, वह तारा बनकर ऊपर से बच्चों को देखती है और जो बहुत सजधज से घर में आती है, वह बिंदा की नयी अम्मा जैसी होती हे। मेरी बुद्धि सहज ही पराजय स्वीकार करना नहीं जानती, इसी से मैंने सोचकर कहा–"तुम नयी अम्मा को पुरानी अम्मा क्यों नहीं कहती, फिर वे न नयी रहेंगी और न डाँटेगी।"

बिंदा को मेरा उपाय कुछ जँचा नहीं, क्योंकि वह तो अपनी पुरानी अम्मा को खुली पालकी में लेटकर जाते और नयी को बंद पालकी में बैठकर आते देख चुकी थी, अतः किसी को भी पदच्युत करना उसके लिए कठिन था।

पर उसकी कथा से मेरा मत तो सचमुच आकुल हो उठा, अतः उसी रात को मैंने माँ से बहुत अनुनय पूर्वक कहा–"तुम कभी तारा न बनना, चाहे भगवान कितना ही चमकीला तारा बनावें।" माँ बेचारी मेरी विचित्र मुद्रा पर विस्मित होकर कुछ बोल भी न पायी थीं कि मैंने अकुंठित भाव से अपना आशय प्रकट कर दिया–"नहीं तो पंडिताइन चाची जैसी नयी अम्मा पालकी में बैठकर आ जाएगी और फिर मेरा दूध, बिस्कुट, जलेबी सब बंद हो जाएगी और मुझे बिंदा बनना पड़ेगा।" माँ का उत्तर तो मुझे स्मरण नहीं, पर इतना याद है कि उस रात उनकी धोती का छोर मुट्ठी में दबाकर ही मैं सो पायी थी।

बिंदा के अपराध तो मेरे लिए अज्ञात थे; पर पंडिताइन चाची के न्यायालय से मिलने वाले दंड के सब रूपों से मैं परिचित हो चुकी थी। गर्मी की दोपहर में मैंने बिंदा को आँगन की जलती धरती पर बार-बार पैर उठाते और रखते हुए घंटो खड़े देखा था, चौके के खंभे से दिन-दिनभर बँधा पाया था और भूख से मुरझाये मुख के साथ पहरों नयी अम्मा और खटोले में सोते मोहन पर पंखा झलते देखा था। उसे अपराध का ही नहीं, अपराध के अभाव का भी दंड सहना पड़ता था, इसी से पंडित जी

की थाली में पंडिताइन चाची का काला, मोटा और घुँघराला बाल निकलने पर भी दंड बिंदा को मिला। उसके छोटे-छोटे हाथों से धुल न सकने वाले, उलझे, तेलहीन बाल भी अपने स्वाभाविक भूरेपन और कोमलता के कारण मुझे बड़े अच्छे लगते थे। जब पंडिताइन चाची की कैंची ने उन्हें कूड़े के ढेर पर बिखराकर, उनके स्थान को बिल्ली की काली धारियों जैसी रेखाओं से भर दिया, तो मुझे रुलाई आने लगी, पर बिंदा ऐसे बैठी रही, मानो सिर और बाल दोनों नयी अम्मा के ही हों।

और एक दिन याद आता है। चूल्हे पर चढ़ाया दूध उफना जा रहा था। बिंदा ने नन्हें-नन्हें हाथों से दूध की पतीली उतारी अवश्य, पर वह उसकी अंगुलियों से छूटकर गिर पड़ी। खौलते दूध से जले पैरों के साथ दरवाज़े पर खड़ी बिंदा का रोना देख मैं तो हतबुद्धि-सी हो गई। पंडिताइन चाची से कहकर वह दवा क्यों नही लगवा लेती, यह समझना मेरे लिए कठिन था? उस पर जब बिंदा मेरा हाथ अपने जोर-से धड़कते हुए हृदय से लगाकर कहीं, छिपा देने की आवश्यकता बताने लगी, तब तो मेरे लिए सब कुछ रहस्यमय हो उठा।

उसे मैं अपने घर में खींच लाई अवश्य, पर न ऊपर के खंड में माँ के पास ले जा सकी और न छिपाने का स्थान खोज सकी। इतने में दीवारें लाँघकर आने वाले, पंडिताइन चाची के उग्र स्वर ने भय से हमारी दिशाएँ रूँध दीं, इसी से हड़बड़ाहट में हम दोनों उस कोठरी में जा घुसीं, जिसमें गाय के लिए घास भरी जाती थी। मुझे तो घास की पत्तियाँ भी चुभ रही थीं, कोठरी का अंधकार भी कष्ट दे रहा था, पर बिंदा अपने जले पैरों को घास में छिपाए और दोनों ठंडे हाथों से मेरा हाथ दबाए ऐसे बैठी थी, मानो घास का चुभता हुआ ढेर रेशमी बिछौना बन गया हो।

मैं तो शायद सो गई थी, क्योंकि जब घास निकालने के लिए आया हुआ गोपी इस अभूतपूर्व दृश्य की घोषणा करने के लिए कोलाहल मचाने लगा, तब मैंने आँखें मलते हुए पूछा–"क्या सवेरा हो गया?"

माँ ने बिंदा के पैरों पर तिल का तेल और चूने का पानी लगाकर जब अपने विशेष संदेशवाहक के साथ उसे घर भिजवा दिया, जब उसकी क्या दशा हुई, यह बताना कठिन है, पर इतना तो मैं जानती हूँ कि पंडिताइन चाची के न्याय विधान में न क्षमा का स्थान था, न अपील का अधिकार।

फिर कुछ दिनों तक मैंने बिंदा को घर-आँगन में काम करते नहीं देखा। उसके घर जाने से माँ ने मुझे रोक दिया था, पर वे प्रायः कुछ अंगूर और सेब लेकर वहाँ से आती थीं। बहुत खुशामद करने पर रूकिया ने बताया कि उस घर में महारानी आई हैं। "क्या वे मुझसे नहीं मिल सकती" पूछने पर वह मुँह में कपड़ा ठूँस कर हँसी रोकने लगी। जब मेरे मन को

कोई समाधान न हो सका, तब मै एक दिन दोपहर को सभी की आँख बचाकर बिंदा के घर पहँची। नीचे के सुनसान खंड में बिंदा अकेली एक खाट पर पड़ी थी। आँखें गड्ढे में धँस गयी थीं, मुख दानों से भरकर न जाने कैसा हो गया था और मैली-सी चादर के नीचे छिपा शरीर बिछौने से भिन्न ही नहीं जान पड़ता था। डॉक्टर, दवा की शीशियाँ, सिर पर हाथ फेरती हुई माँ और बिछौने से भिन्न ही नहीं जान पड़ता था। डॉक्टर, दवा की शीशियाँ, सिर पर हाथ फेरती हुई माँ और बिछौने के चारों ओर चक्कर काटते हुए बाबूजी के बिना भी बीमारी का अस्तित्व है, यह मैं नहीं जानती थी। इसी से उस अकेली बिंदा के पास खड़ी होकर मैं चकित-सी चारों ओर देखती रह गयी। बिंदा ने ही कुछ संकेत और कुछ अस्पष्ट शब्दों में बताया कि नयी अम्मा मोहन के साथ ऊपर खंड में रहती हैं, शायद चेचक के डर से। सवेरे-शाम बरौनी आकर उसका काम कर जाती है।

फिर तो बिंदा को देखना संभव न हो सका, क्योंकि मेरे इस आज्ञा-उल्लंघन से माँ बहुत चिंतित हो उठी थीं।

एक दिन सवेरे ही रूकिया ने उनसे न जाने क्या कहा कि वे रामायण बंद कर बार-बार आँखें पोंछती हुई बिंदा के घर चल दीं। जाते-जाते वे मुझे बाहर ने निकलने का आदेश देना नहीं भूली थीं, इसी से इधर-उधर से झाँककर देखना आवश्यक हो गया। रूकिया मेरे लिए त्रिकालदर्शी से कम न थी, परंतु वह विशेष अनुनय-विनय के बिना कुछ बताती ही नहीं थी और उससे अनुनय-विनय करना मेरे आत्म-सम्मान के विरुद्ध था। अतः खिड़की से झाँककर मैं बिंदा के दरवाजे पर जमा आदमियों के अतिरिक्त और कुछ न देख सकी और इस प्रकार की भीड़ से विवाह और बारात का जो संबंध है, उसे मैं जानती थी। तब क्या उस घर में विवाह हो रहा है और उसने मुझे बुलाया तक नहीं। इस अचिंत्य अपमान से आहत मेरा मन सब गुड़ियों को साक्षी बनाकर बिंदा को किसी भी शुभ कार्य में न बुलाने की प्रतिज्ञा करने लगा।

कई दिन तक बिंदा के घर झाँक-झाँककर जब मैंने माँ से उसके ससुराल से लौटने के संबंध में प्रश्न गयी। उस दिन से मैं प्रायः चमकीले तारे के आस-पास फैले छोटे तारों में बिंदा को ढूँढ़ती रहती, पर इतनी दूर से पहचानना क्या संभव था?

तब से कितना समय बीत चुका है, पर बिंदा और उसकी नयी अम्मा की कहानी शेष नहीं हुई। कभी हो सकेगी या नहीं, इसे कौन बता सकता है?

—महादेवी वर्मा

लेखिका परिचय

आधुनिक युग की सशक्त लेखिका, महादेवी वर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले में 26 मार्च, 1907 को हुआ था। सन् 2007 को महादेवी जी की जन्म शताब्दी के रूप में मनाया गया। कविता के क्षेत्र मे आधुनिक मीरा कही जाने वाली इस कवयित्री की प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं- नीहार, रश्मि, नीरजा, यांध्यगीत, दीपशिखा। प्रमुख गद्य रचनाएँ हैं- अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी, मेरा परिवार। ललित निबंध-क्षणदा। सन् 1943 में उन्हें मंगलाप्रसाद परितोषक प्रदान किया गया। उन्हें भारत-भारती पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। उनकी मृत्यु 11 सितंबर, 1987 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद नगर में हुई। वर्ष 1988 में मरणोपरांत उन्हें भारत सरकार ने 'पद्म-विभूषण' से सम्मानित किया गया।

शब्द-अर्थ

दुर्बल	—	कमजोर	**विस्मित**	—	आश्चर्यचकित
सलज्ज	—	लज्जा सहित	**अपरिचित**	—	अंजान
जिज्ञासा	—	जानने की इच्छा	**बालसखी**	—	बचपन की सहेली
आश्वस्त	—	निश्चिंत	**संकल्प**	—	प्रतिज्ञा/प्रण

फिरकनी	—	फिरकी की तरह घूमना	**तुमरी**	—	तुम्हारी
अवसन्न	—	उदास	**खिन्न**	—	उत्साहहीन
पदच्युत करना	—	पद से गिरना	**अनुनय**	—	विनय, प्रार्थना
अकुंठित	—	कुंठा से मुक्त	**रहस्यमय**	—	राज से परिपूर्ण, छिपी हुई बात से युक्त
कोलाहल	—	शोर	**अचिंत्य**	—	चिंता रहित/चिंता से परे

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) बिंदा का पूरा नाम क्या था?

(ख) बिंदा कौन थी?

(ग) बिंदा की नई अम्मा को लेखिका क्या कहती थीं?

(घ) लेखिका के घर में कौन-कौन से पशु-पक्षी थे?

(ङ) लेखिका की माँ ने उन्हें बिंदा से मिलने के लिए क्यों मना कर दिया था?

लिखित

1. अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न–

बिंदा मुझसे कुछ बड़ी ही रही होगी, परंतु उसका नाटापन देखकर ऐसा लगता था, मानो किसी ने ऊपर से दबाकर उसे कुछ छोटा कर दिया हो। दो पैसों में आने वाली खँजड़ी के ऊपर चढ़ी हुई झिल्ली के समान पतले चर्म से मढ़े और भीतर की हरी-हरी नसों की झलक देने वाले उसके दुबले हाथ-पैर न जाने किस अज्ञात भय से अवसन्न रहते थे। कहीं से कुछ आहट होते ही उसका विचित्र रूप से चौंक पड़ना और पंडिताइन चाची का स्वर कान में पड़ते ही उसके सारे शरीर का थरथरा उठना, मेरे विस्मय को बढ़ा ही नहीं देता था, प्रत्युत् उसे भय में बदल देता था और बिंदा की आँखे तो मुझे पिंजरे में बंद चिड़िया की याद दिलाती थीं।

एक बार जब दो-तीन करके तारे गिनते-गिनते उसने एक चमकीले तारे की ओर अंगुली उठाकर कहा—''वह रही मेरी अम्मा'', तब तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। क्या सबकी एक अम्मा तारों में होती है और एक घर में? पूछने पर बिंदा ने अपने ज्ञात-कोष में से कुछ कण मुझे दिए और तब मैंने समझा कि जिस अम्मा को ईश्वर बुला लेता है, वह तारा बनकर ऊपर से बच्चों को देखती है और जो बहुत सजधज से घर में आती है, वह बिंदा की नयी अम्मा जैसी होती है। मेरी बुद्धि सहज ही पराजय स्वीकार करना नहीं जानती, इसी से मैंने सोचकर कहा—''तुम नयी अम्मा को पुरानी अम्मा क्यों नहीं कहती, फिर वे न नयी रहेंगी और न डाँटेगी।''

- **ऊपर लिखे अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

(क) बिंदा का कद देखकर लेखिका को कैसा लगता था?

(ख) पंडिताइन चाची का स्वर सुनते ही बिंदा की क्या हालत होती थी?

(ग) बिंदा की आँखे लेखिका को किसकी याद दिलाती थीं और क्यों?

(घ) बिंदा ने अपनी अम्मा के विषय में क्या बताया?

(ङ) लेखिका की क्या विशेषता थी? उन्होंने क्या सुझाव दिया?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) लेखिका को किसे देखकर बिंदा की याद आई?

(ख) बचपन में लेखिका की माँ के संबंध में क्या धारणा थी?

(ग) लेखिका की माँ की क्या विशेषता थी?

(घ) बिंदा को किस अपराध का दंड मिला?

(ङ) लेखिका ने अपनी माँ से तारा न बनने का अनुरोध क्यों किया?

(च) बिंदा की नई अम्मा गुड़िया जैसी क्यों प्रतीत होती थीं?

(छ) लेखिका को बिंदा की नई अम्मा का व्यवहार अपनी माँ से अलग क्यों जान पड़ता था?

(ज) बिंदा घर के कौन-कौन से काम करती थी?

(झ) बिंदा को कोठरी की घास का चुभता हुआ ढेर रेशमी बिछौने जैसा क्यों लगा?

(ञ) बिंदा पंडिताइन चाची की आवाज सुनकर क्यों सहम जाती थी?

(ट) ''पंडिताइन चाची के न्याय विधान'' में न क्षमा का स्थान था, न अपील का अधिकार।

(i) यह वाक्य किसने किस संदर्भ में कहा?

(ii) यदि आप लेखिका की जगह होते तो क्या करते?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित वाक्यों में 'काल' निर्देशानुसार बदलिए–

(क) मैं बिंदा की नई अम्मा को पंडिताइन चाची कहती हूँ। (भूतकाल में)

_____

(ख) मेरे लिए घर के सब काम करना असंभव था। (वर्तमानकाल में)

_____

(ग) मैंने मन-ही-मन में न बुलाने का संकल्प कर लिया। (भविष्यत्काल में)

_____

2. वाच्य तीन प्रकार के होते है–

(क) कर्तृवाच्य – जिस वाक्य में कर्ता की प्रधानता होती है और क्रिया कर्ता के अनुसार होती है, उसे 'कर्तवाच्य' कहते हैं। जैसे- रजिया कपड़े धोती है।

(ख) कर्मवाच्य – जिस वाक्य में कर्म की प्रधानता होती है और क्रिया (का लिंग, वचन) कर्म के अनुसार होती है, उसे 'कर्मवाच्य' कहते हैं। जैसे– कपड़े रजिया द्वारा धोए जाते हैं।

(ग) भाववाच्य वाक्य– जिस वाक्य में क्रिया कर्ता और कर्म को छोड़कर भाव के अनुसार होती है, उसे (भाववाच्य) कहते हैं। जैसे- रजिया से कपड़े नहीं धोए जाते।

बिंदा से कहा नहीं गया

- **नीचे लिखे वाक्यों के वाच्य पहचान कर लिखिए–**

(क) लड़कियाँ फल खाती हैं। _____

(ख) लड़के क्रिकेट खेलते हैं। _____

(ग) लड़कियों से फल खाया जाता है। _____

(घ) लड़कों से खेला नहीं जाता। _____

3. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए–

(क) अन्वेषण _____ + _____ (ख) अधिकांश _____ + _____

(ग) स्वागत _____ + _____ (घ) सप्तर्षि _____ + _____

(ङ) जलाशय _____ + _____ (च) मात्राज्ञा _____ + _____

क्रियात्मक गतिविधि

- **बालश्रम एक सामाजिक बुराई है। बिंदा जैसी किसी असहाय बालिका/बालक के विषय में सूचना देते हुए दूरदर्शन के निदेशक महोदय को पत्र लिखिए।**
- **मीडिया द्वारा सरकार और सामाजिक कार्यकर्ताओं को जागरूक करते हुए पीड़ित बालिका/बालक के जीवन को सुरक्षित कीजिए।**
- **अगर बिंदा की जगह आप होते तो क्या करते अपने विचार को लिखिए।**
- **बालश्रम करवाना एक कानूनिक अपराध हैं इसे खत्म करने के लिए हमें बालश्रम को खत्म करना होगा। कैसे? लिखिए।**
- **हम अपने जीवन को किस पर सुरक्षित बना सकते है। इस पर अपने शब्दों की चर्चा कीजिए।**

चिकित्सा का चक्कर 13

मैं बिल्कुल हट्टा-कट्टा आदमी हूँ। देखने में मुझे कोई भला आदमी रोगी नहीं कह सकता। मेरी आयु लगभग पैंतीस वर्ष की है। आज तक कभी बीमार नहीं पड़ा। लोगों को बीमार देखता था, तो मेरी बड़ी इच्छा होती थी कि किसी दिन मैं भी बीमार पड़ता तो अच्छा होता। मेरे बीमार पड़ने पर हंटले के बिस्कुट, जिन्हें साधारण अवस्था में घरवाले खाने नहीं देते, खाने को मिलते। 'यू० डी० क्लोन' की शीशियाँ सिर पर कोमल करों से बीबी उँडेलकर मलती और सबसे बड़ी इच्छा तो यह थी कि दोस्त लोग आकर मेरे सामने बैठते और गंभीर मुद्रा धारण करके पूछते – "कहिए, बेढब जी, कैसी तबीयत है? किसकी दवा हो रही है? कुछ फायदा है?" जब कोई रोनी सूरत बनाकर ऐसे प्रश्न करता, जब मुझे बड़ा मजा आता। उस समय मैं आनंद की सीमा के उस पार पहुँच जाता।

हाँ, तो एक दिन मैं हॉकी खेलकर आया। कपड़े उतारे, स्नान किया। शाम को ही भोजन कर लेने की मेरी आदत है, पर आज मैच में रिफ्रेशमेंट जरा ज्यादा खा गया था, इसलिए भूख न थी। श्रीमती जी ने खाने को पूछा। मैंने कह दिया कि आज स्कूल से मिठाई खाकर आया हूँ, कुछ विशेष भूख नहीं है। उन्होंने कहा– "विशेष न सही, साधारण सही। मुझे आज सिनेमा जाना है। तुम अभी खा लेते तो अच्छा था। संभव है, मेरे आने में देर हो।"

मैंने फिर इंकार नहीं किया, उस दिन थोड़ा ही खाया। बारह पूरियाँ थीं और वही रोज वाली आधा पाव मलाई खा चुकने के बाद पता चला कि प्रसाद जी के यहाँ से बाग बाजार से रसगुल्ले आए हैं। रस तो होगा ही। कल तक संभव है कुछ खट्टा हो जाए। छह रसगुल्ले निगलकर मैंने चारपाई पर धरना दिया। रसगुल्ले छायावादी कविताओं की भाँति सूक्ष्म नहीं थे, स्थूल थे।

एकाएक तीन बजे रात को नींद खुली। नाभि के नीचे दाहिनी ओर पेट में मालूम पड़ता था, कोई बड़ी-बड़ी सुइयाँ लेकर कोंच रहा है, परंतु मुझे भय नहीं मालूम हुआ, क्योंकि ऐसे ही समय के लिए औषधियों का राजा, रोगों का रामबाण; 'अमृतधारा' की एक शीशी सदा मेरे पास रहती है। मैं तुरंत उसकी एक बूँद पी गया। दोबारा दवा पी। तिबारा।

प्रातःकाल शीशी समाप्त हो गई। दर्द में किसी प्रकार की भी कमी न हुई। प्रातःकाल एक डॉक्टर के यहाँ आदमी भेजना पड़ा।

डॉक्टर साहब सरकारी अस्पताल के थे। वे एक इक्के पर तशरीफ लाए। सूटवाले का इक्के पर आना वैसा ही मालूम हुआ, जैसा लीडरों का

मोटर छोड़कर पैदल चलना। मैं अपना पूरा हाल भी न कह पाया था कि वे बोले– ''जबान दिखलाइए।'' प्रेमियों को जो मजा प्रेमिकाओं की आँखें देखने में आता है, शायद वैसा ही डॉक्टरों को मरीजों की जीभ देखने में आता है। डॉक्टर महोदय मुसकुराए और बोले– ''घबराने की कोई बात नहीं। दवा पीजिए, दो खुराक पीते-पीते आपका दर्द वैसे ही गायब हो जाएगा, जैसे हिंदुस्तान से सोना गायब हो रहा है।'' हाय! मैं तो दर्द से बेचैन था और डॉक्टर साहब साहित्य का मजा लूट रहे थे। चलते-चलते बोले– ''अस्पताल खुला न होगा, नहीं तो आपको दवा मँगानी न पड़ती। खैर, चंद्रकला फार्मेसी से दवा मँगवा लीजिएगा। वहाँ दवाइयाँ ताजी मिलती हैं।'' गरम बोतलों से सेक भी आरंभ हुआ। सेकते-सेकते छाले पड़ गए, दर्द में कमी न हुई।

दोपहर हुई। शाम हुई, पर दर्द ने मुझ पर ऐसा प्रेम दिखलाया कि हटने का नाम न लेता था। लोग देखने के लिए आने लगे। मेरे घर पर मेला लगने लगा। ऐसे-ऐसे लोग आए कि कहाँ तक लिखूँ? हाँ, एक विशेषता थी, जो भी आता, एक-न-एक नुसखा अपने साथ लेता आता था। किसी ने कहा– ''अजी कुछ नहीं, हींग पिला दो।'' किसी ने कहा– ''चूना खिला दो।'' खाने के लिए सिवा जूते के और कोई चीज बाकी नहीं रह गई, जिसे लोगों ने न बताया हो।

तीन दिन बीत गए, दर्द में कमी न हुई। लोग आते मुझे देखने के लिए, पर किसी-न-किसी विषय पर चर्चा छिड़ जाती थी, प्रसाद जी का अमुक नाटक रंगमंच की दृष्टि से कैसा है?'' रायकृष्ण दास हफ्ते में नौ बार दाढ़ी क्यों बनाते हैं?'' मुझे भी कुछ बोलना ही पड़ता था। ऊपर से पान और सिगरेट की चपत अलग। भला दर्द में क्या कमी होती?

आखिर में लोगों ने कहा कि तुम कब तक इस तरह पड़े रहोगे? किसी दूसरे की दवा करो। लोगों की सलाह से डॉ0 चूहानाथ कातरजी को बुलाने की सलाह हुई। आप लोग डॉक्टर साहब का नाम सुनकर हँसेंगे, पर यह मेरा दोष नहीं है, उनके माँ-बाप का दोष है। यदि मुझे उनका नाम रखना पड़ता, तो अवश्य ही कोई साहित्यिक नाम रखता। वे 'यथा नाम तथा गुण' वाले व्यक्ति थे। उनकी फीस आठ रुपये थी और मोटर का एक रुपया अलग। वे लंदन से एफ० आर० सी० एस० की डिग्री लेकर आए थे।

कुछ लोगों का सौंदर्य रात में बढ़ जाता है, वैसे ही डॉक्टरों की फीस रात में बढ़ जाती है। खैर, डॉक्टर साहब बुलाए गए। आते ही हमारे हाल पर रहम किया और बोले– ''धीरज रखिए, मिनटों में दर्द गायब हुआ जाता है। थोड़ा पानी गर्म करवाइए, तब तक दवा मँगवा लीजिए।'' एक पर्चे पर उन्होंने दवा लिखी, पानी गरम हुआ। दो रुपये की दवा आई। डॉक्टर बाबू ने तुरंत एक छोटी-सी पिचकारी निकाली, उसमें एक लंबी सुई लगाई, पिचकारी में दवा भरी और मेरे पेट में वह सुई कोंचकर चुभो दी।

डॉक्टर साहब कुछ कहकर और मुझे सांत्वना देकर चले गए। उसके बाद मुझे नींद आ गई और मैं सो गया। मेरी नींद कब खुली, कह नहीं सकता, पर दर्द में कमी हो चली थी और दूसरे दिन प्रातःकाल पीड़ा रफूचक्कर हो गई थी।

कोई दो हफ्ते मुझे पूरी तरह स्वस्थ होने में लगे। बराबर डॉ0 चूहानाथ कातर जी की दवा पीता रहा। अठारह आने की शीशी प्रतिदिन आती थी। दवा के स्वाद को क्या कहना, शायद मुर्दे के मुँह में डाल दी जाए, तो वह तिलमिला उठे। पंद्रह दिन के बाद मैं डॉक्टर साहब के घर गया, उन्हें धन्यवाद देने के लिए। मैंने पूछा कि अब जो दवा पीने की कोई आवश्यकता न होगी। वे बोले– ''यह तो आपकी इच्छा है, पर यदि काफी एहतियात न करेंगे, तो आपको 'अपेंडिसाइटिस' हो जाएगा। आपकी श्रीमती जी बड़ी भाग्यवती है। अगर छह घंटे की देर हो जाती, जो उन्हें जिंदगीभर रोना पड़ता। यह तो कहिए कि आपने समय पर मुझे बुलवा लिया, अभी कुछ दिन दवा पीजिए।''

इसी बीच डॉक्टर महोदय ने ऐसे-ऐसे मर्जों के नाम सुनाए कि मेरी तबीयत फड़क उठी। भला मुझे मर्ज हुए, जिनका नाम साधारण क्या बड़े पढ़े-लिखे लोग भी नहीं जानते। मालूम नहीं, ये मर्ज सब डॉक्टरों को मालूम हैं या कि केवल हमारे डॉक्टर कातर जी को ही मालूल हैं। खैर, मैंने दवा जारी रखी।

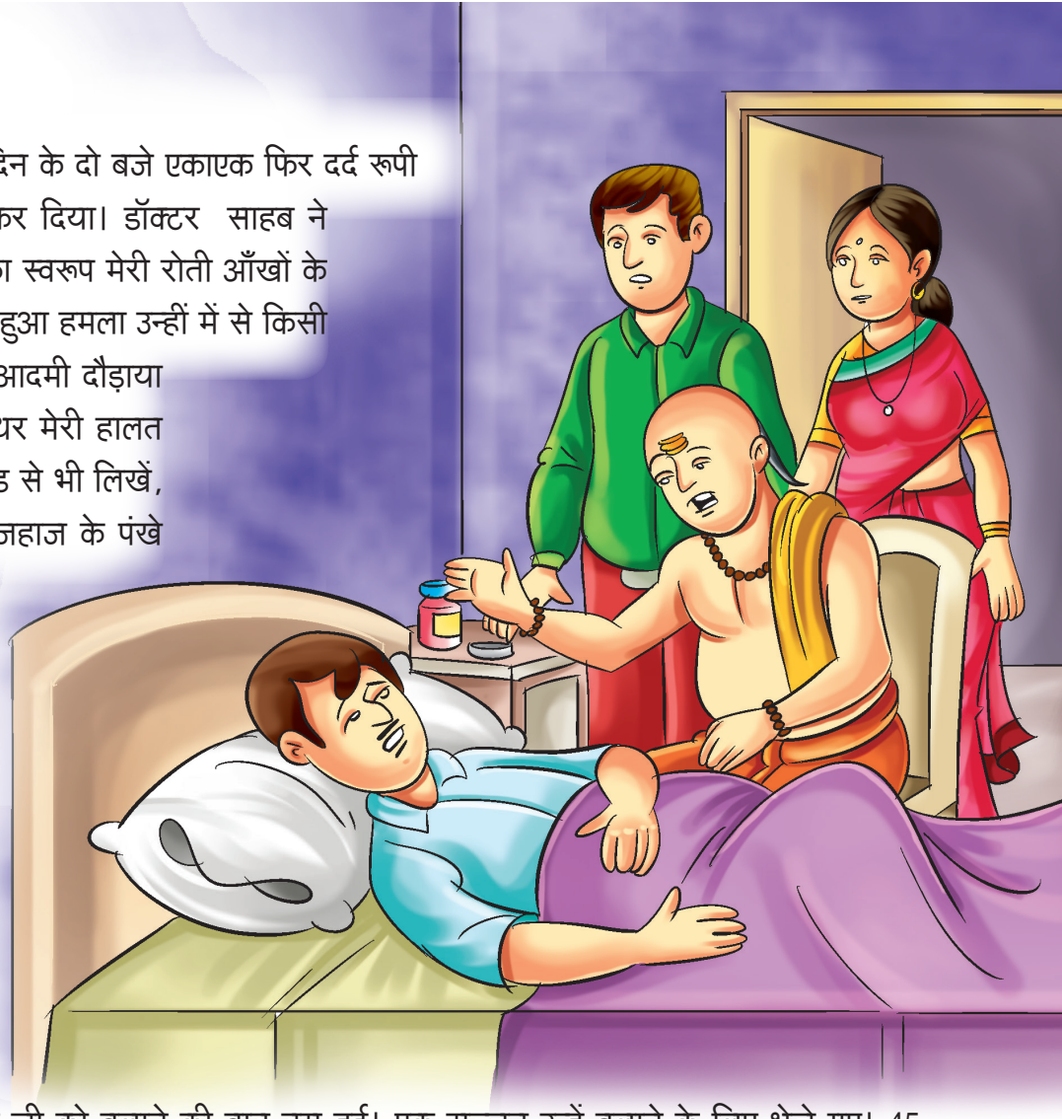

अभी एक सप्ताह भी पूरा न हुआ था कि दिन के दो बजे एकाएक फिर दर्द रूपी फौज ने मेरे शरीर रूपी किले पर हमला कर दिया। डॉक्टर साहब ने जिन भंयकर मर्जों का नाम लिया था, उनका स्वरूप मेरी रोती आँखों के सामने नृत्य करने लगा। मैं सोचने लगा कि हुआ हमला उन्हीं में से किसी एक मर्ज का। तुरंत डॉक्टर साहब के यहाँ आदमी दौड़ाया गया कि डॉक्टर साहब कहीं गए हुए हैं। इधर मेरी हालत क्या थी, उसका वर्णन यदि सरस्वती शॉर्टहैंड से भी लिखें, तो संभवतः समाप्त न हो। उधर मैं हवाई जहाज के पंखे की तेजी के समान करवटें बदल रहा था, इधर मित्रों और घरवालों की कांफ्रेंस हो रही थी कि अब किसे बुलाया जाए? पर निःशस्त्रीकरण सम्मेलन की भाँति कोई भी न तो किसी की बात मानता था और न ही कोई निश्चय ही हो पाता था।

मालूम नहीं, लोगों में क्या-क्या बहसें हुईं, कौन-कौन और आयुर्वेदाचार्य, रसज्ञसंजन, चिकित्सा मार्तंड के नाम लिए गए। अंत में कविराज पंडित सुखदेव शास्त्री जी को बुलाने की बात तय हुई। एक सज्जन उन्हें बुलाने के लिए भेजे गए। 45 मिनट बीत गए, परंतु न वैद्य जी आए, न भेजे गए सज्जन का ही कोई पता चला। एक ओर दर्द आयकर की तरह बढ़ता जा रहा था, दूसरी ओर उन लोगों को भी पता नहीं। बेचैनी और भी बढ़ी, अंत में जो साहब गए थे, लौटे। वे बोले– ''वैद्य जी ने बड़े गौर से पत्रा देखा और कहा कि अभी बुद्ध के संक्रांति वृत्त से शनि की स्थिरता है, इकतीस पल नौ विपल में शनि बाहर हो जाएगा और डेढ़ घड़ी एकादशी का योग है। इसके समाप्त होने पर मैं चलूँगा।'' सुनकर मेरा कलेजा कबाब हो गया। मगर वे कह आए थे, अतएव बुलाना भी आवश्यक था।

कोई आधे घंटे बाद वैद्य जी एक पालकी में तशरीफ लाए। आकर वे मेरे सामने कुर्सी पर बैठ गए। वे धोती पहने हुए थे और कंधे पर एक सफेद दुपट्टा डाले हुए थे। इसके अतिरिक्त, उनके शरीर पर सूत के नाम पर केवल जनेऊ था, जिसको रंग देखकर यह शंका होती थी कि कविराज जी कुश्ती लड़कर आ रहे हैं। वैद्य जी ने कुछ और न पूछा। पहले नाड़ी हाथ में ली। पाँच मिनट तक एक हाथ की नाड़ी देखी, फिर दूसरे हाथ की। बोले– ''वायु का प्रकोप है। यकृत से वायु घूमकर पित्ताशय में प्रवेश कर आंत्र में जा पहुँची है। इसमें मंदाग्नि का प्रादुर्भाव होता है और इसी कारण जब भोज्य पदार्थ प्रतिहत होता है, तब शूल का कारण बनता है।''

कविराज जी मालूम नहीं क्या बक रहे थे और मेरी तबीयत दर्द और क्रोध से छटपटा रही थी। आखिर मुझसे न रहा गया। मैंने एक सज्जन से कहा, ''जरा अलमारी में से 'आप्टे' का कोश तो लेते आइए।'' यह सुनकर लोग चकराए। कुछ लोगों को संदेह हुआ कि अब मैं होश में नही हूँ। मैंने कहा, ''दवा तो पीछे होगी, पहले मैं समझ लूँ कि मुझे रोग क्या है?'' तत्पश्चात् वैद्य जी 'चरक', 'सुश्रुत' के श्लोक सुनाने लगे और अंत में कहा– ''देखिए, मैं दवा देता हूँ और अभी आपको लाभ होगा।''

पंडित जी ने दवा दी और कहा कि अदरक के रस में इस औषधि का सेवन करना होगा। खैर साहब, फीस दी गई। किसी प्रकार वैद्य जी से पिंड छूटा। दो दिन दवा दी गई। कभी-कभी तो दर्द कम अवश्य हो जाता था, पर पूरा दर्द न गया। वह सी0 आई0 डी0 की तरह पीछा ही न छोड़ता था।

चारपाई पर पड़ा रहने लगा। दिन में मित्रों की मंडली आती थी। वह आराम देती थी कम, दिमाग चाटती थी अधिक। एक सज्जन मुझे देखने के लिए तशरीफ लाए थे। बोले– "साहब, आप लोगों को देश का हर संभव ध्यान रखना चाहिए। आप किसी भारतीय हकीम अथवा वैद्य को ही दिखलाइए।" मैंने मन में सोचा कि वैद्य महाराज को तो मैंने दिखा ही लिया, अब हकीम भी सही।

हकीम साहब आए। यद्यपि मैं अपनी बीमारी का जिक्र और अपनी बेबसी का हाल लिखना चाहता हूँ, पर हकीम साहब की पोशाक और उनके रहन-सहन तथा फैशन का जिक्र न करना, मुझसे न हो सकेगा।

बनारस में बहुत तेज सर्दी नहीं पड़ती। फिर भी ऊनी कपड़े पहनने का समय आ गया था, परंतु हकीम साहब चिकन का कुर्ता पहने हुए थे। सिर पर बनारसी लोटे की तरह टोपी रखी हुई थी। पाँव में पायजामा ऐसा मालूम होता था कि चूड़ीदार पायजामा बनने वाला था, परंतु दर्जी ईमानदार था, उसने कपड़ा चुराया नहीं। सबका सब लगा दिया अथवा यह भी हो सकता है कि ढीली मोहरी के लिए कपड़ा दिया गया हो, दर्जी ने कुछ कतर-ब्योंत की हो और चुस्ती दिखाई हो। जूता कामदार दिल्लीवाला था। हकीम साहब इतने पतले-दुबले थे कि मालूम पड़ता था कि उन्होंने अपनी तंदुरुस्ती अपने मरीजों को बाँट दी है। हकीम साहब में नजाकत भी बला की थी। रहते थे बनारस में, मगर कान काटते थे लखनऊ वालों के।

आते ही मैंने सलाम किया, जिसका उत्तर उन्होंने मुसकुराते हुए बड़े अंदाज से दिया और बोले– "मिजाज कैसा है?"

मैंने कहा– "मर रहा हूँ। बस, आपका ही इंतजार था। अब यह जिंदगी आपके ही हाथों में है।" हकीम साहब ने कहा– "या रब! आप तो ऐसी बात करते हैं, गोया जिंदगी से बेजार हो गए हैं। भला ऐसी गुफ्तगू भी कोई करता है। मरें आपके दुश्मन, नब्ज तो दिखाइए। खुदावंदकरीम ने चाहा तो आनन-फानन में दर्द रफूचक्कर होगा।"

मैंने कहा– "अब आपकी दुआ है। आपका नाम बनारस ही नहीं, हिंदुस्तान में लुकमान की तरह मशहूर है इसीलिए आपको तकलीफ दी गई है। ठीक है, अब आप इलाज शुरू कीजिए।"

उन्होंने दस मिनट तक नब्ज देखी। फिर बोले– "मैं नुसखा लिखे देता हूँ। इसे वक्त पर पीजिए, इंशाअल्ला! जरूर शिफा होगी।"

हकीम साहब चलने को तैयार हुए। उठते-उठते बोले– "जरा एक बात का ख्याल रखिएगा कि आजकल लोग दवाइयाँ बहुत पुरानी रखते हैं। मेरे यहाँ ताजी दवाइयाँ मिलती हैं।"

दर्द फिर कम हो चला, परंतु दुर्बलता बढ़ चली थी। कभी-कभी दर्द का दौरा भी अधिक वेग से आता था। घरवालों को और मुझे भी दर्द के संबंध मे विशेष चिंता होने लगी। कोई कहता था कि लखनऊ जाओ, कोई एक्सरे का नाम लेता था। किसी-किसी ने राय दी कि जल-चिकित्सा कीजिए। एक सज्जन ने कहा– "यह सब कुछ नहीं, आप होमियोपैथी इलाज शुरू कीजिए। देखिए, कितनी शीघ्रता से लाभ होता है। साहब, इन नन्हीं-नन्हीं गोलियों में मालूम नहीं कहाँ का जादू है? साहब, जादू का काम करती हैं, जादू का।"

एक प्राकृतिक-चिकित्सा वाले ने कहा था कि आप गीली मिट्टी पेट पर लेपकर धूप में बैठिए। एक हफ्ते में दर्द हवा हो जाएगा। हमारे ससुर साहब एक डॉक्टर को लेकर आए। उन्होंने कहा– "देखिए साहब, आप पढ़े-लिखे आदमी हैं। समझदार हैं। मैं बीच में बोल उठा– "समझदार न होता, तो आपको कैसे यहाँ बुलाता?"

इसी बीच में मेरी नानी की मौसी मुझे देखने आईं। उन्होंने बड़े प्रेम से देखा। देखकर बोलीं– "मैं तो पहले ही सोच रही थी कि यह कुछ ऊपरी खेल है।" मैंने पूछा– "यह ऊपरी खेल क्या है, नानी जी?" वे बोलीं– "बेटा, सब कुछ किताब में ही थोड़े लिखा रहता है। बात यह है कि तुम पर किसी चुड़ैल का साया है।" वे मेरी स्त्री और माता जी की ओर देखकर कहने लगीं– "देखो न, इसकी बरौनी कैसी खड़ी हैं?" कोई चुड़ैल लगी है। किसी ओझा को दिखा देना चाहिए।"

मैंने कहा– "डॉक्टर तो मेरी जान के पीछे लग ही गए हैं। क्या चुड़ैल उनसे भी बढ़कर है?" जब सब लोग चले गए, तब मेरी पत्नी ने कहा– "तुम लोगों की बात क्यों नहीं मान लिया करते? कुछ हो या न हो, इसमें तुम्हारा हर्ज ही क्या है?"

मेरे दर्द में किसी विशेष प्रकार की कमी न हुई। ओझा से तो किसी प्रकार की आशा क्या करता? पर बीच-बीच में दवा भी होती जाती थी। कुछ लाभ अवश्य हुआ, पर पूरा फायदा न हुआ। मैंने अब पक्का इरादा कर लिया कि लखनऊ जाऊँ। जो बात काशी में नहीं हो सकती, लखनऊ में हो सकती है, वहाँ सभी साधन हैं।

सब तैयारी हो चुकी थी कि इतने में एक और डॉक्टर को एक मेहरबान लिवा लाए। उन्होंने देखा, कहा– "जरा मुँह तो देखूँ।" मैंने कहा– "मुँह, जीभ जो चाहे देखिए।" देखकर बड़े जोर से हँसे। मैं घबराया, ऐसी हँसी केवल कवि-सम्मेलन में बेढंगी कविता पढ़ने के समय सुनाई देती है। मैं चकित भी हुआ। डॉक्टर बोले– "किसी डॉक्टर को यह सूझी नहीं, तुम्हें 'पाइरिया' है। उसी का जहर पेट में जा रहा है और जो फसाद पैदा कर रहा है।" मैंने कहा– "तब क्या करूँ?" डॉक्टर साहब ने कहा– "इसमें करना क्या है? किसी दंत-चिकित्सक के यहाँ जाकर सब दाँत निकलवा दीजिए।" मैंने अपने मन में कहा, आपको यह कहने में तो कुछ कठिनाई ही नहीं हुई। गोया दाँत निकलवाने में कोई तकलीफ ही नहीं होती। खैर, रातभर मैंने सोचा। मैंने भी यही निश्चय किया कि यही डॉक्टर ठीक कहते हैं। दंत-चिकित्सक के यहाँ से पुछवाया। उसने कहलवाया कि तीन रुपये एक दाँत तुड़वाने के लिए लगेंगे। कुल दाँतों के लिए छियानपे रुपये लगेंगे, मगर मैं आपके लिए छह रुपये छोड़ दूँगा। इसके अतिरिक्त, दाँत बनावाई के अलग। यह सुनकर पेट के दर्द के साथ सिर में भी चक्कर आने लगा, मगर मैंने सोचा कि जान सलामत है तो सब कुछ है। इतना और खर्च करो। श्रीमती जी से मैंने रुपये माँगे। उन्होंने पूछा– "क्या हुआ?" मैंने सारा हाल कह दिया। वे बोली– "तुम्हारी बुद्धि कहीं घास चरने गई है। आज कोई कहता है दाँत उखड़वा डालो, कल कोई कहेगा बाल उखड़वा डालो, परसों कोई डॉक्टर कहेगा नाक नुचवा डालो, आँखें निकलवा दो। यह सब फिजूल है, फिजूल। खाना ठीक से खाओ। पंद्रह दिन में ठीक हो जाओगे।" मैंने कहा– "तुम्हें अपनी ही दवा करनी थी, तो इतने रुपयें क्यों बरबाद कराए?"

—बेढब बनारसी

लेखक परिचय

हास्य-व्यंग्य की रचनाओं के सिद्धस्त लेखक बेढब बनारसी जी का जन्म 11 नवंबर, 1885 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी नगर में हुआ था। इन्होंने अपने 'बेढब बनारसी' उनपनाम से हिंदी में लगभग एक दर्जन गद्य और पद्य साहित्य की रचना की है। उनका कविताएँ प्रेम और राजनीति से जुड़ी हैं। कहानियों में बीसवीं सदी के मध्यमवर्गीय परिवार और गाँव के लोगों की समस्याओं का व्यंग्यपूर्ण वर्णन मिलता है। इनकी प्रमुख रचनाएँ 'बेढब की बैठक', 'बनारसी इक्का', 'काव्य कमल', 'गांधी का भूत', 'तनातन' आदि हैं। 'नाटक-अभिनीता' इनकी लोकप्रिय नाट्य कृति है। 6 मई, 1968 को इनकी मृत्यु होने से मृत्यु होने से हिंदी साहित्य ने एक महान व्यंग्यकार खो दिया।

शब्द-अर्थ

हट्टा-कट्टा	—	हृष्ट-पुष्ट	रिफ्रेशमेंट	—	जलपान
सूक्ष्म	—	छोटे	गायब	—	लुप्त
इक्का	—	एक घोड़े की गाड़ी	नुसखा	—	कागज पर लिखी गई दवाई और उसकी सेवन विधि
रफूचक्कर	—	गायब	कतर-ब्योंत करना	—	काट-छाँट करना
बेजार	—	दुखी, नाराज	गुफ्तगू	—	बातचीत
शिफा	—	फायदा, रोग से मुक्ति	एहतियात	—	सावधानी
फड़क उठना	—	मचल जाना	आयकर	—	आमदनी का टैक्स
प्रकोप	—	प्रबलता	मंदाग्नि	—	पाचन शक्ति की दुर्बलता
प्रादुर्भाव	—	उत्पन्न होना	पिंड छूटा	—	पीछा छूटना
बेबसी	—	विवशता, मजबूरी	शूल	—	दर्द
ऊपरी खेल	—	जादू-टोना	पाइरिया	—	दाँतों की एक बीमारी
फिजूल	—	व्यर्थ, बेकार			

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए-**

(क) लेखक की क्या इच्छा थी?

(ख) बीमार पड़ने पर लेखक को क्या खाने को मिलता?

(ग) लेखक ने भूख न होने पर भी भोजन क्यों किया?

(घ) लेखक ने पेट दर्द दूर करने के लिए सबसे पहले कौन-सी दवाई ली?

(ङ) वैद्य जी की बातें सुनकर लेखक ने क्या माँगा?

(च) नानी लेखक के इलाज के लिए किसे बुलाना चाहती थीं?

लिखित

1. नीचे लिखे पाठांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

इसी बीच में मेरी नानी की मौसी मुझे देखने आईं। उन्होंने बड़े प्रेम से देखा। देखकर बोलीं— ''मैं तो पहले ही सोच रही थी कि यह कुछ ऊपरी खेल है।'' मैंने पूछा— ''यह ऊपरी खेल क्या है, नानी जी?'' वे बोलीं— ''बेटा, सब कुछ किताब में ही थोड़े लिखा रहता है। बात यह है कि तुम पर किसी चुड़ैल का साया है।'' वे मेरी स्त्री और माता जी की ओर देखकर कहने लगीं— ''देखो न, इसकी बरौनी कैसी खड़ी हैं?'' कोई चुड़ैल लगी है। किसी ओझा को दिखा देना चाहिए।''

मैंने कहा— ''डॉक्टर तो मेरी जान के पीछे लग ही गए हैं। क्या चुड़ैल उनसे भी बढ़कर है?'' जब सब लोग चले गए, तब मेरी पत्नी ने कहा— ''तुम लोगों की बात क्यों नहीं मान लिया करते? कुछ हो या न हो, इसमें तुम्हारा हर्ज ही क्या है?''

मेरे दर्द में किसी विशेष प्रकार की कमी न हुई। ओझा से तो किसी प्रकार की आशा क्या करता? पर बीच-बीच में दवा भी होती जाती थी।

(क) बीमार लेखक को देखने कौन आई थीं?

(ख) उन्होंने लेखक की बीमारी का क्या कारण बताया?

(ग) लेखक ने चुड़ैल को किससे बढ़कर बताया?

(घ) लेखक की पत्नी ने उन्हें क्या समझाया?

- **उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

(क) दर्द से छटपटाते हुए लेखक की नींद कितने बजे खुली?

◯ रात के बारह बजे ◯ रात के तीन बजे

◯ प्रात:काल छह बजे ◯ खाना खाने के एक घंटे बाद

(ख) सरकारी अस्पताल के डॉक्टर साहब कैसे तशरीफ लाए?

◯ मोटर गाड़ी में ◯ पैदल

◯ इक्के पर ◯ पालकी पर

(ग) किसके इलाज से लेखक की पीड़ा प्रात:काल तक रफूचक्कर हो गई थी?

◯ वैद्य जी के इलाज से ◯ हकीम साहब की दवा से

◯ दंत चिकित्सक के इलाज से ◯ डॉ० चूहानाथ कातर जी के इलाज से

(घ) किसकी वेशभूषा से लेखक सबसे अधिक प्रभावित हुए?

◯ डॉ० चूहानाथ कातर की ◯ हकीम साहब की

◯ कविराज पंडित सुखदेव शास्त्री की ◯ सरकारी अस्पताल के डॉक्टर की

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) लेखक अपने मित्रों और परिवार के लोगों की सहानुभूति का आनंद किस प्रकार लेना चाहते थे?

(ख) पेट-दर्द आरंभ होने पर लेखक ने क्या घरेलू उपचार आरंभ किया?

(ग) इस पाठ में लेखक ने कितने प्रकार की प्रचलित उपचार प्रणालियों का उल्लेख किया है?

(घ) लेखक की तबीयत पूछने के लिए आने वाले लोग किस विषय की चर्चा करने लगते थे?

(ङ) ''ऊपर से पान और सिगरेट की चपत अलग। भला दर्द में क्या कमी होती?'' वाक्य में निहित व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

(च) लेखक ने ऐसा क्या खा लिया कि वे पेट-दर्द से परेशान हो गए?

(छ) लेखक को देखने के लिए आने वाले लोगों ने इलाज के क्या-क्या नुसखे सुझाए?

(ज) 'वे यथा नाम तथा गुण वाले व्यक्ति थे।' यह किनके विषय में कहा गया है? उनकी दवाई से लेखक को क्या फायदा हुआ?

(झ) अंत में आए डॉक्टर साहब की हँसी सुनकर लेखक चकित क्यों हुए? उन्होंने क्या इलाज बताया?

(ञ) 'लेखक की श्रीमती जी कंजूस नहीं, बुद्धिमानी थीं।' पाठ के संदर्भ में इस कथन की सार्थकता प्रमाणित कीजिए।

(ट) आज की जीवन साधन-संपन्न है, फिर भी लोग तनावग्रस्त क्यों हैं?

भाषा-ज्ञान

1. शब्द- वर्णों के स्वतंत्र सार्थक समूह को 'शब्द' कहते हैं। जैसे आदमी, चिकित्सा, सरकारी, रसगुल्ला आदि।

पद- स्वतंत्र सार्थक शब्दों का जब वाक्य में प्रयोग किया जाता हे, तो उन पर लिंग, वचन, क्रिया का प्रभाव पड़ता है। इससे वे 'पद' कहलाने लगते हैं जैसे- बाग बाजार के रसगुल्ले आकार में बहुत बड़े थे। इस वाक्य में 'रसगुल्ले' शब्द न रहकर पद बन गया है।

शब्द और पद में अतंर - जब शब्द का वाक्य में प्रयोग किया जाता है, तब वह शब्द स्वतंत्र नहीं रहता, बल्कि व्याकरण के नियमों (लिंग, वचन, कारक) में बँध जाता है। जैसे- शब्द रसगुल्ला।

वाक्य- छह रसगुल्ले खाकर लेखक बीमार पड़ गए।

ऊपर लिखे वाक्य में 'रसगुल्ले' शब्द के साथ अनेक व्याकरणिक नियम जुड़ गए हैं। व्याकरणिक नियमों का परिचय या विवरण देना 'पद-परिचय' कहलाता है। पद-परिचय में पद का व्याकरणिक भेद, लिंग, वचन, कारक आदि का ही विशेष रूप से उल्लेख किया जाता है।

'रसगुल्ले' का पद-परिचय इस प्रकार लिखा जाएगा-

रसगुल्ले- जातिवाचक संज्ञा, बहुवचन, वाक्य में निश्चित संख्यावाचक विशेषण पुल्लिग 'छह' का विशेष्य।

- **रेखांकित पदों का परिचय दीजिए-**

(क) मित्र पूछते, ''कहिए! कैसी तबीयत है आपकी?'' _____

(ख) अमृतधारा की एक शीशी सदा मेरे पास रहती है। _____

(ग) डॉक्टर महोदय मुसकुरा कर चले गए। _____

(घ) मैंने कहा- ''अब आपकी दुआ है।'' _____

2. उत्पत्ति के आधार पर शब्द भेद-

(क) तत्सम शब्द- जो शब्द संस्कृत भाषा से ज्यों के ज्यों हिंदी में प्रयोग किए जाते हैं, 'तत्सम शब्द' कहलाते हैं। जैसे- दंज, नयन, जिह्वा आदि।

(ख) तद्भव शब्द- जो संस्कृत शब्द थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ हिंदी में प्रयोग किए जाते हैं, वे 'तद्भव शब्द' कहे जाते हैं। जैसे- दाँत, आँख, जीभ आदि।

(ग) देशज शब्द- जो शब्द अपने देश की स्थानीय बोलियों में प्रयोग किए जाते हैं और हिंदी भाषा में उन्होंने अपना विशेष स्थान बना लिया है, उन्हें 'देशज शब्द' कहते हैं। जैसे- धरना दिया, कोंच रहा, छाले पड़ गए, जनेऊ आदि।

(घ) विदेशी शब्द- विदेशी भाषाओं के संसर्ग से हिंदी भाषा में आए और प्रयोग किए जाने वाले शब्दों को 'विदेशी शब्द' कहते हैं। जैसे- हंटले के बिस्कुट, यू० डी० क्लोन की शीशी, डॉक्टर, तशरीफ, फैशन, जिक्र, गुफ्तगू आदि।

- **नीचे लिखे शब्दों को उचित शीर्षक के नीचे लिखिए-**

हट्टा-कट्टा, रिफ्रेशमेंट, सिनेमा, सूक्ष्म, मलाई, खुराक, महोदय, लीडी, पिचकारी, दुपट्टा, पत्रिका, कविराज, चारपाई, कतर-ब्योंत, बरौनी, पक्का, होमियोपैथिक, चिकित्सा, चुड़ैल, फसाद, उखड़वाना, घड़ीसाज, वर्षगाँठ, ऑपरेशन, कक्ष।

तत्सम शब्द	तद्भव शब्द	देशज शब्द	विदेशी शब्द
_____	_____	_____	_____
_____	_____	_____	_____
_____	_____	_____	_____
_____	_____	_____	_____
_____	_____	_____	_____
_____	_____	_____	_____
_____	_____	_____	_____
_____	_____	_____	_____
_____	_____	_____	_____
_____	_____	_____	_____

3. उचित स्थान पर अनुस्वार (ं), अनुनासिक (ँ) और नुकता (.) लगाइए-

पैतीस	_____	मरीजो	_____	मर्ज	_____
गभीर	_____	भाति	_____	सक्राति	_____
पहुँच	_____	सुइया	_____	रफूचक्कर	_____
दात	_____	रिफ्रशमेट	_____	मिजाज	_____
नजाकत	_____	रसज्ञरजन	_____	इजेक्शन	_____

क्रियात्मक गतिविधि

- **गोपाल बाबू शर्मा, सुदर्शन, हरिशंकर परसाई की हास्य-व्यंग्य प्रधान कहानियाँ पढ़िए।**
- **इस कहानी को नाटक का रूप देते हुए विद्यालय के वार्षिकोत्सव पर इसका मंचन कीजिए।**

भारत की वास्तुकला 14

अभिव्यक्ति ही 'कला' है। बाहरी जगत की भिन्न-भिन्न वस्तुओं का जो प्रतिबिंब मनुष्य के मन पर पड़ता है, उसकी सौंदर्यपूर्ण अभिव्यक्ति ही कला है। कला का संबंध नियमों से न होकर व्यक्ति से होता है अतः व्यक्ति या कलाकार, किसी भी माध्यम से, अपनी कल्पना को सुंदर रूप में प्रस्तुत करें, वह कलाकृति ही कही जाएगी। ये कलाएँ- ललित कला और उपयोगी कला- दो विभागों में बाँटी जा सकती हैं। उपयोगी कलाओं में बढ़ई, कुम्हार, सुनार, राज, जुलाहे आदि के व्यवसाय आते हैं जबकि ललित कलाओं के अंतर्गत वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत कला और काव्य कला -ये पाँच कला-भेद हैं।

मूर्त आधार की कलाओं में वास्तुकला आती है। वास्तुकला भवन-निर्माण की कला है। आधार की अधिकता के बिना इसका अस्तित्व ही संभव नहीं। भवन के लिए उपयुक्त स्थान, उसकी स्थिति, दिशा, सामग्री आदि बारीकियों को ध्यान में रखकर बनाए गए भवन ही वास्तुकला के उदाहरण होते हैं। भारतीय वास्तुकला की परंपरा अत्यंत प्राचीन काल से चली आ रही है। इतिहास की बात लें तो आज से लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व सिंधु घाटी की सभ्यता में वास्तुकला के चिह्न मिलते हैं।

मोहन-जोदड़ो और हड़प्पा नाम के दो नगरों में श्रेष्ठ वास्तुकला के नमूने मिलते हैं। यहाँ के मकान दुमंजिले और पक्की ईंटों से बनाए गए थे। मकान का प्रत्येक कक्ष विशेष स्थिति को ध्यान में रखकर निर्मित किया गया था। स्नानागार का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान था।

सिंधु घाटी की सभ्यता के बाद मौर्यकाल में भारतीय वास्तुकला अपनी चरम सीमा पर थी। सिकंदर के आक्रमण के पश्चात् चंद्रगुप्त मौर्य के काल में देश अत्यंत संपन्न हो गया। यूनान के राजदूत मैगस्थनीज ने अपनी पुस्तक में चंद्रगुप्त मौर्य के महल का बड़े विस्तार से वर्णन किया है। इस महल के खंभों पर सोने एवं चाँदी के बेल-बूटे बने थे और उन पर अनेक रंग-बिरंगे पक्षी

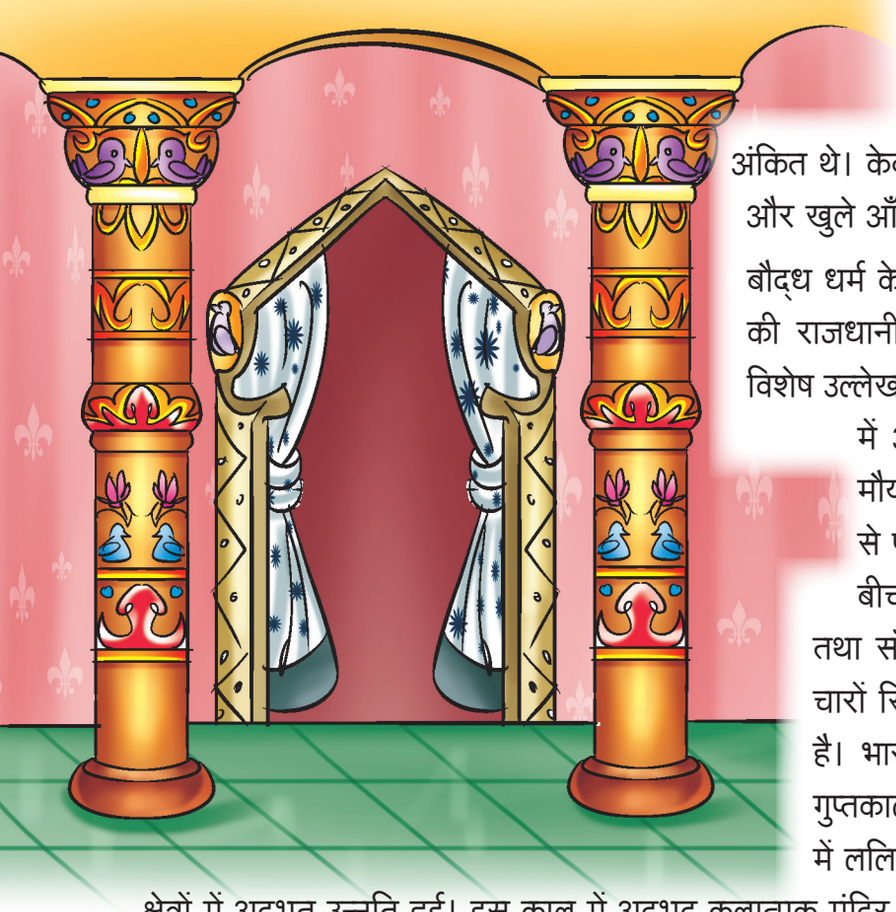

अंकित थे। केवल राजमहल ही नहीं, साधारण लोगों के घर भी बड़े–बड़े और खुले आँगन वाले एवं कलात्मक होते थे।

बौद्ध धर्म के प्रभाव स्वरूप अनेक स्तूपों का निर्माण हुआ। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से तीस किलोमीटर दूर बना 'साँची का स्तूप' विशेष उल्लेखनीय है। यह ऊपर से नारंगी की तरह गोल है। बौद्ध काल में अनेक स्तंभ भी बनवाए थे। सारनाथ का स्तंभ या लाट मौर्यकाल की वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना है। इसमें ऊपर पीठ से पीठ लगाए चार सिंह बैठे हैं, पर दिखाई तीन देते है। नीचे बीच में चक्र है और उसके इधर-इधर हंस, दौड़ते घोड़े, हाथी तथा साँड़ हैं। यही चक्र हमारे राष्ट्र-ध्वज में भी अंकित है और चारों सिंहो की आकृति हमारे देश के राजकीय कागजों की मुहर है। भारतीय वास्तुकला ही नहीं, सभी कलाओं की दृष्टि से भी गुप्तकाल को भारतीय कला का स्वर्ण युग माना जाता है। इस युग में ललित कलाओं, स्थापत्य कलाओं और उपयोगी कलाओं– सभी क्षेत्रों में अद्भुत उन्नति हुई। इस काल में अद्भुद कलात्मक मंदिर बने।

गुप्तकाल का सबसे सुंदर मंदिर ललितपुर जिले में देवगढ़ का दशावतार मंदिर है। इसमें बारह मीटर ऊँचा एक शिखर है, चार मंडप हैं तथा खंभों पर अत्यंत सुंदर मूर्तियाँ बनी हैं। दिल्ली में कुतुबमीनार के पास बनी ' लोहे की लाट 'धातु विज्ञान का अद्भुत नमूना है। गौतम बुद्ध के शिष्यों ने पर्वतीय प्रदेशों में साधना के लिए एकांत स्थान खोजे। पहाड़ों और गुफाओं को काटकर मंदिर बनवाए गए। इन्हीं मंदिरों में दक्षिण में 'अजंता और एलोरा' और दक्षिण भारत में तंजावुर, चिदंबरम, मदुरई, रामेश्वरम, आदि स्थानों पर बने अनेक मंदिर इसके उदाहरण हैं। तंजावुर का वृहदेश्वर मंदिर विश्वभर में प्रसिद्ध है। इसका शिखर दो सौ फुट ऊँचा है। जिस पत्थर पर स्वर्ण-कलश है, उसका वजन लगभग 900 क्विंटल है। चिदंबरम में नटराज की मूर्ति दर्शनीय है। तांडव नृत्य करते हुए शिव की इस चतुर्भुज मूर्ति के एक हाथ में डमरू, दूसरे हाथ में अंधकार और बुराई का नाश करने वाली ज्वाला है। मदुरई का मीनाक्षी मंदिर अपनी सुंदरता और भव्यता के लिए प्रसिद्ध है। विश्वभर से पर्यटक इनको देखने के लिए आते हैं।

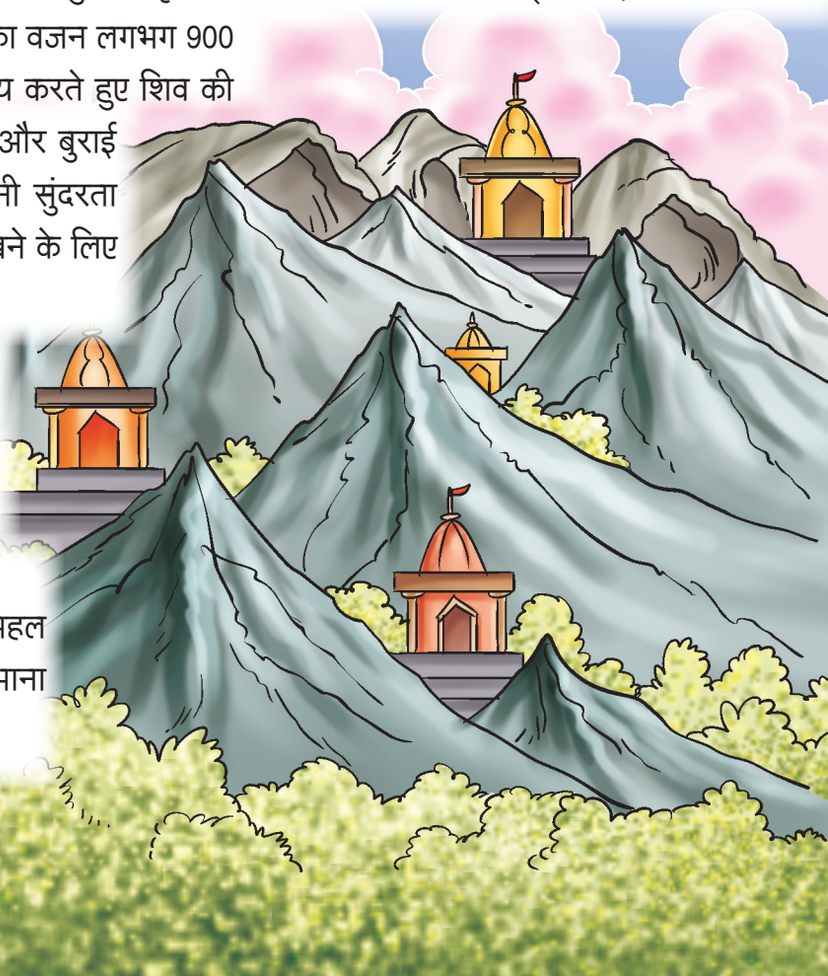

भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना के बाद वास्तुकला के विकास में मुगल बादशाहों का विशेष योगदान रहा। 'ताजमहल' वास्तुकला का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। आगरा में यमुना नदी के किनारें बने ताजमहल का सौंदर्य देखते ही बनता है। यह सफेद संगमरमर से बना हुआ है। इसकी लंबाई 1900 फुट तथा चौड़ाई 1000 फुट है। इसके केंद्रीय कक्ष में शाहजहाँ और मुमताज महल की कब्रें बनी हुई है। यह विश्व के सात आश्चर्यों में से एक माना जाता है।

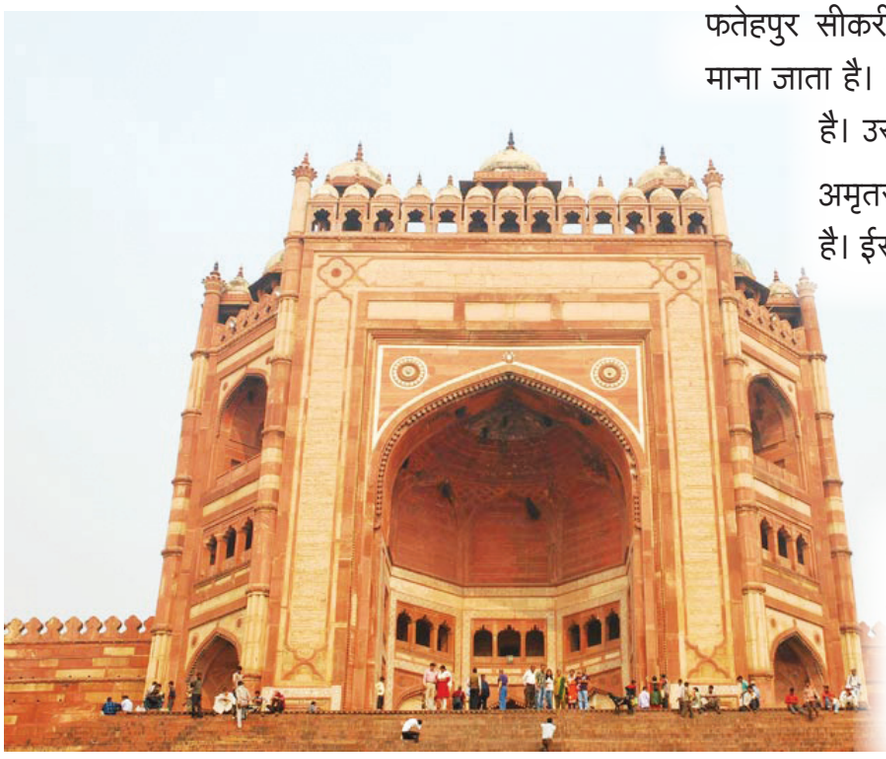

फतेहपुर सीकरी स्थित 'बुलंद दरवाजा' संसार का सबसे ऊँचा दरवाजा माना जाता है। वास्तव में मुगल काल वास्तुकला का स्वर्ण-युग माना जाता है। उसी समय दिल्ली के लाल किले का निर्माण हुआ था।

अमृतसर स्थित 'स्वर्ण-मंदिर' भी वास्तुकला का एक अनुपम नमूना है। ईसाइयों द्वारा बनवाए गए अनेक गिरिजाघरों तथा जैन धर्म के मंदिरों और मध्य प्रदेश में 'बाघ' के गुफा-मंदिर बनाए गए जो वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। महाराष्ट्र में मुंबई के समीप समुद्र में पर्वत-शिलाओं को खोदकर बनाई गई एलीफेंटा की गुफाओं में और औरंगाबाद के पास लगभग तीस गुफाओं में प्रत्येक दृष्टि से वास्तुकला का अध्ययन किया जा सकता है। इनमें मूर्तिकला और चित्रकला के अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं। अंजता-एलोरा की गुफाओं की कला के नमूने अद्वितीय हैं।

उड़ीसा राज्य में पुरी में बना 'कोणार्क का सूर्य मंदिर' वास्तुकला की दृष्टि से बहुत प्रसिद्ध है। इसमें सूर्य के सात घोड़े बने हुए हैं। सभी ऐसे सजीव लगते हैं मानो अभी बोल उठेंगें। 'खुजराहो के मंदिर' चंदेल राजाओं द्वारा लगभग एक हजार वर्ष पूर्व बनवाए गए थे। इन मंदिरों की संख्या तो अधिक बताई जाती है,पर अब केवल 22 मंदिर ही बचे हैं। इन मंदिरों की दीवारों पर कलात्मक प्रतिमाएँ देखते ही बनती हैं। कला का इतना उत्कृष्ट तथा अद्भुत रूप शायद ही देखने को मिले। ये मंदिर वास्तुकला के साथ-साथ मूर्तिकला में भी बेजोड़ हैं।

दिल्ली में स्थित 'लोटस टेंपल ' की वास्तुकला भी उल्लेखनीय है। कमल की आकृति में बने इस मंदिर की सुंदरता देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों का मन मोह लेती है।

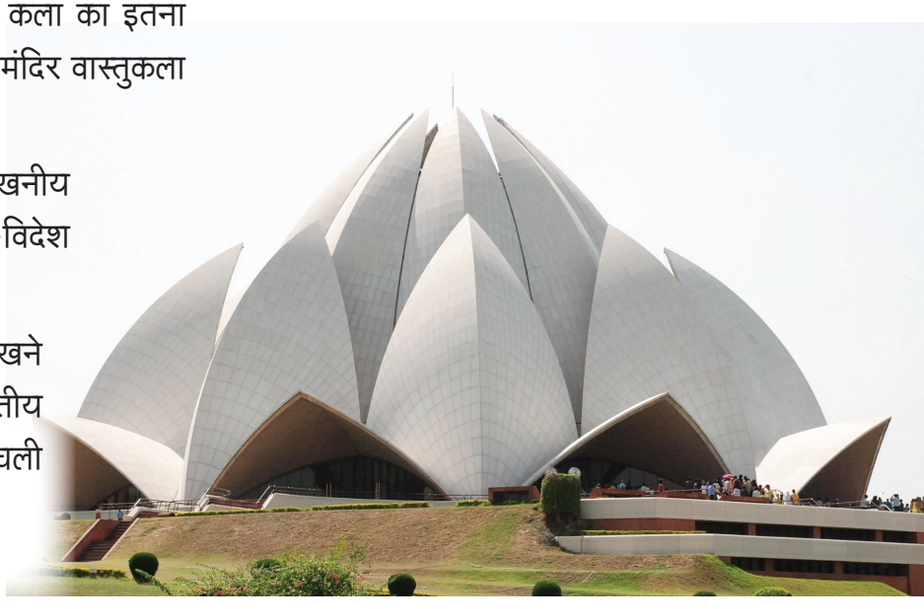

भारत के इन मंदिरों में उच्च कोटि की वास्तुकला देखने को मिलती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारतीय वास्तुकला की परंपरा प्राचीन काल से लेकर आज तक चली आ रही है जो संपूर्ण विश्व में आश्चर्य करने योग्य है।

शब्द - अर्थ

विविध	—	अनेक	**अद्भुत**	—	विचित्र, अनोखा
वास्तुकला	—	भवन-निर्माण कला	**मूर्त**	—	मूल
उल्लेखनीय	—	कहने योग्य	**अंकित**	—	बना हुआ
योगदान	—	सहयोग	**दर्शनीय**	—	देखने योग्य

भव्यता	—	सुंदरता	**पर्यटक**	—	दर्शक (बाहर से आने वाले)
स्वर्णयुग	—	सुनहरा युग	**उत्कृष्ट**	—	बहुत अच्छा, श्रेष्ठ
उन्नति	—	प्रगति, तरक्की	**सर्वश्रेष्ठ**	—	सर्वोत्तम
विस्तृत	—	फैला हुआ	**संपन्न**	—	धनी।

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) 'कला' से क्या तात्पर्य है?

(ख) मूर्त आधार की कलाओं में कौन-सी कलाएँ आती हैं?

(ग) 'साँची का स्तूप' कहाँ पर स्थित है?

(घ) किस काल को 'भारतीय कला का स्वर्ण-युग' माना जाता है और क्यों?

लिखित

1. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) 'सारनाथ का स्तंभ' कौन-से काल का उत्कृष्ट उदाहरण है?

◯ गुप्तकाल का। ◯ मौर्य काल का। ◯ प्राचीन काल का।

(ख) 'स्वर्ण मंदिर' कहाँ पर है?

◯ कोणार्क में। ◯ फतेहपुर में। ◯ अमृतसर में।

(ग) 'खजुराहो के मंदिर' का निर्माण हुआ था आज से लगभग–

◯ एक हजार वर्ष पूर्व ◯ पाँच सौ वषै पूर्व ◯ डेढ़ हजार वर्ष पूर्व

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) ललित कलाओं के अंतर्गत कौन-सी कलाएँ आती हैं?

(ख) भारत की वास्तुकला के विकास में मुगल बादशाहों का क्या योगदान रहा है? उनके द्वारा निर्मित कुछ भवनों के उदाहरण दीजिए।

(ग) 'दशावतार मंदिर' कहाँ स्थित है? विस्तृत वर्णन कीजिए।

(घ) 'कोणार्क का सूर्य मंदिर' कहाँ बना हुआ है और इसकी प्रसिद्धि का क्या कारण है?

(ङ) विश्व का सबसे ऊँचा दरवाजा कौन-सा है और यह कहाँ पर है?

(च) आगरा में स्थित ताजमहल का निर्माण किस बादशाह ने करवाया था?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए और फिर पढ़िए–

उदाहरण — विद्यालय = व + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ।

उत्कृष्ट = उ + त् + क + ऋ + ष् + ट् + अ।

अद्वितीय = _____

समृद्धि = _____

प्रतिबिंब = _____

श्रेष्ठ = _____

वृहदेश्वर = _____

उल्लेखनीय = _____

2. उल्लेखनीय, दर्शनीय, कथनीय इन शब्दों के अंत में 'ईय' प्रत्यय का प्रयोग हुआ है–

जिसके कारण शब्द के अर्थ में कुछ परिवर्तन आ जाता है। 'ईय' प्रत्यय का अर्थ होता है। – योग्य। इस प्रकार 'उल्लेख' और 'ईय' के योग से बने 'उल्लेखनीय' शब्द का अर्थ हुआ— उल्लेख करने योग्य।

निम्नलिखित शब्दों के साथ 'ईय' प्रत्यय लगाकर इनके अर्थ लिखिए–

भ्रमण _____ श्रवण _____ पर्वत _____

वंदन _____ दर्शन _____ कथन _____

क्रियात्मक गतिविधि

- ''भारत में कला साहित्य के रूप में मनुष्य को एक अद्भुद शक्ति प्रदान की है'', इस विषय पर एक लेख लिखिए।
- भारत की वास्तुकला की चित्रकला के बारे में जानकारी एकत्रित करें।
- वास्तुकला से संबंधित चित्रों को एकत्रित करके उनकी प्रदर्शनी अपनी कक्षा-कक्ष में लगाइए।
- दक्षिण भारत के अन्य मंदिरों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।
- 'भारतीय वास्तुकला' पर एक निबंध लिखकर अपने अध्यापक/अध्यापिका को दिखाइए।

छींक 15

पात्र परिचय

पंचम मिसिर – पुराने विचारों वाले पंडित जी

गायत्री – पंचम मिसिर की पत्नी

संपत – पंडित जी का भतीजा

देवीदीन – ग्वाला

समय – प्रातः सात बजे

(स्थान– पंचम मिसिर का घर। वे सो रहे हैं। उनकी पत्नी गायत्री उन्हें जगाने की चिंता में है। नेपथ्य में जोर से एक छींक होती है। एक मिनट बाद ही दूसरी छींक होती है।)

गायत्री – (पंचम मिसिर को जगाते हुए) अरे, आज सोते ही रहोगे? सात बज गए, इतना दिन चढ़ आया।

(पंचम मिसिर आलस भरे स्वर में अंगड़ाई लेते हैं।)

गायत्री – कल कह रहे थे, मुझे यह काम करना है, वह काम करना है। सात बजे सोकर काम करोगे?

पंचम – (जम्हाई लेकर अलसाए स्वर में) जय-जय-जय-नटवर गिरधारी।

दिनभर रखो लाज हमारी।।

गायत्री – सूरज भगवान तो अपने समय से ही निकलते हैं, पर तुम्हारी नींद तो जैसे कुंभकरण की धरोहर है। कल कह रहे थे, त्रिवेनी की माँ! कल ऐसी जगह जाऊँगा, वैसी जगह जाऊँगा कि बस, तुम्हारे लिए सोने का हार बना बनाया समझो। अरे, नींद का सोना कहो तो कहो, हार का सोना कहके काहे को जलाते हो?

पंचम – (चैतन्य होकर) अभी उठता हूँ, हाथ मुँह धोता हूँ। फिर जरा मुहूर्त देखकर निकलूँगा तो देख लेना, तुम्हारे द्वार पर सोना न बरसा दूँ तो पंचम मिसिर नाम नहीं। हाँ! ऐसा-वैसा नहीं हूँ। लाला हरकिशन दास का पुरोहित हूँ, जिसका कारोबार है। हाथी झूलते हैं उनके द्वार पर, हाथी। (सहसा) अरे हाँ! त्रिवेनी की माँ! मैं तो कहना ही भूल गया। हाथी के नाम पर याद आया कि ऐसा बढ़िया सपना देखा कि बस .... उछल पड़ो।

गायत्री – सो क्या देखा है, मैं भी सुनूँ!

पंचम – सुनाऊँ। मैंने देखे हैं, विष्णु भगवान। बताओ, देखे हैं किसी ने विष्णु भगवान सपने में?

अहह! क्या सीन था – विष्णु भगवान शेषनाग पर सो रहे हैं। साक्षात् लक्ष्मी जी उनका पैर दबा रही हैं। तो मैं भी दूसरी तरफ से पहुँचा और दूसरा पैर दबाने लगा। विष्णु भगवान ने मेरी तरफ देखा तो पूछा - क्या चाहते हो पंचम मिसिर? हे दीनबंधु, मैं यही चाहता हूँ कि लाला हरकिशन दास की लड़की की शादी मनोहरलाल के लड़के से करवा दो।

गायत्री – वाह! तुमने विष्णु भगवान से क्या माँगा? अरे! सोना-चाँदी कुछ माँगते।

पंचम – अरे! त्रिवेनी की माँ! माँगी तो वो चीज है कि खुद विष्णु भगवान चक्कर में पड़ जाएँगे। इस शादी के करवाने से घर में इतनी लक्ष्मी आएगी कि दो साल बाद त्रिवेनी की शादी कर लेना। विष्णु भगवान की लक्ष्मी शेषनाग को छोड़कर तुम्हारे घर आ जाएगी, तुम्हारे घर। तभी उन्होंने गणेश जी को बुलाया और उनके चूहे पर मुझे बिठलाया!

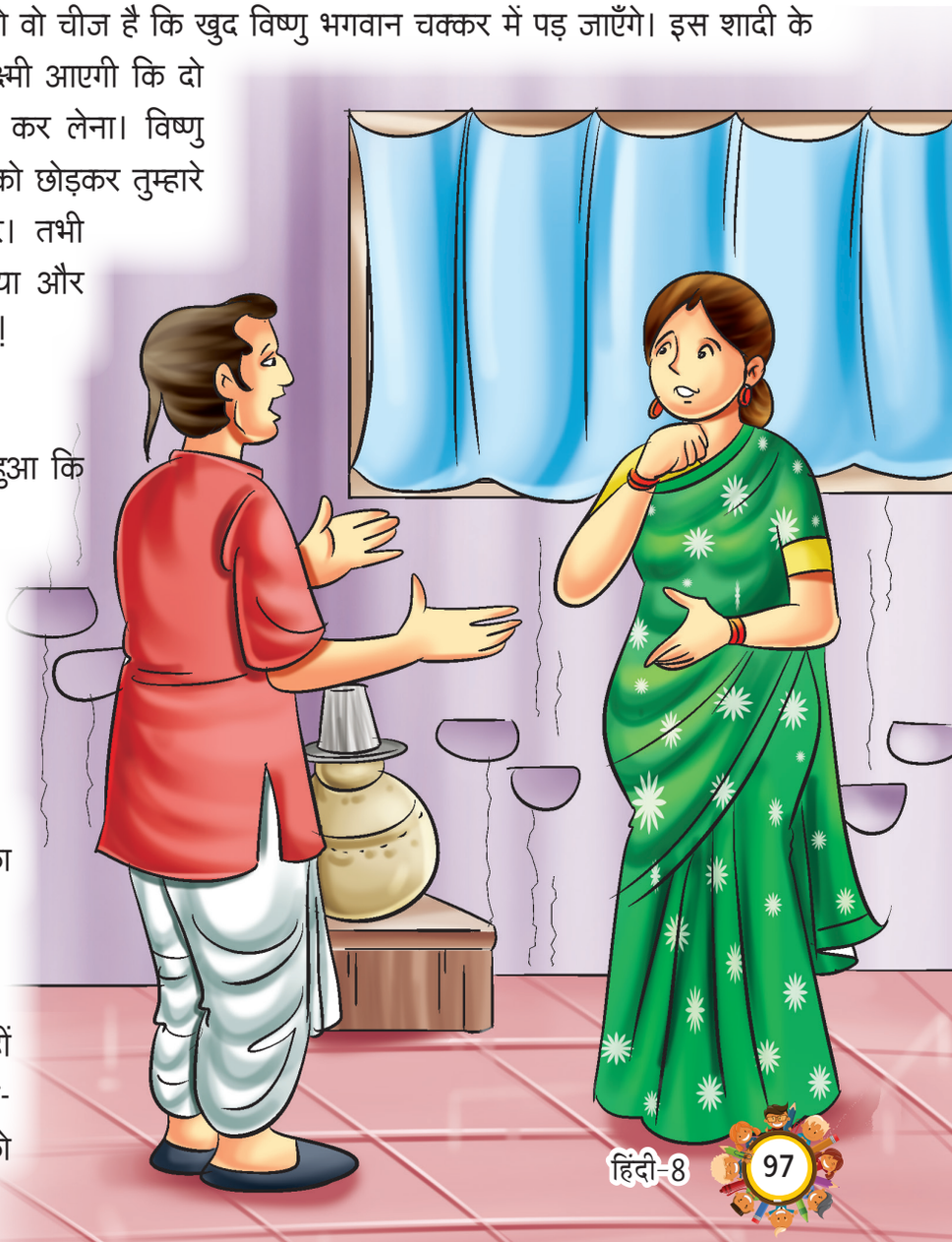

गायत्री – फिर?

पंचम – फिर जैसे ही मैं चढ़ने को हुआ कि लक्ष्मी जी ने बड़े जोर से छींका।

गायत्री – अरे, वो तो संपत ने छींका था, जब तुम सो रहे थे।

पंचम – संपत ने? नहीं मुझे तो ऐसा मालूम हुआ कि साक्षात् लक्ष्मी जी ने छींका था।

गायत्री – नहीं, संपत ने छींका था।

पंचम – तो अगर लक्ष्मी जी ने नहीं छींका, तो मेरा काम बना-बनाया है। पर इस संपत को

छींकने की क्या जरूरत पड़ गई? मेरे जागने में छींके तो छींके, मेरे सोने में भी छींकता है। त्रिवेनी की माँ! मैंने रात में पंचाग देख लिया है। हरकिशन दास के यहाँ जाने का मुहूर्त नौ बजकर पंद्रह मिनट है। (पुकारते हुए) संपत! संपत!

संपत – (बाहर से) जी पंडित जी। (प्रवेश)

पंचम – इधर तो आ, पंडित जी के बच्चे। घूमने के लिए काफी समय मिलता है, पर घर का काम करने में नानी याद आती है।

संपत – नहीं पंडित जी!

पंचम – (चिढ़ाकर) नहीं पंडित जी! क्यों रे, कल मैंने तुझसे क्या काम करने को कहा था?

संपत – पंडित जी! आपने कहा था कि चूहेदानी में नेवला पकड़कर रख लेना।

गायत्री – चूहेदानी में नेवला?

पंचम – हाँ, चूहेदानी में नेवला, नेवला शकुन की चीज है। मैंने इससे कहा था कि मुझे कल एक बड़े काम पर जाना है, तो हमारे शास्त्रों में लिखा है कि घर से चलते समय अच्छा शकुन होना चाहिए। नेवले का देखना शकुन माना जाता है। मैंने सोचा चलते वक्त नेवला कैसे दिखेगा, तो मैंने संपत से कहा कि चूहेदानी में नेवला पकड़ लेना और चलते वक्त मुझे दिखा देना। तो, क्यों रे, तूने चूहेदानी में नेवला पकड़ा?

संपत – जी ... जी .. नेवला आया ही नहीं। मैंने कई बार पिंजरे में रोटी डाल-डालकर नेवले का दिखलाया, पर वह आया ही नहीं।

पंचम – और हाँ, तूने देवीदीन ग्वाले से कह दिया है कि जब मै घर से चलूँ तो गाय और बछड़ा लेकर मेरे सामने दूध दुह दे।

संपत – देवीदीन से तो कह दिया है।

गायत्री – तो क्या यह भी कोई शगुन है?

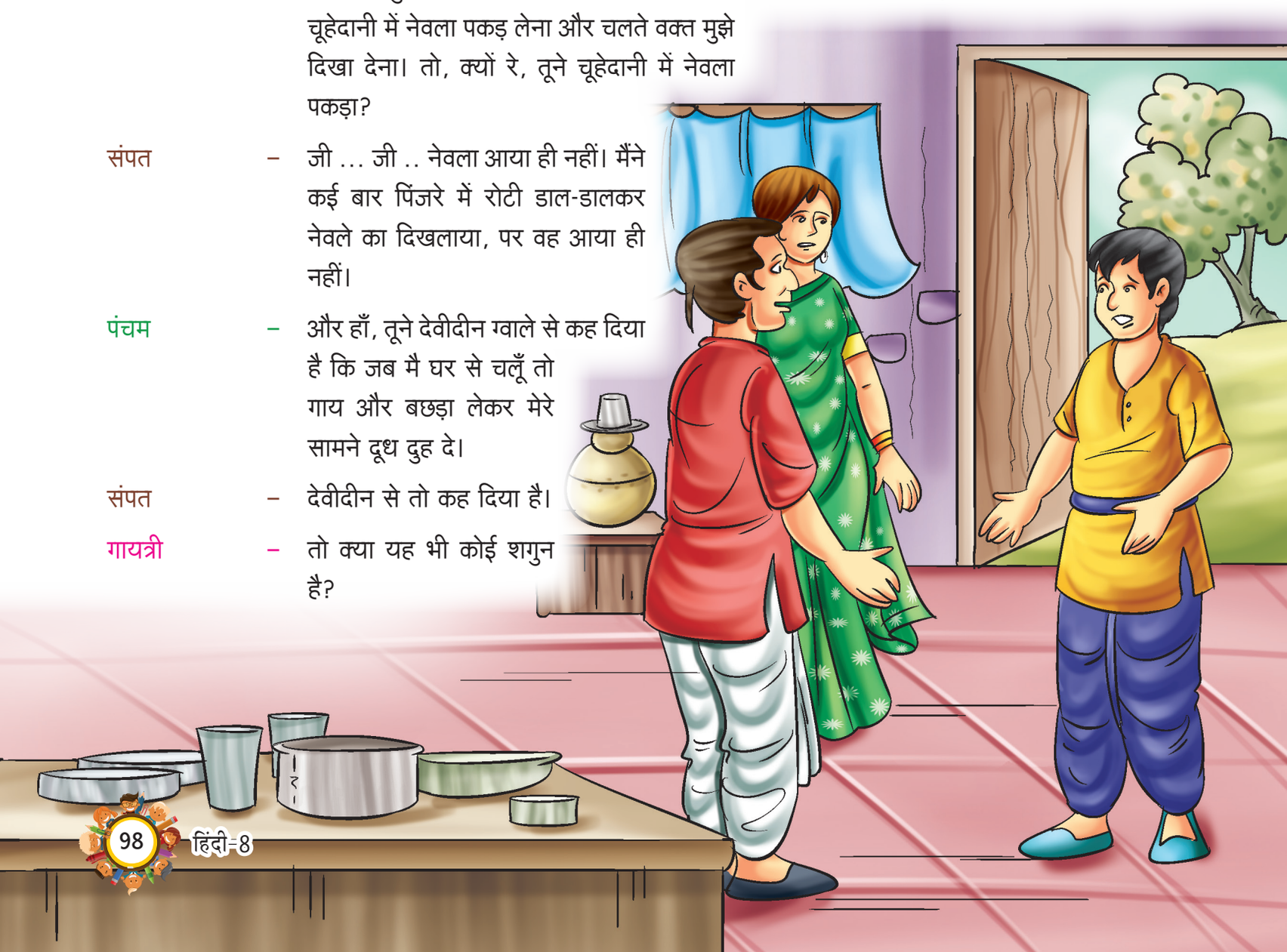

पंचम – पंचम मिसिर की पत्नी होकर इतना भी नहीं जानती कि यह कार्य-सिद्धि का सबसे बड़ा शकुन है? और हाँ, तुमने दही मँगा लिया?

गायत्री – वह तो घर में ही है।

पंचम – बस, तो ठीक है, मैं उसे खाकर जाऊँगा। संपत, बाहर जाकर देख कि अभी ग्वाला तो नहीं आया।

संपत – बहुत अच्छा, पंडित जी! (छींकता है)

पंचम – (उबलकर) इसने फिर छींका। क्यों रे संपत, लगाऊँ दो तमाचे। तू मेरा भतीजा होकर मेरे घर में रहता है, तो इसका मतलब है कि तू मेरे कामों में हमेशा अड़ंगा डाले।

संपत – मेरा कोई कसूर नहीं, पंडित जी।

पंचम – तो किसका है? मेरा है? मैंने छींका है? देखा, त्रिवेनी की माँ! मैं उठा और इसने छींका। यानी आज मेरा कोई काम न होगा। मुझे लाला हरकिशनदास के यहाँ जाकर मुहूर्त बताना था, तो मैं न जाऊँ? आज कि दिन तो कुछ मिलने वाला नहीं। जब देखो तब छींक।

गायत्री – मैं यह जानना चाहती हूँ कि छींक की बात किस पुराण में लिखी है ? जा रे संपत, बाहर जा।

(संपत बाहर जाता है।)

पंचम – छींक की बात जल-पुराण में लिखी है।

गायत्री – जल-पुराण में?

पंचम – क्यों, क्या तुम्हें शक है? अरे! हमारे यहाँ बहुत से पुराण हैं। अग्निपुराण है, वायुपुराण है तो एक जलपुराण भी है।

गायत्री – पर जलपुराण का नाम तो कभी नहीं सुना?

पंचम – तो सुना तुमने किस-किस का नाम है? पंडित लोग किसी नई बात की खोज तो करते नहीं। अरे! इतना नहीं समझती कि जब तीन लोक के जानने वाले हमारे ऋषि मुनियों ने अग्निपुराण लिखा, वायुपुराण लिखा तो क्या जल पुराण न लिखा होगा?

गायत्री – नहीं, जरूर लिखा होगा। तो जलपुराण का छींक से क्या संबंध?

पंचम – अब तुमको यह भी समझाऊँ? अरे जल के देवता कौन है? वरुण भगवान और वरुण भगवान का स्थान नाक। इसलिए छींक मे नाक से पानी निकलता है। इसीलिए हमारे ऋषि मुनियों ने छींक का वर्णन जल पुराण में किया है।

गायत्री – ठीक है, अब बात समझ में आई। और पंडित आपकी तरह न समझा पाते होंगे।

पंचम – किसी ने इतना पढ़ा भी है, जितना मैंने पढ़ा है? तभी तो सेठ हरकिशनदास मेरा लोहा मानते हैं। उनके सामने एक ही पुरोहित है पंचममिसिर।

गायत्री – हाँ! तो उठो, फिर जल्दी से तैयार हो जाओ। सेठ जी के यहाँ जाने का समय हो रहा है।

पंचम – अच्छी बात है। उठता हूँ।

(जैसे ही उठते हैं, एक बिल्ली के बोलने की आवाज, वह सामने से निकल जाती है)

पंचम – हाय रे भगवान! बिल्ली रास्ता काटकर निकल गई। इसका सर्वनाश हो।

गायत्री – यह बिल्ली कहाँ से आ गई?

पंचम – जहन्नुम से! रास्ता देख रही थी कि कब मैं सोकर उठता हूँ और कब यह रास्ता काटती है।

गायत्री – पर बिल्ली पर किसका जोर है? चलिए जाने दीजिए। दो अपशगुन मिलकर एक सगुन में बदल गए। अब उठिए, छींक के अपशगुन को बिल्ली ने काट दिया। उठो, चलकर मैं भी नहाती हूँ।

(प्रस्थान)

पंचम – जो कुछ होना होगा, देखा जाएगा। अब उठता हूँ।

(बाहर से देवीदीन की आवाज)

देवीदीन – मैं देवीदीन, महाराज! संपत भैया कह रहे थे कि मैं गाय और बछड़ा लेकर दूध निकालने आ जाऊँ। गाय तो बीमार थी सो पड़ोसी की भैंस ही किराए पर ले आया। आप किराए के दो रुपए दे दीजिए। मैं दूध निकालता हूँ।

पंचम – गाय के बदले भैंस ले आया। सारा शकुन खराब कर दिया अब रुपए भी माँगता है। जा यहाँ से।

देवीदीन – आपकी मर्जी मालिक। गरीबों की दुआ... बददुआ...

पंचम – क्या कह रहे हो?

देवीदीन – कुछ नहीं पंडित जी। (जोर से छींकता है)

पंचम – सुबह-सुबह छींकता क्यों है?

देवीदीन – क्या बताएँ पंडित जी। पड़ोस में कोई मिर्च कूट रहा है। उसी से सब छींक रहे हैं। (देवीदीन छींकता है। संपत का दौड़ते हुए प्रवेश)

संपत – पंडित जी! चूहेदानी में रोटी रखी थी तो उसमें रात चूहे फँस गए थे। उनको खाने के लिए बिल्ली इधर-उधर घूम रही थी। यहाँ से तो नहीं निकली।

पंचम – तो तूने ही वह बिल्ली खदेड़ी थी? उसे चूहे खाने के लिए नहीं मिले, शायद मुझे ही खाने आई थी। ठहर, आज मैं तेरी छींक निकालता हूँ। अरे! मुझे भी छींक आ रही है? एँ ... आ... छीं ... छीं... (परदा गिरता है।)

—डॉ. रामकुमार वर्मा

लेखक परिचय

हिंदी की लघु नाटक परंपरा को एक मोड़ देने वाले डॉ0 रामकुमार वर्मा आधुनिक हिंदी साहित्य में एकांकी सम्राट के रूप में जाने जाते हैं। इनका जन्म 15 ***सितंबर*** 1905 ***में हुआ। नाटककार और कवि के साथ-साथ उन्होंने समीक्षक, अध्यापक तथा हिंदी साहित्य-इतिहास लेखक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नाटककार के रूप में उन्होंने मनोविज्ञान के अनेकानेक स्तरों पर मानव जीवन की संवेदनाओं को स्वर दिया। इस महान लेखक का सन्*** 1990 ***में देहांत हो गया।***

शब्द-अर्थ

नेपथ्य — पर्दे के पीछे से
मुहूर्त — शुभ समय
साक्षात् — प्रत्यक्ष
खदेड़ना — बाहर भगाना
धरोहर — किसी का सामान सुरक्षित रखना
सहसा — अचानक
सर्वनाश — सब कुछ नष्ट हो जाना

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) पंचम मिसिर की पत्नी किस चिंता में थी?

(ख) पंचम मिसिर कैसे व्यक्ति थे?

(ग) जब गायत्री ने पंचम मिसिर से यह पूछा कि, "तुमने विष्णु भगवान से क्या माँगा? तो पंचम मिसिर ने क्या उत्तर दिया?

(घ) पंचम के सुबह उठने से पहले क्या घटना घटित हुई?

लिखित

1. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) पंचम मिसिर किसके घर जा रहे थे?

◯ लाला मनोहर लाल ◯ लाला हरकिशन दास ◯ लाला राधेश्याम

(ख) छींक की बात किस पुराण में लिखी है?

◯ वायु पुराण में ◯ अग्नि पुराण में ◯ जल पुराण में

(ग) देवीदीन दूध निकालने के लिए किसे ले आया?

◯ गाय को ◯ भैंस को ◯ बकरी को

(घ) पंचम ने संपत से चूहेदानी में क्या पकड़ने के लिए कहा?

◯ चुहिया ◯ नेवला ◯ इनमें से कोई नहीं

(ङ) चूहेदानी में फँसे चूहों को खाने के लिए कौन इधर-उधर घूम रही थी?

◯ नेवला ◯ बिल्ली ◯ कुत्ता

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) पंडित जी को किसने जगाया और क्यों?

(ख) पंडित जी ने विष्णु भगवान से क्या माँगा?

(ग) संपत पिंजरे में नेवला बंद करने का प्रयास क्यों कर रहा था?

(घ) पंचम मिसिर लाला हरकिशनदास के यहाँ क्यों जा रहे थे?

(ङ) देवीदीन भैंस लेकर क्यों आया?

(च) इस एकांकी में लेखक ने किस सामाजिक अंधविश्वास की चर्चा की है? क्या आप इस विचार से सहमत हैं, तो क्यों?

(छ) कार्य-सिद्धि के लिए पंचम मिसिर ने किन शकुनों का वर्णन किया है?

(ज) पंचम मिसिर के उस दिन के कार्यक्रम का अंत कैसे हुआ?

3. इन पात्रों की दो-दो चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए–

पंचम मिसिर, गायत्री, देवीदीन, संपत।

भाषा-ज्ञान

1. इसे पढ़कर समझिए–

मैंने विष्णु भगवान से माँगा।

मैंने विष्णु भगवान से सोना-चाँदी माँगा।

ऊपर के दोनों वाक्यों में 'मैं' कर्ता है। पहले वाक्य में कर्म नहीं। यहाँ क्रिया का फल सीधे कर्ता पर पड़ रहा है। इसलिए यह अकर्मक क्रिया है।

दूसरे वाक्य में क्रिया का फल कर्ता पर न पड़कर कर्म (सोना-चाँदी) पर पड़ रहा है, इसीलिए यह सकर्मक क्रिया है।

- **पाठ में से अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं के दो-दो वाक्य लिखिए–**

_____

_____

2. उदाहरण के अनुसार साधारण वाक्य को निषेधात्मक और संदेहबोधक वाक्यों में बदलिए–

जैसे :

साधारण वाक्य	मुझे यह काम करना है।
निषेधात्मक	मुझे यह काम नहीं करना है।
संदेहबोधक	शायद मुझे यह काम करना है।

वाक्य–

विष्णु भगवान शेषनाग पर सो रहे हैं।

_____

_____

_____

दो साल बाद त्रिवेणी की शादी होगी।

_____

_____

_____

चूहेदानी में नेवला पकड़ कर रख लेना।

_____

_____

_____

मैं दही खाकर जाऊँगा।

_____

_____

_____

3. इन शब्दों के दो-दो अर्थ हैं। दोनों अर्थों के अनुरूप वाक्य बनाइए–

सोना _____

_____

कल _____

_____

हार _____

_____

बस _____

_____

4. मुहावरों के अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

सोना बरसना — _____ _____

नानी याद आना — _____ _____

लोहा मानना — _____ _____

5. इन संवादों को उचित आरोह अवरोह के साथ पढ़िए–

- नींद का सोना कहो तो कहो, हार का सोना कहके काहे को जलाते हो।
- संपत ने! नहीं, मुझे तो ऐसा लगा साक्षात् लक्ष्मी जी ने छींका है।
- पंडित जी! आपने कहा था कि चूहेदानी में नेवला पकड़कर रख लेना।
- आपकी मर्जी मालिक! गरीबों की दुआ ... बददुआ....

क्रियात्मक गतिविधि

- **इस एकांकी का प्रार्थना सभा में मंचन कीजिए।**
- **नाटक के विभिन्न पात्रों के मध्य संवाद का अर्थ है- वार्तालाप या बातचीत।**

संवाद लिखते समय निम्न बातों की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।

- संवाद एक दूसरे से क्रमिक रूप से जुड़े हों।
- संवाद छोटे और रुचिकर होने चाहिए।
- संवादों की भाषा सरल और भावानुकूल हो।
- संवाद पात्रानुकूल होने चाहिए।

- **इन बातों का ध्यान रखते हुए दो मित्रों के बीच दूरदर्शन के किसी कार्यक्रम पर हुए संवाद लिखिए।**
- **अशिक्षा अंधविश्वास को जन्म देती है'' इस विषय के पक्ष विपक्ष में कक्षा में एक नाटक के रूप में दो पक्षों के मध्य 'वाद-विवाद प्रतियोगिता' प्रस्तुत कीजिए।**

श्रीराम की बाल-लीला

16

बाल-लीला

कबहूँ ससि माँगत आरि करैं कबहूँ प्रतिबिंब निहारि डरैं।
कबहूँ करताल बजाइकैं नाचत मातु सबै मन मोद भरैं।।
कबहूँ रिसिआइ कहैं हठिकै पुनि लेत सोई जेहि लागि अरैं।
अवधेस के बालक चारि सदा तुलसी मन-मंदिर में बिहरैं।।1।।

बर दंत की पंगति कुंदकली अधराधर-पल्लव खोलन की।
चपला चमकै घन बीच जगैं छबि मोतिन माल अमोलन की।।
घुँघरारि लटैं लटकैं मुख ऊपर कुंडल लोल कपोलन की।
नेवछावरि प्रान करैं तुलसी बलि जाउँ लला इन बोलन की।।2।।

पग नूपुर औ पहुँची करकंजनि मंजु बनी मनिमाल हिएँ।
नवनीत कलेवर पीत झँगा झलकैं पुलकैं नृपु गोद लिएँ।
अरबिंदु सो आननु रूप मरंदु अनंदित लोचन-भृंग पिएँ।
मन मो न बस्यौ अस बालकु जौं तुलसी जग में फलु कौन जिएँ।।3।।

तनकी दुति स्याम सरोरूह लोचन कंजकी मंजुलताई हरैं।
अति सुंदर सोहत धूरि भरे छबि भूरि अनंग की दुरि धरैं।
दमकैं दँतियाँ दुति दामिनि ज्यों किलकैं कल बाल-बिनोद करैं।
अवधेस के बालक चारि सदा तुलसी मन-मंदिर में बिहरै।।4।।

—तुलसीदास

कवि परिचय

श्रीराम के दिव्य चरित्र का 'स्वांतः सुखाय' गुणगान करने वाले महाकवि तुलसीदास का जन्म उत्तर प्रदेश में बाँदा जिले के राजापुर नामक ग्राम में संवत् 1554 में हुआ था। उनके पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। उनकी अधिकांश रचनाएँ अवधी भाषा में लिखी गई हैं, जिनमें यथास्थान संस्कृत भाषा का प्रयोग भी दिखाई देता है। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- 'रामचरितमानस', 'कवितावली', 'गीतावली', 'पार्वती मंगल', 'बरवै रामायण', 'राम लला नहछू' आदि। ऐसा माना जाता है कि संवत् 1680 के श्रावण मास में तुलसीदास जी की जीवन-लीला समाप्त हो गई।

शब्द-अर्थ

कबहूँ	—	कभी	आरि	—	जिद
निहारि	—	देखकर	प्रतिबिंब	—	छाया, परछाई
करताल	—	ताली	मोद	—	आनंद
रिसिआइ	—	क्रोधित होकर	अवधेस	—	अवध के राजा 'दशरथ'
बिहरैं	—	विहार करें	बर	—	सुंदर, श्रेष्ठ
पंगति	—	पंक्ति	पल्लव	—	(सुकोमल) पत्ते
चपला	—	बिजली	अमोलन	—	बहुमूल्य
नेवछवरि	—	न्योछावर होना, बलिहारी जाना	मंजु	—	सुंदर
नूपुर	—	घुँघरू	नवनीत	—	मक्खन जैसे सुकोमल
कलेवर	—	शरीर, ऊपरी ढाँचा	झँगा	—	वस्त्र
अरबिंदु	—	कमल	भृंग	—	भौंरे
दुति	—	कांति	कंज	—	कमल
मंजुलताई	—	सुंदरता	अनंग	—	कामदेव
बाल-बिनोद	—	बच्चों का आनंद	सरोरूह	—	कमल

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए-**

(क) इस कविता में किसके बाल-रूप का वर्णन किया गया है?

(ख) 'अवधेस के बालक चारि' के किन-किन बालकों की ओर संकेत किया गया है?

(ग) राजा दशरथ की सभी रानियों के नाम बताइए?

(घ) महाकवि तुलसीदाय क्या चाहते हैं?

(ङ) इसके पहले आपने किस कवि की 'बाल-लीला' नामक रचना को पढ़ा है?

लिखित

1. नीचे लिख काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

कबहूँ ससि माँगत आरि करैं, कबहूँ प्रतिबिंब निहारि डरैं।
कबहूँ करताल बजाइकै नाचत, मातु सबै मन मोद भरैं।।

(क) बच्चे किस बात की जिद कर रहे हैं?

(ख) बच्चे किसे देखकर डर जाते हैं?

(ग) माताएँ किसे देखकर प्रसन्न होती हैं?

(घ) इस काव्यांश में किस भाषा का प्रयोग किया गया है?

(ङ) श्रीराम के प्रस्तुत बाल-रूप का वर्णन तुलसीदास जी की किस रचना से अवतरित है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) राम अपने भाइयों के साथ कहाँ खेल रहे हैं?

(ख) छोटे-छोटे सुंदर दाँतों की पंक्ति की तुलना कवि ने किसके साथ की है?

(ग) बालकों की मीठी बोली सुनकर कवि की क्या स्थिति होती है?

(घ) कवि के अनुसार संसार में जीवन जीने का सच्चा फल कौन प्राप्त करता है?

(ङ) बालकों के हँसने पर कवि को कैसा प्रतीत होता है?

(च) राजा दशरथ के आँगन में बच्चे कौन-कौन से खेल किस प्रकार खेल रहे हैं?

(छ) श्रीराम के मुख-मंडल के सौंदर्य का वर्णन कवि ने किस प्रकार किया है?

(ज) राजा दशरथ की गोद में श्रीराम किस प्रकार सुशोभित हो रहे हैं?

(झ) श्रीराम के श्यामल वर्ण की सुंदरता का वर्णन करते हुए कवि क्या कहते हैं?

भाषा-ज्ञान

1. निम्न अवधी शब्दों के लिए प्रचलित हिंदी शब्द लिखिए–

(क) कबहूँ – _____ (ख) मरंदु – _____

(ग) माँगत – _____ (घ) अस – _____

(ङ) सोई – _____ (च) बस्यो – _____

(छ) नेवछावरि – _____ (ज) बिहरैं – _____

2. निम्नलिखित वाक्यों में कारक चिह्नों को रेखांकित करते हुए उनके नाम लिखिए–

(क) राजा दशरथ ने राम को गोद में उठा लिया। _____

(ख) बालक अपने प्रतिबिंब से डर गए। _____

(ग) चारों बालक तुलसी के मन-मंदिर में विहार कर रहे हैं। _____

(घ) श्रीराम के श्यामल तन की शोभा कमल के सौंदर्य को पराजित करती है। _____

(ङ) रानियाँ बच्चों को खेलते देखकर प्रसन्न होती हैं। _____

3. 'ने' का प्रयोग- 'न' का प्रयोग भूतकाल की क्रिया के साथ किया जाता है। वर्तमान काल या भविष्यत काल के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं किया जाता है। 'ने' के प्रयोग संबंधी कुछ आवश्यक बातें इस प्रकार हैं-

(क) जब कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग किया जाता है, तो क्रिया सामान्यतया सकर्मक होती है। जैसे- राम ने ताली बजाकर नृत्य किया।

(ख) 'ने' का प्रयोग सदैव कर्ता (संज्ञा) के ठीक बाद में किया जाता है। जैसे- राम ने माताओं को प्रसन्न किया।

(ग) 'ने' को सर्वनाम शब्दों के साथ जोड़ दिया जाता है। जैसे- उन्होंने खेलना प्रारंभ किया।

- **'ने' का प्रयोग करते हुए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-**

(क) राम _____ पिता दशरथ को बुलाया।

(ख) बच्चों _____ खेलना प्रारंभ किया।

(ग) _____ ताली बजाकर नृत्य किया।

(घ) माताओं _____ बच्चों को गोद में उठा लिया।

(ङ) तुलसी _____ श्रीराम की महिमा का वर्णन किया।

क्रियात्मक गतिविधि

- **महाकवि तुलसीदास जी के जीवन और रचनाओं के संबंध में एक प्रस्तुतीकरण (प्रेजेंटेशन) तैयार कीजिए।**
- **भक्तिकाल के प्रमुख कवियों और उनकी रचनाओं को चार्ट-पेपर पर लिखकर कक्षा में सूचना-पट्ट पर लगाइए।**
- **अगर घर पर आप किसी चीज की जिद करते हो तो वो आपको न मिले तो क्या करोगे बताइऐ?**
- **श्रीराम की बाल-लीला कविता का मंचन अपनी कक्षा में कीजिए।**

कर्तव्यबोध 17

सिपाही अपनी प्रभावशाली, मुस्तैद चाल में चहल-कदमी कर रहा था। उस समय पर सड़क पर अधिक लोग नहीं थे, इसलिए उसकी यह चाल किसी पर रौब डालने के लिए नहीं थी। अभी रात के आठ ही बजे थे, लेकिन हवा के ठंडे झोंकों के साथ हलकी वर्षा के कारण मार्ग सुनसान था। वह उस क्षेत्र की दुकानों के ताले देखता हुआ आ रहा था और लग रहा था मानो शांति का साम्राज्य उसकी उपस्थिति के कारण ही है। एक स्थान पर उसकी चाल धीमी हो गई। एक दुकान के दरवाजे पर उसे एक आकृति दिखी, जिसके मुँह में अधजला सिगार था। सिपाही उस ओर बढ़ा, तो वह व्यक्ति बोला, "कोई खास बात नहीं है। मैं एक मित्र की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। बीस साल पहले यहाँ पर एक रेस्तराँ था और मैंने अपने मित्र से वादा किया था कि पूरे बीस साल बाद इसी स्थान पर हम लोग मिलेंगे।"

"हाँ"- सिपाही बोला, "पाँच साल पहले वह रेस्तराँ बंद हो गया।"

दुकान के दरवाजे पर खड़े आदमी ने अपना सिगार जलाया और प्रकाश में सिपाही ने देखा कि उस व्यक्ति का रंग गोरा था, चौकोर आकार के मुखड़े पर आकर्षक आँखें थी और दाहिनी आँख के ऊपर चोट का निशान था। उसने गले में स्कार्फ पहन रखा था, जिस पर हीरे-जड़ा एक पिन लगा था।

वह व्यक्ति बोला, "बीस साल पूर्व, आज की रात मैं अपने परम मित्र जिमी के साथ रेस्तराँ में खाना खा रहा था। हम दोनों यही न्यूयॉर्क में पैदा हुए। मैं तब अठारह वर्ष का था और जिमी बीस का। दूसरे दिन सवेरे ही मैं न्यूयॉर्क छोड़कर दक्षिण की ओर अपनी किस्मत आजमाने जाने वाला था। जिमी को भी बहुत कहा था, परंतु वह तो न्यूयॉर्क को दुनिया का दिल समझता था। सो उस रात हमने फैसला किया- बीस साल बाद, इसी रात इसी समय हम यही मिलेंगे, चाहे हमें संसार के किसी भी कोने से क्यों न आना पड़े।"

"काफी रूचिकर लग रहा है यह सब सुनना।"– सिपाही ने कहा, "लेकिन क्या इस बीच तुम दोनों में कोई पत्र-व्यवहार नहीं हुआ?"

"हाँ, कुछ दिनों तक तो हुआ, परंतु एक-दो वर्षों पश्चात् हमें एक-दूसरे के ठिकाने पता नहीं रहे और उधर दक्षिणी अमेरिका में मैं भी एक स्थान पर अधिक देर नहीं रहा, लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि यदि मेरा दोस्त जिमी आज जिंदा है, तो मुझसे मिलने अवश्य आएगा और यह जानकर कितना खुश होगा कि मैं हजारों मील दूर से

उससे मिलने आया हूँ!'' उसने अपनी कलाई पर रत्नजड़ित घड़ी देखी और बोला, ''दस बजने में तीन मिनट बाकी हैं। हम यहाँ से पूरे दस बजे विदा हुए थे।''

''लग रहा है कि आपने इन बीस वर्षों में काफी धन कमाया है?'' – सिपाही ने पूछा।

''बेशक! मुझे यकीन है जिमी ने मुझसे आधा धन अवश्य कमाया होगा। न्यूयॉर्क में जिमी जैसा व्यक्ति इससे अधिक क्या कर सका होगा, लेकिन उधर की ओर तो तेल-व्यापारियों के साथ काम करने के कारण हर आदमी की बुद्धि तेज हो जाती है।''

सिपाही अपनी छड़ी घुमाता हुआ चलने लगा और बोला, ''अच्छा, मै चलता हूँ। आशा है आपका दोस्त आता होगा। क्या आप रुकोगे उसके लिए?''

''सोचता हूँ, आधा घंटा तो और रुकना चाहिए। अगर वह जीवित है, तो अवश्य आएगा।''

''अच्छा, शुभ रात्रि!'' – कहते हुए सिपाही आगे की दुकानों के ताले देखता हुआ चला गया।

वर्षा कुछ तेज हो गई थी। हवा भी कुछ अधिक तीखी थी, सो इक्का-दुक्का आने-जाने वाले अपने ओवरकोटों के कॉलर ऊपर उठाकर तेजी से घरों की ओर लपकने लगे थे। वह व्यक्ति वहीं द्वार की आड़ में खड़ा, बीस मिनट तक अपना सिगार पीता रहा। तब एक लंबा तगड़ा व्यक्ति, कॉलर ऊपर उठाए उसकी ओर आया और आते ही पूछा, ''क्या तुम बॉब हो?''

द्वार पर खड़ा व्यक्ति उछल पड़ा, ''अरे! तुम जिमी हो क्या?''

आगंतुक ने उसके दोनों हाथ थामकर कहा, ''क्या किस्मत है! मुझे यकीन था कि तुम यहीं मिलोगे। बीस साल बहुत लंबा समय होता है। पुराना रेस्तराँ तो समाप्त हो गया, वरना वहीं बैठकर खाना खाते। किस्मत ने कैसे-कैसे खेल-खिलाए और कैसे बीता तुम्हारा जीवन?''

''बहुत बढ़िया! मुझे जीवन में सब-कुछ मिला, लेकिन जिमी तुम बहुत बदल गए हो। लंबाई में भी तीन-चार इंच बढ़ गए हो।''

''बस बीस के बाद थोड़ा लंबा हो गया था।''

''न्यूयॉर्क मे तुम भी तो सफल रहे होगे?''

''खास नहीं, इस नगर की सेवाओं में मेरा भी कुछ योगदान रहा। चलो किसी और जगह बैठकर गप्प मारते हैं।''

दोनों व्यक्ति बाँह-में-बाँह डाले गपशप करते हुए चलने लगे। जो व्यक्ति अपना भाग्य आजमाने न्यूयॉर्क छोड़कर गया था, वह बढ़-चढ़कर अपनी सफलता का राग अलाप रहा था और दूसरा व्यक्ति उसकी बातों को सुन रहा था।

चौराहे पर एक स्टोर के जगमगाते प्रकाश में दोनों पहुँचे, तो दोनों ने एक-

दूसरे को देखा। एक बोला, "तुम जिमी नहीं लगते। बीस साल का समय तो बहुत है, लेकिन इतना नहीं कि एक आदमी की नाक भी बिल्कुल बदल डाले"

"लेकिन बीस साल में एक अच्छे आदमी को बुरा आदमी बनने का सामर्थ्य तो है"– यह कहकर उस लंबे व्यक्ति ने आगे कहा, "आप पिछले दस मिनट से बंदी बना लिए गए हैं, मिस्टर सिल्वी बॉब! शिकागों से आपको पकड़ने के आदेश हमारे पास हैं। आप चुपचाप मेरे साथ चलें, इसी मे आपकी भलाई है। हाँ मेरे पास एक लिखा हुआ परचा है, जो आपको देने के लिए मुझे कहा गया है। इसे आप यहीं प्रकाश में पढ़ सकते हैं।" परचे पर दो-चार पंक्तियाँ लिखी हुई थीं और परचा समाप्त करने तक उसके हाथ काँप रहे थे। पर्चे में लिखा था– "बॉब, मैं नियत समय पर उसी स्थान पर तुमसे मिलने आया था। तब तुमने अपना सिगार सुलगाया, तो तुम्हारा चेहरा देखकर मुझे पता लग गया कि शिकागो से तुम्हें ही पकड़ने के लिए आदेश आए हुए हैं। इस कार्य को करने में मैंने स्वयं को असमर्थ पाया, अतः यहाँ थाने आकर किसी अन्य व्यक्ति को यह कार्य करने भेज रहा हूँ।"

—ओ० हेनरी

लेखक परिचय

प्रसिद्ध अमेरीकी कहानीकार ओ. हेनरी का जन्म 11 सितंबर, 1862 ई. में उत्तरी अमेरीका के उत्तरी कैरोलिना में हुआ था। उनका वास्तविक नाम विलियम सिडनी पोर्टर था। उन्होंने 600 कहानियाँ लिखीं। इन कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता इनमें आने वाले मोड़ तथा इसकी रोचक कलात्मक समाप्ति है। उनका देहावसान न्यूयॉर्क में 5 जून, 1910 में हुआ था।

शब्द-अर्थ

मुस्तैद	—	चुस्त अंदाज में	**आगंतुक**	—	आने वाला
चहलकदमी	—	धीरे-धीरे	**सामर्थ्य**	—	शक्ति/योग्यता/क्षमता
नियत	—	निश्चित	**रौब**	—	रुतबा दिखाना, अधिकार जताना
रत्नजड़ित	—	रत्न जड़े हुए	**सुनसान**	—	निर्जन
आजमाने	—	जाँचने-परखने	**यकीन**	—	विश्वास
इक्का-दुक्का	—	एक-दो			

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) रात के आठ बजे सड़क पर कौन चहलकदमी कर रहा था?

(ख) दुकान के दरवाजे पर खड़ा व्यक्ति किसकी प्रतीक्षा कर रहा था?

(ग) दोनों मित्रों के क्या नाम थे?

(घ) दोनों मित्रों का जन्म कहाँ पर हुआ था?

(ङ) क्या दोनों मित्र एक दूसरे को पत्र लिखते थे?

लिखित

1. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) दोनों मित्रों ने कहाँ पर मिलने का फैसला किया था?

- ◯ घर पर
- ◯ बाजार में
- ◯ न्यूयॉर्क के रेस्तराँ में
- ◯ जिस स्थान पर अंतिम बार मिले थे, उसी स्थान पर

(ख) सिपाही ने कैसे जाना कि व्यक्ति अमीर है?

- ◯ उसके गले के स्कार्फ को देखकर
- ◯ उसे दुकान के पास खड़े देखकर
- ◯ उसे सिगार पीते देखकर
- ◯ उसकी बातें सुनकर

(ग) बॉब न्यूयॉर्क छोड़कर किस्मत आजमाने कहाँ गया?

- ◯ वह उत्तर में अपनी किस्मत आजमाने गया।
- ◯ वह न्यूयॉर्क में ही अपनी किस्मत आजमा रहा था।
- ◯ वह दक्षिण मे अपनी किस्मत आजमाने गया।
- ◯ वह विदेश मे अपनी किस्मत आजमाने गया।

(घ) जिमी ने अपने मित्र का चेहरा कब देखा?

- ◯ चौराहे पर
- ◯ जब उसके मित्र ने सिगार सुलगाया
- ◯ जब उसके मित्र ने घड़ी देखी
- ◯ जब उनके दुकान की रोशनी उस पर पड़ी

(ङ) जिमी क्या जानकर खुश होता?

- ◯ उसका मित्र बहुत रईस हो गया है।
- ◯ उसके मित्र के पास रत्नजड़ित घड़ी हैं।
- ◯ उसके मित्र के पास हीरे जड़ा स्कार्फपिन है।
- ◯ उसका मित्र हजारों मील दूर से उससे मिलने आया है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) सिगार पीते हुए व्यक्ति ने सिपाही से क्या कहा?

(ख) रेस्तराँ कब और कितने बजे बंद हो गया था?

(ग) दोनों मित्र कितने वर्ष पूर्व और कितने बजे एक दूसरे से अलग हुए थे?

(घ) जिमी ने बॉब को गिरफ्तार करने के लिए किसे भेजा?

(ङ) बॉब और जिमी की जीवन-दिशाएँ बीस वर्ष पहले क्यों बदल गई थी?

(च) अलग होने से पहले दोनों मित्रों ने क्या फैसला किया था?

(छ) आंगतुक ने दुकान के द्वार पर खड़े व्यक्ति से क्या कहा?

(ज) ''लेकिन बीस साल में एक अच्छे आदमी को बुरा आदमी बनाने का सामर्थ्य तो है।''

(i) यह वाक्य किसने किस संदर्भ मे कहा?

(ii) 'बुरा आदमी' शब्दों का प्रयोग किसके लिए किया गया है और क्यों?

(झ) 'ईमानदारी से धन कमाने मे ही जीवन का सच्चा सुख निहित है।' पाठ के संदर्भ में इस कथन की सार्थकता बताइए।

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित वाक्यों में कारक चिह्नों को रेखांकित करते हुए उनके भेद लिखिए–

(क) हम दोनों न्यूयॉर्क में पैदा हुए थे। _____

(ख) जिमी ने मुझसे आधा धन तो अवश्य कमाया होगा। _____

(ग) बस बीस के बाद थोड़ा लंबा हो गया। _____

(घ) आप पिछले दस मिनट से बंदी बना लिए गए हैं। _____

(ङ) बॉब न्यूयॉर्क से दूर चला गया था। _____

2. 'कोई', 'किसी' और 'कुछ' अनिश्चयवाचक सर्वनाम शब्द हैं। 'कोई' और 'किसी' का प्रयोग प्राणिवाचक संज्ञाओं के लिए किया जाता है। जबकि 'कुछ' का प्रयोग निर्जीव वस्तुओं और कीट-पतंगों के लिए किया जाता है।

जैसे– (i) वर्षा में कुछ साफ दिखाई नहीं दे रहा था।

(ii) सिपाही ने देखा कि दुकान के दरवाजे के पास कोई खड़ा है।

- **'कोई', 'किसी' और 'कुछ' का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए–**

कोई– _____

किसी– _____

कुछ– _____

3. 'न', 'नहीं', 'मत' का प्रयोग- ये तीनों ही निषेधवाचक शब्द हैं, परंतु इनके प्रयोग में भिन्नता होती है।

'न' का प्रयोग- यदि जिमी अपने मित्र बॉब को न पकड़वाता, तो वह देशद्रोही कहलाता।

इस उदाहरण से स्पष्ट होता है कि 'न' का प्रयोग आज्ञावाचक, संकेतवाचक और संदेहवाचक वाक्यों में किया जाता है।

उदाहरण- शायद आज हड़ताल न हो।

'नहीं' का प्रयोग- निषेधवाचक वाक्यों में 'नहीं' का प्रयोग किया जाता है। जैसे- तुम जिमी नहीं लगते।

'मत' का प्रयोग- आदेशवाचक निषेध की सूचना देने वालो वाक्यों में 'मत' का प्रयोग किया जाता है। प्रथम पुरुष के साथ 'मत' का प्रयोग नहीं होता है, केवल मध्यम पुरुष के साथ 'मत' का प्रयोग किया जाता है। जैसे- तुम भागने की कोशिश मत करो। चुपचाप मेरे साथ चलो।

'न', 'नहीं' और 'मत' का प्रयोग करते हुए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) तुम मेरे मित्र _____ हो।

(ख) तुमने मुझे _____ बताया कि तुम पुलिस अफसर हो।

(ग) पुलिस से भागने की कोशिश _____ करो।

(घ) _____ बॉब जानता था और _____ ही जिमी कि जिंदगी उन्हें इस मोड़पर ले आएगी।

(ङ) जिमी ने बॉब को देशद्रोही के रूप में देखने की कल्पना भी _____ की थी।

4. अर्थ के आधार पर वाक्य भेद- अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं–

(क) विधानवाचक वाक्य (ख) आज्ञावाचक वाक्य (ग) निषेधवाचक वाक्य

(घ) इच्छावाचक वाक्य (ङ) प्रश्नवाचक वाक्य (च) संदहवाचक वाक्य

(छ) विस्मयवाचक वाक्य (ज) संकेतवाचक वाक्य

(क) विधानवाचक वाक्य– जिन वाक्यों से बात या कार्य के होने का ज्ञान हो, उन्हें विधानवावचक वाक्य कहते हैं। जैसे- बॉब जिमी की प्रतीक्षा कर रहा था।

(ख) आज्ञावाचक वाक्य– जिन वाक्यों में किसी बात अथवा कार्य के होने का निषेध होता है, उन्हें निषेधावाचक वाक्य कहते हैं। जैसे- तुम जिमी तो नहीं लगते हो।

(ग) प्रश्नवाचक वाक्य– जिन वाक्यों में किसी प्रकार का प्रश्न पूछा जाता है, उन्हें प्रश्नवाचक कहते हैं। जैसे- क्या आप रुकोगे उसके लिए?

(घ) विस्मयवाचक वाक्य– जिन वाक्यों से विस्मय, हर्ष, शोक, घृणा आदि भाव प्रकट होते हैं, उन्हें निषेधवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे- बहुत बढ़िया! मुझे जीवन में सब कुछ मिला है।

- **नीचे लिखे वाक्यों के अर्थ के आधार पर भेद लिखिए–**

(क) सुनसान सड़क पर सिपाही मुस्तैदी से चल रहा था।

(ख) उस सड़क पर अधिक लोग नहीं थे।

(ग) बीस साल बाद हमने यहीं पर मिलने का वादा किया था।

(घ) क्या आप किसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं?

(ङ) अच्छा, शुभरात्रि! कहता हुआ सिपाही आगे बढ़ गया।

(च) किसी ने न्यूयॉर्क शहर को नहीं छोड़ा।

क्रियात्मक गतिविधि

- **पुस्तकालय अथवा इंटरनेट की सहायता से 'ओ० हेनरी' की अन्य कहानियाँ पढ़िए। आप अपनी मनपसंद कहानी को अपने शब्दों में लिखकर अपनी परियोजना पुस्तिका में लगाइए।**

मैं और मेरा देश 19

मैं अपने घर में जन्मा था, पला था। अपने पड़ोस में खेलकर, पड़ोसियों की ममता-दुलार पा बड़ा हुआ था। अपने नगर में घूम-फिरकर वहाँ के विशाल समाज का संपर्क पा, वहाँ के संचित ज्ञान-भंडार का उपयोग कर, उसे अपनी सेवाओं का दान दे, उसकी सेवाओं का सहारा पा और इस तरह एक मनुष्य से एक भरा-पूरा नगर बनकर मैं खड़ा हुआ था।

मैं अपने नगर के लोगों का सम्मान करता था, वे भी मेरा सम्मान करते थे। मुझे बहुतों की अपने लिए जरूरत पड़ती थी। मैं भी बहुतों की जरूरत का उनके लिए जवाब था। इस तरह मैं समझ रहा था कि मैं अपने में अब पूरा हो गया हूँ, पूरा फैल गया हूँ, पूरा मनुष्य हो गया हूँ।

मैं सोचा करता था कि मेरी मनुष्यता में अब कोई अपूर्णता नहीं रही, मुझे अब कुछ न चाहिए, जो चाहिए वह सब मेरे पास है- मेरा घर, मेरा पड़ोस, मेरा नगर और मैं। वाह! कैसी सुंदर, कैसी संगठित और कैसी पूर्ण है मेरी स्थिति।

एक दिन आनंद की इस दीवार में एक दरार पड़ गई और तब मुझे सोचना पड़ा कि अपने घर, अपने पड़ोस, अपने नगर की सीमाओं में ममता, सहारा, ज्ञान और आनंद के उपहार पाकर भी मेरी स्थिति एकदम हीन है और हीन भी इतनी कि मेरा कहीं भी कोई अपमान कर सकता है- एक मामूली अपराधी की तरह और मुझे यह भी अधिकार नहीं कि मैं उस अपमान का बदला लेना तो दूर रहा, उसके लिए कहीं अपील या दया-प्रार्थना ही कर सकूँ।

"क्या कोई भूकंप आया था, जिससे दीवार में यह दरार पड़ गई?"

बड़े महत्तव का प्रश्न है। इस अर्थ में भी कि यह बात को खिलने का, आगे-बढ़ने का, अवसर देता है और इस अर्थ में भी कि ठीक समय पर पूछा गया है। ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने में एक अपूर्व आनंद आता है, तो उत्तर यह है आपके प्रश्न काः

जी हाँ, एक भूकंप आया था, जिससे दीवार में यह दरार पड़ गई और लीजिए आपको कोई नया प्रश्न न पूछना पड़े, इसलिए मैं अपनी ओर से ही कहे दे रहा हूँ कि यह दीवार थी मानसिक विचारों की, मानसिक विश्वासों की।

इसलिए यह भूकंप भी किसी प्राँत या प्रदेश में नहीं उठा, मेरे मानस में ही उठा था।

"मानस में भूकंप उठा था।"

हाँ जी, मानस में भूकंप उठा था और भूकंप में कहीं कोई धरती थोड़े ही हिली थी, आकाश थोड़े ही काँपा था, काँपा था, एक तेजस्वी पुरुष का अनुभव की वह भूकंप था, जिसने मुझे हिला दिया।

वे तेजस्वी पुरुष थे स्वर्गीय पंजाब-केसरी लाल लाजपतराय। अपने महान राष्ट्र की पराधीनता के दिनों में जिन लोगों ने अपने रक्त से गौरव के दीपक जलाए और जो घोर अंधकार और भयंकर बवंडरो के झकझोरों मे जीवनभर खेल, उन दीपकों को बुझने से बचाते रहे, उन्हीं में एक थे हमारे लाला जी, उनकी कलम और वाणी दोनों मे तेजस्विता की ऐसी किरणें थीं कि वे फूटतीं, तो अपने मुग्ध हो जाते और पराए भौंचक्के!

वे उन्हीं दिनों संसार में घूमे थे। उनके व्यक्तित्व के गठन में उनके परिवार, उनके पास-पड़ोस और उनके नगर ने अपने सर्वोत्तम रत्नों की जोत उन्हें भेंट दी थी। अजी, क्या बात थी उनके व्यक्तित्व की। क्या देखने में, क्या सुनने में, वे एक अपूर्व मनुष्य थे। कौन था भला ऐसा, जिस पर वे मिलते ही छा न जाते। संसार के देशों में घूमकर वे अपने देश में लौटे, तो उन्होंने अपना सारा अनुभव एक ही वाक्य में भरकर बिखेर दिया।

उनका यह अनुभव था, "मैं अमेरीका गया, इंग्लैंड गया, फ्रांस गया और संसार के दूसरे देशों में भी घूमा, पर जहाँ भी मैं गया, भारतवर्ष की गुलामी की लज्जा का कलंक मेरे माथे पर लगा रहा।"

क्या सचमुच यह अनुभव एक मानसिक भूकंप नहीं है, जो मनुष्य को झकझोरकर कहे कि मनुष्य के पास संसार के ही नहीं, यदि स्वर्ग के भी सब उपहार और साधन हों, पर उसका देश गुलाम हो या किसी भी दूसरे रूप में हीन हो, तो वे सारे उपहार और साधन उसे गौरव नहीं दे सकते।

इस अनुभव की छाया में मैं सोचता हूँ कि मेर यह कर्तव्य है कि मुझे निजी रूप में सारे संसार का राज्य भी क्यों न मिलता हो, मैं कोई ऐसा काम न करूँ, जिससे मेरे देश की स्वतंत्रता को, दूसरे शब्दों में, उसके सम्मान को धक्का पहुँचे, उसकी किसी भी प्रकार की शक्ति में कमी आए। साथ ही उसके एक नागरिक के रूप में मेरा यह अधिकार भी है कि अपने देश के सम्मान का पूरा-पूरा भाग मुझे मिले और उसकी शक्तियों से अपने सम्मान की रक्षा का मुझे, जहाँ भी मैं हूँ, भरोसा रहे।

अजी, भला एक आदमी अपने इतने बड़े देश के लिए कर ही क्या सकता है? फिर कोई बड़ा वैज्ञानिक हो, तो वह अपने आविष्कारों से ही देश को कुछ बल दे-दे या फिर कोई बहुत बड़ा धनपति हो, तो वह अपने धन का भाभाशाह की तरह समय पर त्याग कर ही देश के काम आ सकता है, पर हरेक आदमी न तो ऐसा वैज्ञानिक ही हो सकता है, न धनिक ही। फिर जो बेचारा अपनी ही दाल-रोटी की फिक्र में लगा हुआ हो, वह अपने देश के लिए चाहते हुए भी क्या कर सकता है?

आपका प्रश्न विचारों को उत्तेजना देता है। इसमें संदेह नहीं, पर इसमें भी कोई संदेह नहीं कि इसमें जीवनशास्त्र का घोर अज्ञान भी भरा हुआ है। अरे भाई, जीवन कोई आपके मुन्ने की गुड़िया थोड़े ही है कि आप कह सकें कि बस, यह है, इतना ही है। वह तो एक विशाल समुद्र का तट है, जिस कर हरेक अपने लिए स्थान पा सकता है।

लो, एक और बात बताता हूँ। आपको। जीवन को दर्शनशास्त्रियों ने बहुमुखी बताया है, उसकी अनेक धाराएँ हैं। सुना नहीं आपने कि जीवन एक युद्ध है और युद्ध में लड़ना ही तो कोई एक काम नहीं होता। लड़ने वालों को रसद न पहुँचे, तो वे कैसे लड़ें? किसान ठीक खेती न उपजाएँ, तो रसद पहुँचाने वाले क्या करें और लो, जाने दो बड़ी-बड़ी बातें, युद्ध में जय बोलने वालों का भी महत्व है।

"जय बोलने वालों का"

हाँ जी, युद्ध में जय बोलने वालों का भी बहुत महत्त्व है। कभी मैच देखने का तो अवसर मिला ही होगा आपको? देखा नहीं आपने कि दर्शकों की तालियों से खिलाड़ियों के पैरों में बिजली लग जाती है और गिरते खिलाड़ी उभर जाते हैं। कवि-सम्मेलनों और मुशायरों की सारी सफलता दाद देने वालों पर ही निर्भर करती है। इसलिए मैं। अपने देश का कितना भी साधारण नागरिक क्यों न हूँ, अपने देश के सम्मान की रक्षा के लिए बहुत कुछ कर सकता हूँ। "अकेला चना क्या भाड़ फोड़े।" यह कहावत मैं अपने अनुभव के आधार पर ही आपसे कह रहा हूँ। कि सौ फीसदी झूठ है। इतिहास साक्षी है, बहुत बार अकेले चने ने ही भाड़ फोड़ा है और ऐसा फोड़ा है कि भाड़ खील-खील ही नहीं हो गया, उसका निशान तक ऐसा छूमंतर हुआ कि कोई यह भी न जान पाया कि वह बेचारा आखिर था कहाँ?

मै जानता हूँ, इतिहास की गहराइयों में उतरने का यह समय नहीं है, पर दो छोटी कहानियाँ तो सुन ही सकते हैं आप। और कहानियाँ भी न प्रेमचंद की, न अंतोन चेखव की, दो युवकों के जीवन की दो घटनाएँ है, पर उन दो घटनाओं में वह गाँठ इतनी साफ है, जो नागरिक और देश को एक साथ बाँधती है कि आप बड़ी-बड़ी पुस्तकें पढ़कर भी उसे इतनी साफ़ नहीं देख सकते।

हमारे देश के महान संत स्वामी रामतीर्थ एक बार जापान गए। वे रेल में यात्रा कर रहे थे कि एक दिन ऐसा हुआ कि उन्हें खाने को फल न मिले और उन दिनों फल ही उनका भोजन था। गाड़ी एक स्टेशन पर ठहरी, तो वहाँ भी उन्होंने फलों की खोज की, पर वे पा न सके।

उनके मुँह से निकला, "जापान में शायद अच्छे फल नहीं मिलते।"

एक जापानी युवक प्लेटफॉर्म पर खड़ा था। वह अपनी पत्नी को रेल में बैठाने आया था, उसने ये शब्द सुन लिए। सुनते ही वह अपनी बात बीच में ही छोड़कर भागा और कहीं दूर से एक टोकरी ताजे फल लाया। वे फल उसने स्वामी रामतीर्थ को भेंट करते हुए कहा, "लीजिए, आपको ताजे फलों की जरूरत थी।"

स्वामी जी ने समझा यह कोई फल बेचने वाला है और उनके दाम पूछे, पर उसने दाम लेने से इंकार कर दिया। बहुत आग्रह करने पर उसने कहा, "आप इनका मूल्य देना ही चाहते हैं, तो वह यह है कि आप अपने देश में जाकर किसी से यह न कहिएगा कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते।"

इस गौरव की ऊँचाई का अनुमान आप दूसरी घटना सुनकर ही पूरी तरह लगा सकेंगे। एक दूसरे देश का निवासी एक युवक जापान मे शिक्षा लेने आया।

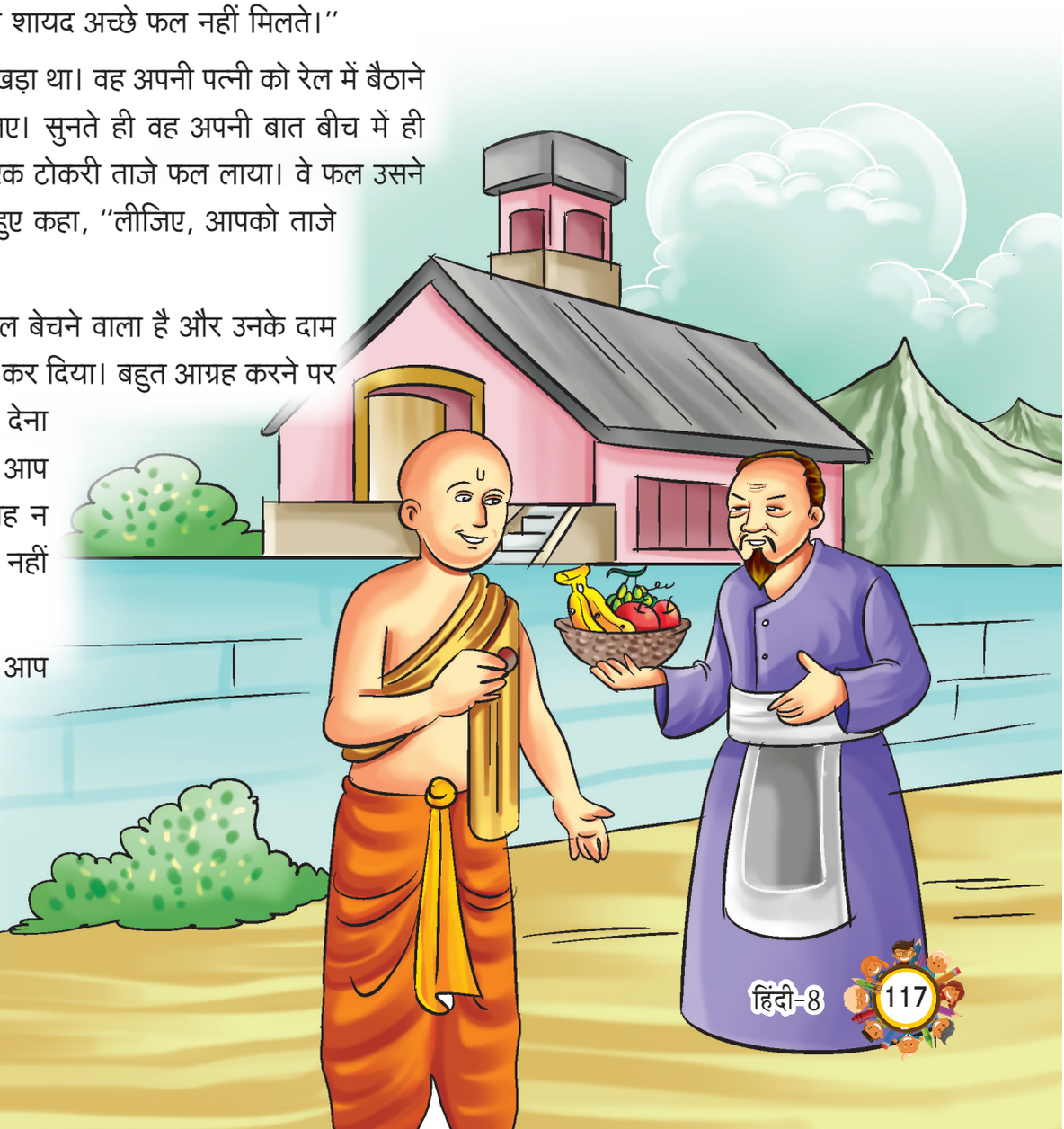

एक दिन वह सरकारी पुस्तकालय से कोई पुस्तक पढ़ने को लाया। इस पुस्तक में कुछ दुर्लभ चित्र थे। ये चित्र इस युवक में से निकाल लिए और पुस्तक वापस कर आया। किसी जापानी विद्यार्थी के कमरे से बरामद किए और उस विद्यार्थी को जापान से निकाल दिया।

मामला यहीं तक रहता, तो कोई बात न थी। अपराधी को दंड मिलना ही चाहिए, पर मामला यहीं तक नहीं रुका और पुस्तकालय के बाहर बोर्ड पर लिख दिया गया कि उस देश का (जिसका वह विद्यार्थी था) कोई निवासी इस पुस्तकालय में प्रवेश नहीं कर सकता।

मतलब साफ है, एक दम साफ कि जहाँ एक युवक ने अपने काम से अपने देश का सिर ऊँचा किया था, वहीं एक युवक ने अपने काम से अपने देश के मस्तक पर कलंक का ऐसा टीका लगाया, जो जाने कितने वर्षों तक संसार की आँखों में उसे लांछित करता रहा।

इन घटनाओं से क्या यह स्पष्ट नहीं है कि हरेक नागरिक अपने देश के साथ बँधा हुआ है और देश की हीनता और गौरव का ही फल उसे नहीं मिलता, उसकी हीनता गौरव का फल भी उसके देश को मिलता है।

मैं अपने देश का एक नागरिक हूँ और मानता हूँ कि मैं ही अपना देश हूँ। जैसे मैं अपने लाभ और सम्मान के लिए हरेक छोटी-छोटी बात पर ध्यान देता हूँ, वैसे ही मैं। अपने देश के लाभ और सम्मान के लिए भी छोटी-छोटी बात पर ध्यान दूँ, यह मेरा कर्तव्य है और जैसे मैं अपने सम्मान और साधनों के लिए भी में सहारा पाता हूँ, वैसे ही देश दो अलग चीजें तो हैं ही नहीं।

मैंने जो कुछ जीवन में अध्ययन और अनुभव से सीखा है, वह यही है कि महत्त्व किसी कार्य की विशालता में नहीं है, उस कार्य के करने की भावना में है। बड़े से बड़ा कार्य हीन है, यदि उसके पीछे अच्छी भावना नहीं है और छोटे से छोटा कार्य भी महान है, यदि उसके पीछे अच्छी भावना है।

महान कमालपाशा उन दिनों अपने देश तुर्की के राष्ट्रपति थे। राजधानी में उनकी वर्षगाँठ बहुत धूमधाम से मनाई गई। देश के लोगों ने उस दिन लाखों रुपए के उपहार उन्हें भेंट किए। वर्षगाँठ का उत्सव समाप्त की जब वे अपने भवन में ऊपर चले गए, तो एक देहाती बूढ़ा उन्हें वर्षगाँठ का उपहार भेंट करने आया। सेक्रेटरी ने कहा, "अब तो समय बीत गया है।" बूढ़े ने कहा, "मैं तीस मील से पैदल चलकर आ रहा हूँ, इसीलिए मुझे देर हो गई।"

राष्ट्रपति तक उसकी सूचना भेजी गई। कमालपाशा विश्राम के वस्त्र बदल चुके थे। वे उन्हीं कपड़ों में नीचे चले आए और उन्होंने आदर के साथ बूढ़े किसान का उपहार स्वीकार किया। यह उपहार मिट्टी की छोटी-सी हँडिया में पाव-भर शहद था, जिसे बूढ़ा स्वयं तोड़कर लाया था। कमालपाशा ने हँडिया को स्वयं खोला और उसमें दो अंगुलियाँ भरकर चाटने के बाद तीसरी अंगुली शहद से भरकर बूढ़े के मुँह में दे दी। बूढ़ा निहाल हो गया।

राष्ट्रपति ने कहा, "दादा, आज सर्वोत्तम उपहार तुमने ही मुझे भेंट किया, क्योंकि इसमें तुम्हारे हृदय का शुद्ध प्यार है।" उन्होंने आदेश दिया कि राष्ट्रपति की शाही कार में शाही-सम्मान के साथ उनके दादा को गाँव तक पहुँचाया जाए। क्या वह शहद बहुत कीमती था? क्या उसमें मोती-हीरे मिले हुए थे? न, उस शहद के पीछे उसके लाने वाले की भावना थी, जिसने उसे सौ लालों का एक लाल बना दिया।

हमारे देश में भी एक ऐसी ही घटना घटी थी। एक किसान ने रंगीन सुतलियों से एक खाट बुनी और उसे रेल में रखकर वह दिल्ली लाया। दिल्ली स्टेशन से उस खाट को अपने कंधे पर रख, वह भारत के प्रधानमंत्री पंडित नेहरू की कोठी पर पहुँचा। पंडित जी कोठी से बाहर आए, जो वह खाट उसने उन्हें दी। पंडित जी को देखकर, वह इतना भाव-मुग्ध हो गया कि कुछ कह

ही न सका। पंडित जी ने पूछा, "क्या चाहते हो तुम?"

उसने कहा, "यही कि आप इस स्वीकार करें।" प्रधानमंत्री ने उसका यह उपहार प्यार से स्वीकार किया और अपना एक फोटो दस्तखत करके उसे स्वयं भी उपहार में दिया। जिस दस्तखती फोटो के लिए देश के बड़े-बड़े लोग, विद्वान और धनी तरसते हैं, वह क्या उस मामूली खाट के बदले में दिया गया था? न, वह तो उस खाट वाले की भावना का ही सम्मान था।

"क्यों जी, हम यह कैसे जान सकते हैं कि हमारा काम देश के अनुकूल है या नहीं"?

वाह, क्या सवाल पूछा है, आपने! सवाल क्या, बातचीत में आपने तो एक कीमती मोती ही जड़ दिया यह, पर उसके उत्तर में सिर्फ "हाँ" या "न" से काम न चलेगा। मुझे थोड़ा विवरण देना पड़ेगा।

हम अपने कार्यों को देश के अनुकूल होने की कसौटी पर कसकर चलने की आदत डालें, यह बहुत उचित है, बहुत सुंदर है, पर हम इसमें तब तक सफल नहीं हो सकते, जब तक कि हम अपने देश की भीतरी दशा को ठीक-ठाक न समझ लें और उसे हमेशा अपने सामने न रखें।

हमारे देश को दो बातों की सबसे पहले और सबसे ज्यादा जरूरत है। एक शक्ति-बोध और दूसरा सौंदर्य-बोध! बस, हम यह समझ लें कि हमारा कोइ काम ऐसा न हो, जो देश में कमजोरी की भावना को बल दें या कुरूचि की भावना को।

"जरा अपनी बात को और स्पष्ट कर दीजिए।" यह आपकी राय है और मैं इससे बहुत ही खुश हूँ कि आप मुझसे यह स्पष्टता माँग रहे हैं।

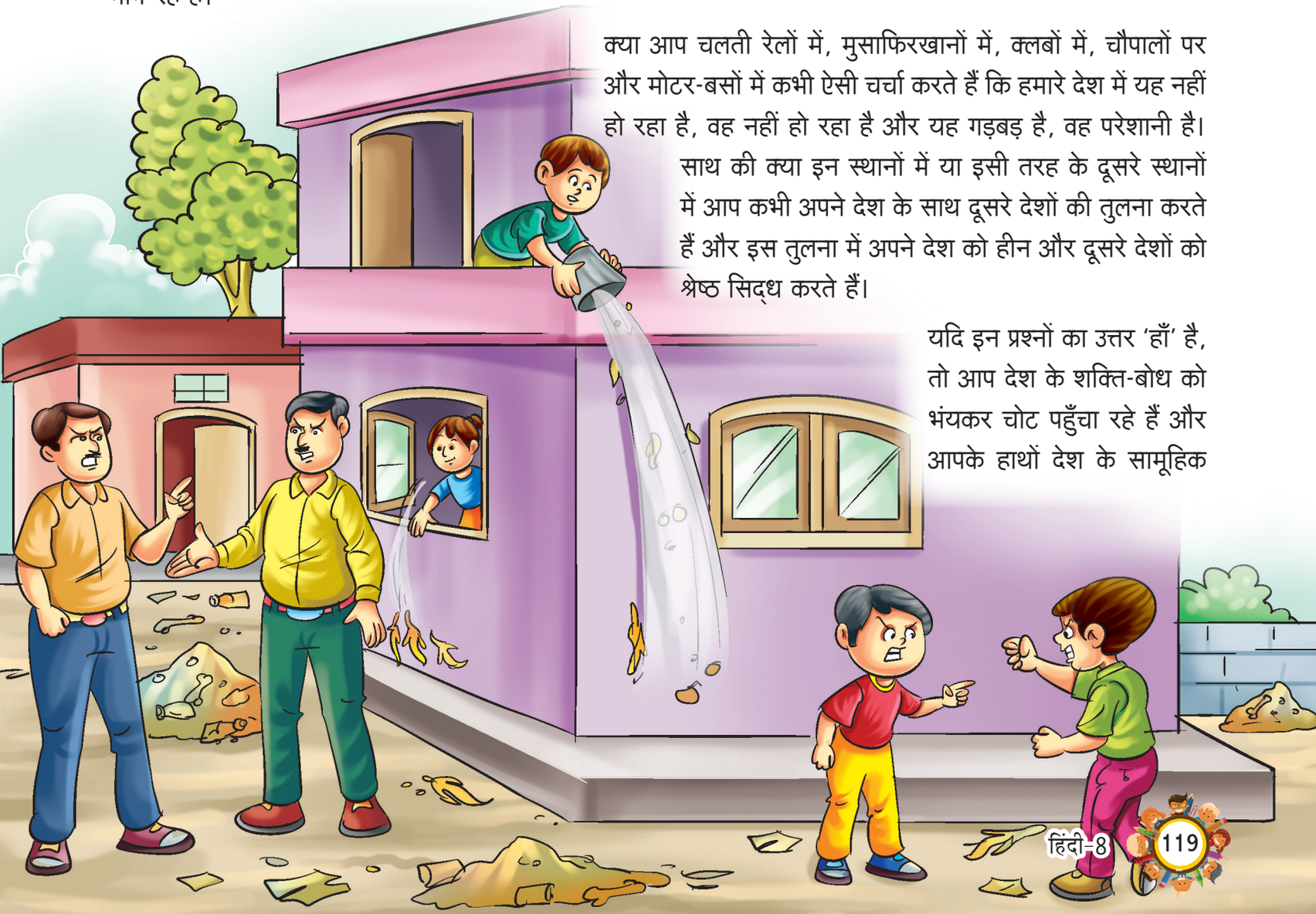

क्या आप चलती रेलों में, मुसाफिरखानों में, क्लबों में, चौपालों पर और मोटर-बसों में कभी ऐसी चर्चा करते हैं कि हमारे देश में यह नहीं हो रहा है, वह नहीं हो रहा है और यह गड़बड़ है, वह परेशानी है।

साथ की क्या इन स्थानों में या इसी तरह के दूसरे स्थानों में आप कभी अपने देश के साथ दूसरे देशों की तुलना करते हैं और इस तुलना में अपने देश को हीन और दूसरे देशों को श्रेष्ठ सिद्ध करते हैं।

यदि इन प्रश्नों का उत्तर 'हाँ' है, तो आप देश के शक्ति-बोध को भंयकर चोट पहुँचा रहे हैं और आपके हाथों देश के सामूहिक

मानसिक बल का ह्रास हो रहा है। सुनी है आपने शल्य की बात। वह महाबली अजेयता का एक हल्का-सा उल्लेख कर देता। बार-बार इस उल्लेख ने कर्ण के सघन आत्मविश्वास में संदेह की तरेड़ डाल दी, जो उसके भावी पराजय की नींच रखने में सल हो गई।

अच्छा, आप इस तरह की चर्चा कभी नहीं करते, तो मैं आपसे दूसरा प्रश्न पूछता हूँ। क्या आप कभी केला खाकर छिलका रास्ते में फेंकते हैं? अपने घर का कूड़ा बाहर फेंकते हैं? मुँह में गंदे शब्दों से गंदे भाव प्रकट करते हैं? होटलों, धर्मशालाओं में या दूसरे ऐसे ही स्थानों में, जीनों में, कोनों में पीक थूकते हैं। उत्सवों, मेलों, रेलों और खेलों में ठेलमठेल करते हैं, निमंत्रित होने पर समय से लेट पहुँचने हैं या वचन देकर भी घर आनेवालों का समय पर नहीं मिलते और इसी तरह किसी भी रूप में क्या सुरूचि और सौंदर्य का आपके किसी काम से ठेस लगती है?

यदि आपका उत्तर 'हाँ' है, तो उनके द्वारा देश के सौंदर्य-बोध को भंयकर आघात लग रहा है और आपके द्वारा देश की संस्कृति को गहरी चोट पहुँच रही है।

''क्या कोई ऐसी कसौटी भी बनाई जा सकती है, जिससे देश के नागरिकों को आधार बनाकर देश की उच्चता और हीनता को हम तोल सकें।''

लीजिए चलते-चलते आपके इस प्रश्न का भी उत्तर दे ही दूँ। इस उच्चता और हीनता की कसौटी है, चुनाव।

जिस देश के नागरिक यह समझते हैं कि चुनाव में किसे अपना मत देना चाहिए और किसे नहीं, वह देश उच्च है और जहाँ के नागरिक गलत लोगों के उत्तेजक नारों या व्यक्तियों के गलत प्रभाव में आकर मत देते हैं, वह हीन है।

इसीलिए मैं कह रहा हूँ कि मेरा, यानी हरेक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह जब भी कोई चुनाव हो, ठीक मुनष्य को अपना मत दे और मेरा अधिकार है कि मेरा मत लिए बिना कोई भी आदमी, वह संसार का सर्वश्रेष्ठ महापुरुष ही क्यों न हो, किसी अधिकार की कुर्सी पर न बैठ सके।

—कन्हैयालाल मित्र 'प्रभाकर'

लेखक परिचय

हिंदी साहित्य के समर्थ निबंधकार तथा संस्मरण लेखक कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का जन्म 29 मई, 1906 को सहारनपुर जिले के देवबंद नामक स्थान पर हुआ था। उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ इस प्रकार हैं– 'जिंदगी मुस्काई', 'आकाश के तारे', 'धरती के फूल', 'बाजे पायलिया के घुँघरू', 'क्षण बोले कण मुस्काए', 'कारवाँ आगे बढ़े', 'जिंदगी लहलहाई', 'माटी हो गई सोना', 'दीप जले शंख बजे' आदि। उन्होंने 'नया जीवन', 'ज्ञानोदय' और 'विकास' पत्रिका का संपादन भी किया था। उनकी मृत्यु 1995 ई. में हुई थी।

शब्द-अर्थ

अपूर्णता	—	कमी	**अपील**	—	याचिका
बवंडर	—	आँधी-तूफान, उपद्रव	**तेजस्विता**	—	तेजवत्ता, तेतस्वी होने का गुण
ठसक	—	अभिमान	**कसक**	—	पीड़ा, टीस
झकझोरना	—	झटका देना, झँझोड़ना	**भामाशाह**	—	महाराणा प्रताप के सहयोगी
दाद होने वाले	—	प्रशंसा करने वाले	**फीसदी**	—	प्रतिशत

खील-खील होना – टुकड़े-टुकड़े होना
लांछित – अपमानित
सेक्रेटरी – सचिव
उच्चता – महानता

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) भूकंप कहाँ आया था?

(ख) दर्शनशास्त्रियों ने जीवन की क्या विशेषता बताई है?

(ग) युवक शिक्षा प्राप्त करने के लिए किस देश में गया था?

(घ) पाठ के अनुसार तुर्की के राष्ट्रपति कौन थे?

(ङ) प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के लिए किसान क्या उपहार लाया था?

लिखित

1. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) स्वामी रामतीर्थ कहाँ गए थे?

◯ जावा ◯ चीन
◯ जापान ◯ अफ्रीका

(ख) बूढ़ा देहाती तुर्की के राष्ट्रपति के लिए क्या उपहार लाया था?

◯ एक किलो शहद ◯ पाव-भर शहद
◯ बहुमूल्य उपहार ◯ मिष्ठान्न

(ग) आप देश के शक्ति-बोध को क्षति कब पहुँचाते हैं?

◯ केले का छिलका रास्ते में फेंककर ◯ जीनों और कोनों में पीक थूककर
◯ दूसरे देशों को श्रेष्ठ और अपने देश को हील सिद्ध करते हुए
◯ मेलों, रेलों में ठेलमठेल करते हुए

- **नीचे लिखे गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

उनका अनुभव यह था– ''मैं अमेरिका गया, इंग्लैंड गया, फ्रांस गया और संसार के दूसरे देशों में भी घूमा, पर जहाँ भी गया, भारतवर्ष की गुलामी की लज्जा का कलंक मेरे माथे पर लगा रहा।'' क्या सचमुच यह अनुभव एक मानसिक भूकंप नहीं है, जो मनुष्य को झकझोर कर कहे कि किसी मनुष्य के पास संसार के ही नहीं, यदि स्वर्ग के भी सब उपहार और साधन उपलब्ध हों, पर उसका देश गुलाम हो या किसी दूसरे रूप में हीन हो, तो वे सारे उपहार और साधन भी उसे गौरव नहीं दे सकते।

इस अनुभव की छाया में मैं सोचता हूँ कि मेरा कर्तव्य है कि मुझे निजी रूप से सारे संसार का राज्य भी क्यों न मिलता हो, मैं कोई ऐसा काम न करूँ, जिससे मेरे देश की स्वतंत्रता को, दूसरे शब्दों में, उसके सम्मान को धक्का पहुँचे, किसी भी प्रकार

से उसकी शक्ति में कमी आए। साथ ही, उसके एक नागरिक के रूप में मेरा यह अधिकार भी है कि अपने देश के सम्मान का पूरा-पूरा भाग मुझे मिले और उसकी शक्तियों से अपने सम्मान की रक्षा का मुझे, जहाँ भी मैं रहूँ, भरोसा रहे।

(क) लेखक ने किसके अनुभव की चर्चा की है?

(ख) लेखक ने अपने कर्तव्य के विषय में क्या कहा है?

(ग) लेखक क्या अधिकारी चाहते हैं?

(घ) ''गुलामी की लज्जा का कलंक मेरे माथे पर लगा रहा।''

(i) यह वाक्य किसने कहा?

(ii) वाक्य में निहित पीड़ा को स्पष्ट करें।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) लेखक क्या सोचा करते थे?

(ख) एक दिन लेखक को अपनी स्थिति एकदम हीन क्यों प्रतीत हुई?

(ग) 'मानस में भूकंप उठा' से लेखक का क्या अभिप्राय है?

(घ) दर्शकों की तालियों का खिलाड़ियों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

(ङ) कवि-सम्मेलनों और मुशायरों के सफलता किन पर निर्भर करती है?

(च) लेखक ने लाला लाजपत राय के विषय में क्या बताया है?

(छ) 'अकेला चना क्या भाड़ फोड़े' कहावत को लेखक कैसा मानते हैं और क्यों?

(ज) स्वामी रामतीर्थ को किस चीज की आवश्यकता थी? जापानी युवक ने अपने देश के गौरव की रक्षा कैसे की?

(झ) तुर्की के राष्ट्रपति कमालपाशा ने बूढ़े देहाती का सम्मान किस प्रकार किया?

(ञ) कौन-सी बातें देश के शक्ति-बोध को हानि पहुँचाती हैं?

(ट) देश के सौंदर्य-बोध को सुरक्षित करने के लिए क्या करना चाहिए?

(ठ) 'चुनाव' वैचारिक उच्चता अथवा हीनता की कसौटी किस प्रकार है?

भाषा-ज्ञान

1. लोकोक्तियाँ- लोक में प्रचलित कहावतों को लोकोक्ति कहा जाता है। यह ऐसा कथन है, जिसे वाक्य समाप्त होने के बाद, वाक्य की सार्थकता को प्रमाणित करने के लिए प्रयोग किया जाता है। इससे प्रसंग की सरसता और अर्थ-ग्रहण की क्षमता बढ़ जाती है।

जैसे- बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।

अर्थ- मूर्ख व्यक्ति गुणों का महत्तव नहीं समझता।

वाक्य- अल्प शिक्षित रमेश अपनी पढ़ी-लिखी उच्च शिक्षित पत्नी का सम्मान नहीं करता है। सच कहा गया है- बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।

नीचे लिखी लोकोक्तियों को पूरा कीजिए-

(क) अब पछताए होत _____

(ख) रस्सी जल गई _____

(ग) हाथ कंगन को _____

(घ) आँख का अंधा _____

(ङ) अँधेर नगरी _____

(च) खरबूजे को देखकर _____

- **उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

(क) 'ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया' लोकोक्ति का अर्थ है–

◯ कहीं गर्मी, कहीं सर्दी ◯ विचित्र विरोध

◯ कहीं सुख, कहीं दुख ◯ स्वाभाविक विरोध

(ख) 'आम के आम गुठलियों के दाम' लोकोक्ति का अर्थ है–

◯ आम और गुठलियों के दाम ◯ आम की कीमत

◯ दोहरा लाभ ◯ मनचाही बात होना

(ग) 'आवश्यकता से बहुत कम मिलना' अर्थ के लिए उचित लोकोक्ति है–

◯ ऊँट के मुँह में जीरा ◯ अंधों में काना राजा

◯ एक अनार सौ बीमार ◯ यह मुँह और मसूर की दाल

2. क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द 'क्रिया-विशेषण' कहलाते हैं। क्रिया की विशेषता चार प्रकार से ज्ञात होती है, अत: क्रिया-विशेषण के चार भेद होते हैं।–

(क) कालवाचक क्रिया-विशेषण — क्रिया के होने का समय

(ख) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण — क्रिया के होने का स्थान

(ग) परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण — क्रिया के होने की मात्रा

(घ) रीतिवाचक क्रिया-विशेषण — क्रिया के होने की रीति या तरीका

- **नीचे लिखे वाक्यों में क्रिया-विशेषण को रेखांकित करते हुए उनके भेदों के नाम लिखिए–**

(क) सीता ऊपर बैठी है। _____

(ख) मैं प्रतिदिन मंदिर जाता हूँ। _____

(ग) वह अचानक गिर पड़ा। _____

(घ) राहुल कम बोलता है। _____

3. निम्नलिखित शब्दों में निहित मूल शब्द और प्रत्यय अलग कीजिए–

	मूल शब्द		प्रत्यय
(क) तेजस्विता	_____	+	_____
(ख) मानसिक	_____	+	_____
(ग) वैज्ञानिक	_____	+	_____

(घ) धनपति _____ + _____

(ङ) धर्मशाला _____ + _____

(च) मुसाफिरखाना _____ + _____

(छ) गड़बड़ी _____ + _____

(ज) सामूहिक _____ + _____

क्रियात्मक गतिविधि

- अच्छे नागरिक की विशेषताओं के संदर्भ में सामूहिक चर्चा का आयोजन कीजिए।
- 'अकेला चना क्या भाड़ फोड़े' - लोकोक्ति पर 'वाद-विवाद प्रतियोगिता' आयोजित कीजिए।
- विद्यालय के सौंदर्यबोध की रक्षा करने के लिए कुछ सिद्धांत बनाइए। इन्हें चार्ट पेपर पर लिखकर दफ्ती पर चिपकाकर विद्यालय की वाटिका, खेल के मैदान के प्रवेश-द्वार, गैलरी (गलियारों), कक्षाओं, सभागार और पुस्तकालय में उचित स्थानों पर लगाइए।
- कंप्यूटर अथवा पुस्तकालय की सहायता से कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' के जीवन और कृतित्व के विषय मे जानकारी प्राप्त कर उसे परियोजना पुस्तिका में नत्थी कीजिए।

ग्राम श्री

(केवल पठन के लिए)

फैली खेतों में दूर तलक,
मखमल-सी कोमल हरियाली।
लिपटी जिससे रवि की किरणें,
चाँदी की-सी उजली जाली।।

तिनकों के हरे-हरे तन पर,
हिल हरित रुधिर है रहा झलक।
श्यामल भूतल पर झुका हुआ
नभ का चिर निर्मल नील फलक।।

रोमांचित-सी लगती वसुधा,
आई जौ-गेहूँ में बाली।
अरहर-सनई की सोने की,
किंकिणियाँ हैं शोभावाली।।

उड़ती भीनी तैलाक्त गंध,
फूली सरसों पीली-पीली।
जो हरित धरा से झाँक रही,
नीलम की कलि तीसी नीली।।

अब रजत स्वर्ण-मंजरियों से,
लद गई आम्र तरू की डाली।
झर रहे ढाक पीपल के दल,
हो उठी कोकिला मतवाली।।

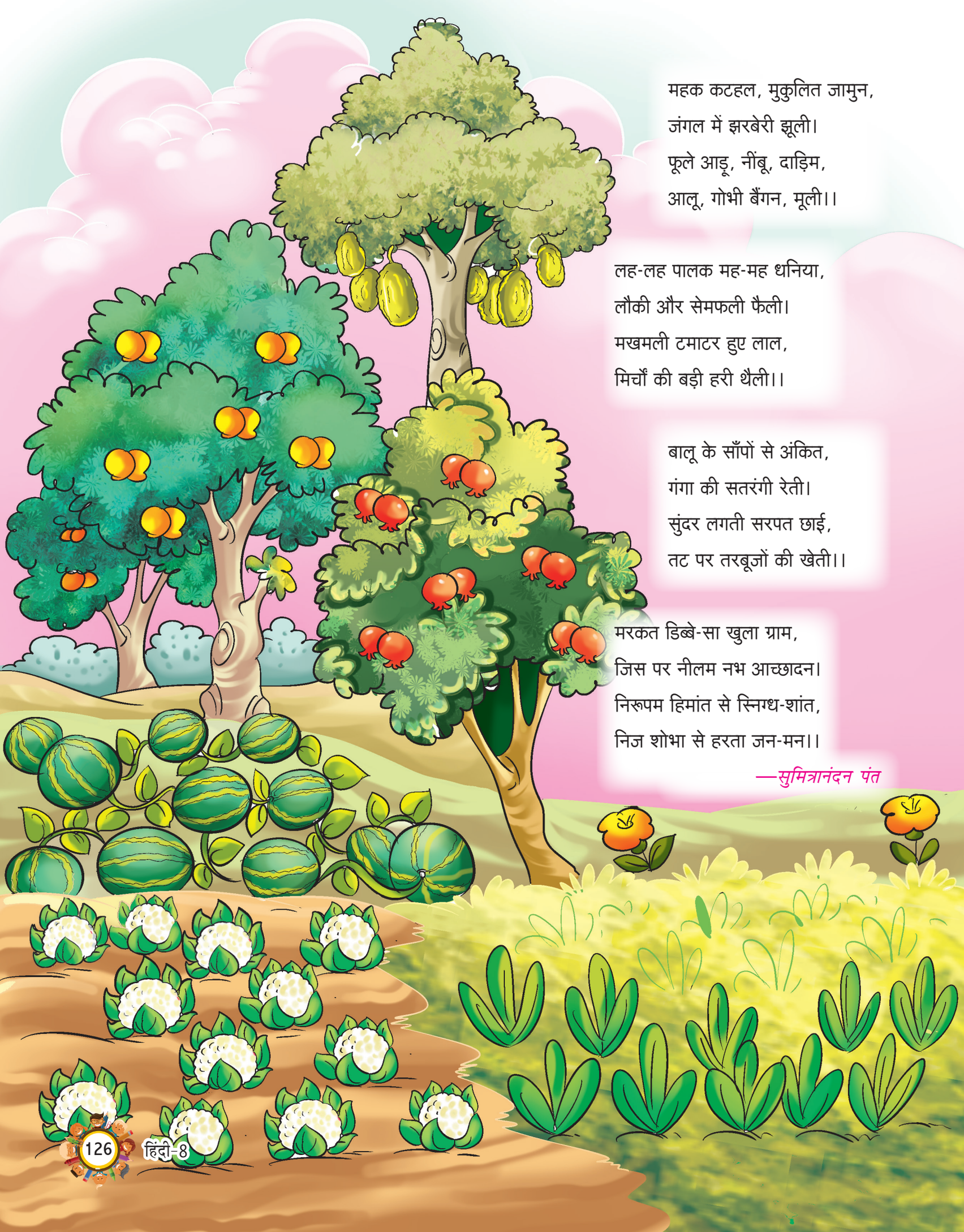

महक कटहल, मुकुलित जामुन,
जंगल में झरबेरी झूली।
फूले आड़ू, नींबू, दाड़िम,
आलू, गोभी बैंगन, मूली।।

लह-लह पालक मह-मह धनिया,
लौकी और सेमफली फैली।
मखमली टमाटर हुए लाल,
मिर्चों की बड़ी हरी थैली।।

बालू के साँपों से अंकित,
गंगा की सतरंगी रेती।
सुंदर लगती सरपत छाई,
तट पर तरबूजों की खेती।।

मरकत डिब्बे-सा खुला ग्राम,
जिस पर नीलम नभ आच्छादन।
निरूपम हिमांत से स्निग्ध-शांत,
निज शोभा से हरता जन-मन।।

—सुमित्रानंदन पंत

धर्म की आड़ 20

इस समय, देश में धर्म की धूम है। उत्पात किए जाते हैं, तो धर्म और ईमान के नाम पर और जिद की जाती है, तो धर्म और ईमान के नाम पर। रमुआ पासी और बुद्धू मियाँ धर्म और ईमान को जानें या न जानें, परंतु उनके नाम पर उबल पड़ते हैं और जान लेने और जान देने के लिए तैयार हो जाते हैं।

देश के सभी शहरों का यही हाल है। उबल पड़ने वाले साधारण आदमी का इसमें केवल इतना ही दोष है कि वह कुछ भी नहीं समझता-बूझता और दूसरे लोग उसे जिधर जोत देते हैं, उधर जुत जाता है। यथार्थ दोष है, कुछ चलते-पुरजे, पढ़े-लिखे लोगों का, जो मूर्ख लोगों की शक्तियों और उत्साह का दुरुपयोग इसलिए कर रहे हैं कि इस प्रकार, जाहिलों के बल के आधार पर उनका नेतृत्व और बड़प्पन कायम रहे। इसके लिए धर्म और ईमान की बुराइयों से काम लेना उन्हें सबसे सुगम मालूम पड़ता है। सुगम है भी।

साधारण से साधारण आदमी तक के दिल में यह बात अच्छी तरह बैठी हुई है कि धर्म और ईमान की रक्षा के लिए प्राण तक दे देना वाजिब है। बेचारा साधारण आदमी धर्म के तत्वों को क्या जानें? लकीर पीटते रहना ही वह अपना धर्म समझता है। उसकी इस अवस्था से चालाक लोग इस समय बहुत बेजा फायदा उठा रहे हैं।

पाश्चात्य देशों में, धनी लोगों की, गरीब मजदूरों की झोंपड़ी का मजाक उड़ाती हुई अट्टालिकाएँ आकाश से बातें करती हैं! गरीबों की कमाई ही से वे मोटे होते हैं और उसी के बल से, वे सदा इस बात का प्रयत्न करते हैं कि गरीब सदा चूसे जाते रहें। यह भयंकर अवस्था है। इसी के कारण, साम्यवाद, बोल्शेविज्म आदि का जन्म हुआ।

हमारे देश में, इस समय, धनपतियों का इतना जोर नहीं है। यहाँ धर्म के नाम पर, कुछ इने-गिने आदमी अपने हीन स्वार्थों की सिद्धि के लिए, करोड़ों आदमियों की शक्ति का दुरुपयोग किया करते हैं। गरीबों का धनाढ्यों द्वारा चूसा जाना इतना बुरा नहीं है, जितना बुरा

यह है कि वहाँ है धन की मार, यहाँ है बुद्धि पर मार। वहाँ धन दिखाकर करोड़ों को वश में किया जाता है और फिर मन-माना धन पैदा करने के लिए जोत दिया जाता है। यहाँ है बुद्धि पर परदा डालकर पहले ईश्वर और आत्मा का स्थान अपने लिए लेना और फिर, धर्म, ईमान, ईश्वर और आत्मा के नाम पर अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए लोगों को लड़ाना-भिड़ाना।

मूर्ख बेचारे धर्म की दुहाइयाँ देते और दीन-दीन चिल्लाते हैं, अपने प्राणों की बाजियाँ खेलते और थोड़े से अनियंत्रित और धूर्त आदमियों का आसन ऊँचा करते और उनका बल बढ़ाते हैं। धर्म और ईमान के नाम पर किए जाने वाले इस भीषण व्यापक को रोकने के लिए, साहस और दृढ़ता के साथ, प्रयत्न करना चाहिए। जब तक ऐसा नहीं होगा, तब तक भारतवर्ष में नित्य-प्रति बढ़ते जाने वाले झगड़े कम न होंगे।

धर्म की उपासना के मार्ग में कोई भी रुकावट न हो। जिसका मन जिस प्रकार चाहे, उसी प्रकार धर्म की भावना को अपने मन में जगावे। धर्म और ईमान, मन का सौदा हो, ईश्वर और आत्मा के बीच का संबंध हो, आत्मा को शुद्ध करने और ऊँचे उठाने का साधन हो। वह किसी दशा में भी, किसी दूसरे व्यक्ति की स्वाधीनता को छीनने या कुचलने का साधन न बने। आपका मन चाहे, उस तरह का धर्म आप मानें और दूसरों का मन चाहे, उस प्रकार का धर्म वह मानें। दो भिन्न धर्मों के मानने वालों के टकरा जाने के लिए कोई भी स्थान न हो। यदि किसी धर्म के मानने वाले कहीं ज़बरदस्ती टाँग अड़ाते हों, तो उनका इस प्रकार का कार्य देश की स्वाधीनता के विरुद्ध समझा जाए।

देश की स्वाधीनता के लिए जो प्रयत्न किया जा रहा था, उसका वह दिन निःसंदेह, अत्यंत बुरा था, जिस दिन स्वाधीनता के क्षेत्र में खिलाफत, मुल्ला-मौलवियों और धर्माचार्यों को स्थान दिया जाना आवश्यक समझा गया। एक प्रकार से उस दिन हमने स्वाधीनता के क्षेत्र में, एक कदम पीछे हटकर रखा था। अपने उसी पाप का फल आज़ हमें भोगना पड़ रहा है। देश को स्वाधीनता के संग्राम ही ने मौलाना अब्दुल बारी और शंकराचार्य को देश के सामने दूसरे रूप में पेश किया, उन्हें अधिक शक्तिशाली बना दिया और हमारे इस काम का फल यह हुआ कि इस समय, हमारे हाथों ही से बढ़ाई इनकी और इनके जैसे लोगों की शक्तियाँ हमारी जड़ उखाड़ने और देश में मजहबी, पागलपन, प्रपंच और उत्पात का राज्य स्थापित कर रही हैं।

महात्मा गांधी धर्म को सर्वत्र स्थान देते हैं। वे एक पग भी धर्म के बिना चलने के लिए तैयार नहीं। परंतु उनकी बात ले उड़ने के पहले, प्रत्येक आदमी का कर्त्तव्य यह है कि वह भली-भाँति समझ ले कि महात्मा जी के 'धर्म' का स्वरूप क्या है? धर्म से महात्मा जी का

मतलब धर्म ऊँचे और उदार तत्वों का ही हुआ करता है। उनके मानने में किसे एतराज हो सकता है।

अजाँ देने, शंख बजाने, नाक दाबने और नमाज पढ़ने का नाम धर्म नहीं है। शुद्धाचरण और सदाचार ही धर्म के स्पष्ट चिह्न हैं। दो घंटे तक बैठकर पूजा कीजिए और पाँच वक्त नमाज भी अदा कीजिए, परंतु ईश्वर को इस प्रकार रिश्वत दे चुकने के पश्चात् यदि आप अपने को दिन-भर बेईमानी करने और दूसरों को तकलीफ पहुँचाने के लिए आज़ाद समझते हैं, तो इस धर्म को, अब आगे आने वाला समय कदापि नहीं टिकने देगा। अब तो, आपका पूजा-पाठ न देखा जाएगा, आपकी भलमनसाहत की कसौटी केवल आपका आचरण होगी। सबके कल्याण की दृष्टि से, आपको अपने आचरण को सुधारना पड़ेगा और यदि आप अपने आचरण को नहीं सुधारेंगे, तो नमाज और रोजे, पूजा और गायत्री आपको देश के अन्य लोगों की आजादी को रौंदने और देश-भर में उत्पातों का कीचड़ उछालने के लिए आजाद न छोड़ सकेगी।

ऐसे धार्मिक और दीनदार आदमियों से तो, वे ला-मजहब और नास्तिक आदमी कहीं अधिक अच्छे और ऊँचे हैं, जिनका आचरण अच्छा है, जो दूसरों के सुख-दुख का ख्याल रखते हैं और जो मूर्खों को किसी स्वार्थ सिद्धि के लिए उकसाना बहुत बुरा समझते हैं। ईश्वर इन नास्तिकों और ला-मजहब लोगों को अधिक प्यार करेगा और वह अपने पवित्र नाम पर अपवित्र काम करने वालों से यही कहना पसंद करेगा, मुझे मानो या न मानो, तुम्हारे मानने ही से मेरा ईश्वरत्व कायम नहीं रहेगा, दया करके, मनुष्यत्व को मानो, पशु बनना छोड़ो और आदमी बनो!

—संकलित

शब्द-अर्थ

उत्पात	—	उपद्रव, खुराफात	**ईमान**	—	नीयत, सच्चाई
जोहिलो	—	मूर्ख, गँवार, अनपढ़	**वाजिब**	—	उचित, उपयुक्त, यथार्थ
वेजा	—	गलत, अनुचित	**अट्टालिकाएँ**	—	ऊँचे-ऊँचे मकान, प्रासाद
धनाढ्य	—	धनवान, दौलतमंद	**स्वार्थ-सिद्धि**	—	अपना स्वार्थ पूरा करना
अनियंत्रित	—	जो नियंत्रण में न हो, मनमाना	**धूर्त**	—	छली, पाखंडी
मजहबी	—	धर्म विशेष से संबंध रखने वाला	**प्रपंच**	—	छल, धोखा
उदार	—	महान, दयालु, बड़े दिल वाला	**भलमनसाहत**	—	सज्जनता, शराफत
कसौटी	—	परख, जाँच	**स्वाधीनता**	—	आजादी, स्वतंत्रता

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) रमुआ पासी और बुद्धू मियाँ किसके नाम पर उबल पड़ते हैं?

(ख) 'खिलाफत' शब्द से आप क्या समझते हैं?

(ग) चलते-पुरजे लोग धर्म के नाम पर क्या करते हैं?

(घ) धर्म के स्पष्ट चिह्न क्या हैं?

लिखित

1. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) देश में किसकी धूम है?

◯ धर्म की ◯ उत्पात की

◯ ईमान की ◯ अट्टालिकाओं की

(ख) लोग अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए किसकी आड़ ले रहे हैं?

◯ धर्म की ◯ ईमान की

◯ इन दोनों की ◯ बदमाशों की

(ग) पाश्चात्य देशों में धनी लोग किसकी मजाक उड़ाते थे?

◯ गरीबों का ◯ गरीबों की झोंपड़ियों का

◯ उनकी स्थिति का ◯ इन सभी का

(घ) 'कसौटी' शब्द का निम्न में किससे संबंध है?

◯ परख से ◯ जाँच से

◯ इन दोनों से ◯ परीक्षा से

(ङ) 'वाजिब' शब्द का क्या अर्थ है?

◯ उचित ◯ उपयुक्त

◯ यथार्थ ◯ ये सभी

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) महात्मा गांधी _____ को सर्वत्र स्थान देते हैं।

(ख) उसी _____ का फल आज हमें _____ पड़ रहा है।

(ग) मूर्ख बेचारे धर्म की _____ देते और _____ चिल्लाते हैं।

(घ) _____ में नित्य-प्रति बढ़ते जाने वाले कम न होंगे।

(ङ) धर्म और _____ की बुराइयों से काम लेना उन्हें सबसे _____ मालूम पड़ता है।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) आज धर्म के नाम पर क्या-क्या हो रहा है?

(ख) धर्म के व्यापार को रोकने के लिए क्या प्रयत्न होने चाहिए?

(ग) लेखक के अनुसार स्वाधीनता आंदोलन का कौन-सा दिन सबसे बुरा था?

(घ) साधारण से साधारण आदमी तक के दिल में क्या बात अच्छी तरह घर कर चुकी है?

(ङ) चालाक लोग साधारण आदमी की किस अवस्था का लाभ उठाते हैं?

(च) आने वाला समय किस प्रकार के धर्म को नहीं टिकने देगा?

(छ) कौन-सा कार्य देश की स्वाधीनता के विरुद्ध समझा जाएगा?

(ज) पाश्चात्य देशों में धनी और निर्धन लोगों में क्या अंतर है?

(झ) कौन-से लोग धार्मिक लोगों से अच्छे हैं?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए–

(क) सुगम x _____

(ख) नियंत्रित x _____

(ग) दुरुपयोग x _____

(घ) ईमान x _____

(ङ) धर्म x _____

(च) स्वाधीनता x _____

(छ) स्वार्थ x _____

(ज) साधारण x _____

(झ) नास्तिक x _____

2. दिए गए शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए–

(क) उत्पात = _____, _____

(ख) उदार = _____, _____

(ग) धनाढ्य = _____, _____

(घ) धूर्त = _____, _____

(ङ) वेजा = _____, _____

(च) कसौटी = _____, _____

(छ) भलमनसाहत = _____, _____

(ज) वाजिब = _____, _____

3. दिए गए उर्दू भाषाओं शब्दों के उचित हिंदी पर्याय लिखिए–

(क) ईमान — _____

(ख) मजहब — _____

(ग) जाहिल — _____

(घ) ला-मजहब — _____

(ङ) नमाज — _____

(च) वाजिब — _____

क्रियात्मक गतिविधि

- आप अपने धर्म से संबंधित कोई छह वाक्य लिखिए।

_____

_____

_____

_____

_____

_____

- निम्नलिखित धर्मों के पूजा-स्थलों के नाम लिखिए–

हिंदू धर्म — _____

मुस्लिम धर्म — _____

सिक्ख धर्म — _____

ईसाई धर्म — _____

पारसी धर्म — _____

बौद्ध धर्म — _____

आदर्श प्रश्न-पत्र-1 (Model Test Paper)-1

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) निराशा में आशा का संचार किस रूप में होता है?

(ख) रसोइया रखने का प्रस्ताव किसने रखा?

(ग) उम्मीदवार दिखावा क्यों कर रहें थे?

(घ) बूढ़ें अक्कल को देखकर लेखक क्यों चौंक पड़े?

(ङ) खजाने से भरा महल कैसे प्रकट हुआ?

(च) जिमी ने बॉब को गिरफ्तार करने के लिए किसे भेजा?

(छ) आज का जीवन साधन-संपन्न है, फिर भी लोग तनाव ग्रस्त क्यों हैं?

(ज) बिंदा को किस अपराध का दंड मिला?

2. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) दहेज लेने के पक्ष में कौन था?

◯ शिवराम ◯ लेखक ◯ रमा ◯ वेंकटेश्वर राव

(ख) फकीर खुर्जियों में क्या भर रहा था?

◯ केवल स्वर्ण निर्मित वस्तुओं को ◯ केवल रत्नों को

◯ केवल अशर्फियों को ◯ सोने की संदूकधारियों को

(ग) जिमी ने अपने मित्र का चेहरा कब देखा?

◯ चौराहे पर ◯ जब उसके मित्र ने सिगार सुलगाया

◯ जब उसके मित्र ने चेहरा देखा ◯ जब उनके दुकान की रोशनी उस पर पड़ी

(घ) सरकारी अस्पताल के डॉक्टर कैसे तशरीफ लाए?

◯ मोटर गाड़ी में ◯ पैदल ◯ इक्के पर ◯ पालकी पर

(ङ) निशा शब्द का कविता में क्या अर्थ माना गया है?

◯ एक लड़की का ◯ रात्रि का ◯ दक्षिण दिशा का ◯ इनमें से कोई नहीं

(च) कविता में भीत शब्द का क्या अर्थ है?

◯ भय ◯ दीवार ◯ डरा हुआ ◯ स्थान

3. आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) रात के उत्पात भय से
भीत जन-जन, भीत कण-कण
किंतु प्राची से उषा की
मोहिनी मुस्कान फिर-फिर।

(ख) हम जैसा बोएँगे, वैसा ही पाएँगे।

4. समास विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए–

(क) भुखमरा _____ _____

(ख) खाना-पीना _____ _____

(ग) आराम कुर्सी _____ _____

(घ) प्रतिदिन _____ _____

(ङ) भरपेट _____ _____

5. संज्ञा-भेद लिखिए–

(क) देवगढ़ _____ (ख) महाशय _____

(ग) रियासत _____ (घ) वीरता _____

(ङ) सुजानसिंह _____ (च) गाड़ी _____

6. संधि विच्छेद कीजिए–

(क) स्वागत _____+_____ (ख) मात्राज्ञा _____+_____

(ग) सप्तर्षि _____+_____ (घ) अधिकांश _____+_____

(ङ) जलाशय _____+_____ (च) अन्वेषण _____+_____

क्रियात्मक गतिविधि

- रामधारी सिंह दिनकर की जीवनी लिखिए।

आदर्श प्रश्न-पत्र-2 (Model Test Paper)-2

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) श्री राम के मुख-मंडल के सौंदर्य का वर्णन कवि ने किस प्रकार किया है?

(ख) 'मानस में भूकंप उठा' से लेखक का क्या अभिप्राय है?

(ग) पाठ में खुश रहने के कितने सोपान बताए गए हैं?

(घ) 'भारत का इतिहास' पुस्तक पढ़कर लेखक ने क्या सोचा?

(ङ) आगरा में स्थित ताजमहल का निर्माण किस बादशाह ने करवाया था?

(च) साहूकार नन्हे मेई की बात पर क्यों चिल्ला रहा था?

(छ) पंचम मिसिर क उस दिन के कार्यक्रम का अंत कैसे हुआ?

(ज) वृक्ष कैसे दानी हैं?

2. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) स्वामी रामतीर्थ कहाँ गए थे?

◯ जावा ◯ चीन ◯ जापान ◯ अफ्रीका

(ख) लेखक कैसे घराने का विद्यार्थी था?

◯ नीचे ◯ ऊँचे ◯ साधारण

(ग) स्वर्ण मंदिर कहाँ पर है?

◯ कोणार्क में ◯ फतेहपुर में ◯ अमृतसर में

(घ) नन्हें मेई ने पैसे कहाँ छुणाए?

◯ गुल्लक में ◯ अलमारी में ◯ फर्श के छेद में

(ङ) देवीदीन दूध निकालने के लिए किसे ले आया?

◯ गाय को ◯ भैंस को ◯ बकरी को

(च) वृक्ष किसकी शोभा हैं?

◯ धरती की ◯ घर-आँगन की ◯ जंगल की ◯ इन सभी की

3. आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) संबंधों का संक्रमण के दौर से गुजरना।

(ख) गुलामी की लज्जा का कलंक मेरे माथे पर लगा रहा।

4. वर्ण-विच्छेद कीजिए–

(क) प्रतिबिंब — _____

(ख) श्रेष्ठ — _____

(ग) वृहदेश्वर — _____

(घ) समृद्धि — _____

5. अवधि शब्दों के लिए हिंदी शब्द लिखिए–

(क) कबहूँ _____ (ख) बस्यों _____

(ग) मरंदु _____ (घ) अस _____

(ङ) सोई _____ (च) माँगत _____

6. उर्दू भाषाओं का पर्याय लिखिए–

(क) ईमान _____ (ख) मजहब _____

(ग) गालिब _____ (घ) जाहिल _____

(ङ) वाजिब _____ (च) नमाज _____

7. समानार्थी शब्द लिखिए–

(क) चाँद _____ _____

(ख) छोर _____ _____

(ग) सतत _____ _____

(घ) ऊष्मा _____ _____

(ङ) आशंका _____ _____

क्रियात्मक गतिविधि

- श्रीराम की बाल लीलाओं का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।